विद्रोही आत्माएं

खलील जिब्रान

0-,3M83x
152M0

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

0-,3M83x2090

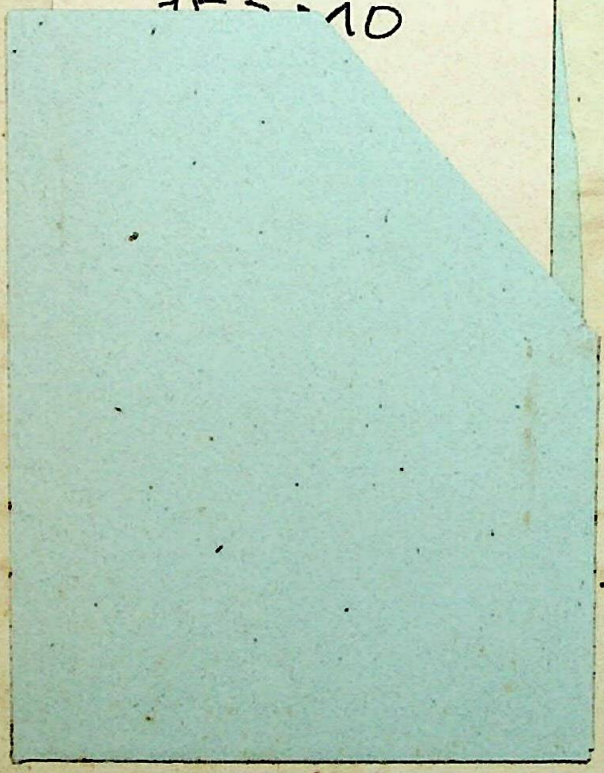

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

0-,3M83x
152 MO
2020

कृपया यह ग्रन्थ नीचे निर्देशित तिथि के पूर्व अथवा उक्त तिथि तक वापस कर दें। विलम्ब से लौटाने पर प्रतिदिन दस पैसे विलम्ब शुल्क देना होगा।

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय, वाराणसी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विद्रोही आत्माएं

अंतर्राष्ट्रीय ख्याति के लेखक की हृदयस्पर्शी
तथा विचार-प्रेरक कहानियां

लेखक
खलील जिब्रान
अनुवादक
श्रीपाद जोशी

भवन वेद वेदांग विद्यालय
ग्रन्थालय
क्रमांक...... 1822
दिनांक......

१९८०
सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

0-,3M83x
152M0

प्रकाशक
यशपाल जैन
मंत्री,सस्ता साहित्य मंडल
एन ७७, कनॉट सर्कस, नई दिल्ली-१

o

दूसरा संस्करण : १९८०
मूल्य : दस रुपये

o

मुद्रक
अग्रवाल प्रिन्टर्स
दिल्ली

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय
वाराणसी।
आगत क्रमांक........2017....
दिनांक.................................

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रकाशकीय

अंतर्राष्ट्रीय जगत में जिन लेखकों का स्थान बहुत ऊंचा है, उनमें खलील जिब्रान अग्रणी हैं। समाज की चेतना को प्रबुद्ध करने के लिए उन्होंने गद्य और पद्य दोनों में विपुल साहित्य की रचना की। उनकी 'जीवन-संदेश' (प्रौफेट) कृति तो विश्व-साहित्य की अमर रचना है। जिब्रान की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उन्होंने जो कुछ लिखा है, वह देश-काल की सीमा में आबद्ध नहीं है, वह सबके लिए है, सब समय के लिए है।

'मण्डल' ने उनकी 'जीवन संदेश', 'पागल', 'बटोही', 'शैतान', 'हीरे और मोती', 'धरती के देवता' आदि पुस्तकें प्रकाशित की हैं, जिन्हें पाठकों ने बहुत ही पसंद किया है। इनमें से कुछ पुस्तकों के तो कई संस्करण हुए हैं।

हमें हर्ष है कि विद्वान लेखक की एक और रचना पाठकों को प्राप्त हो रही है। इस पुस्तक में उनकी सत्रह कहानियां हैं। ये सभी कहानियां अत्यन्त रोचक हैं। पुस्तक को एक बार हाथ में उठा लेने के बाद बिना पूरी पढ़े छोड़ना असंभव है। रोचकता के साथ-साथ कहानियां उद्‌बोधक भी हैं। प्रत्येक कहानी को पढ़ने के उपरान्त पाठक अनुभव करता है कि संसार में जो संत्रास, पीड़ा और विषमता है, उसके लिए मनुष्य स्वयं जिम्मेदार है और इन तथा अन्य बुराइयों को दूर करने के लिए मनुष्य को ही प्रयत्न करना होगा।

सच बात यह है कि ये कहानियां अन्य विख्यात लेखकों की कहानियों से भिन्न हैं। इन्हें एक बार पढ़कर संतोष नहीं होता। बार-बार पढ़ने को मन करता है।

हमें पूरा विश्वास है कि प्रस्तुत पुस्तक पाठकों को एक नई दृष्टि प्रदान करेगी और लेखक की अन्य कृतियों की भांति सभी क्षेत्रों और वर्गों में चाव से पढ़ी जायगी।

—मंत्री

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्रम

कब्रों का विलाप	५
अंधेरे में उजाला	१७
नयी दुलहिन	३२
दोस्त की वापसी	४२
सवेरे की रोशनी	४८
पागल जॉन	६३
अद्‌भुत तथ्य	८०
महाकवि	९१
आत्म-ज्ञान	९९
पेड़ की कहानी : उसी की जबानी	१०३
रंगे हुए गीदड़	११२
वह स्त्री	११८
रोग	१२१
अपना-अपना देश	१२५
मैं और तुम	१३२
विद्रोही आत्माएं	१४५
परिशिष्ट	
जिब्रान का सर्वांगीण क्रांतिवाद	१६३

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१.

□ कब्रों का विलाप

अमीर इंसाफ की गद्दी पर बैठा। उसके दाएं-बाएं देश के विद्वान बैठे थे। उनके चढ़े हुए चेहरों पर किताबों की छाया खेल रही थी। आस-पास सिपाही तलवारें थामे और नेजे उठाये खड़े थे। सामने लोग यह देखने को खड़े थे कि किस अपराधी को क्या दंड मिलता है। सबकी गर्दनें झुकी हुई थीं। आंखों में बेवसी झलक रही थी और सांस रुकी हुई थी, मानो अमीर की आंखों में एक ऐसी ताकत थी, जो उनके दिलों पर डर और रौब गालिब कर रही थी।

अमीर ने हाथ उठाया और चिल्लाकर कहा, "मुलजिमों को एक-एक करके मेरे सामने हाजिर करो और बताओ कि उनमें से किसने क्या कसूर किया है?"

कैदखाने का दरवाजा खोल दिया गया और काली दीवारें नजर आने लगीं।

जंजीरों की झंकार सुनाई देने लगी। उसके साथ कैदियों की आहें और रोना-पीटना भी मिला हुआ था। लोग गर्दनें उठा-उठाकर उनकी तरफ देखने लगे, मानो उस कब्र की गहराई से निकाली हुई उन मौत की शिकारों पर पहले नज़र डालने में एक-दूसरे के आगे बढ़ जाना चाहते हों।

थोड़ी देर के बाद कैदखाने से दो सिपाही निकले, जिनके कब्जे में एक नौजवान था। इस नौजवान के हाथों में हथकड़ी थी और उसकी चढ़ी हुई त्यौरी तथा निडर चेहरे से उसके स्वाभिमान और आत्मिक बल का पता चलता था। उसे सिपाहियों ने अदालत के बीच में खड़ा कर दिया और खुद थोड़ा-सा पीछे हटकर खड़े हो गये। अमीर ने एक क्षण उनकी तरफ घूरकर देखा, फिर सवाल किया, "इस आदमी ने, जो हमारे सामने इस तरह सिर उठाये खड़ा है, जैसे अदालत की जकड़ में न हो, बल्कि किसी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऊंची जगह पर खड़ा हो, क्या जुर्म किया है ?"

अमीर के वजीरों में से एक ने जवाब दिया, "कल एक फौजी अफसर और चंद सिपाही देहात में काम पर गये थे। इस आदमी ने अफसर को कत्ल कर दिया। सिपाहियों ने इसे गिरफ्तार कर लिया और खून में सनी हुई तलवार कब्जे में कर ली।"

अमीर गुस्से से कांपने लगा। उसकी आंखों से आग की चिनगारियां बरसने लगीं। उसने गरजती हुई आवाज में कहा, "इसे जंजीरों में जकड़ दो और फिर उसी अंधेरी कोठरी में बंद कर दो। कल सुबह इसी की तलवार से इसकी गर्दन उड़ा दो और इसकी लाश को शहर के बाहर फेंक दो, जिससे गिद्ध और चीलें इसका गोश्त नोंच लें और हवा इसकी बदबू को इसके घरवालों और इसके दोस्तों तक पहुंचा दे।

नौजवान को वापस कैदखाने की तरफ ले जाया गया। लोगों की दुःखभरी निगाहें उसके पीछे-पीछे गईं, क्योंकि वह अभी कम उम्र का था, खूबसूरत था और हट्टा-कट्टा था।

इसके बाद सिपाही एक औरत को लिये कैदखाने से निकले। यह स्त्री बहुत सुंदर और कोमलांगी थी। उसकी आंखों में दुःख और निराशा का पीलापन झलक रहा था। उसकी आंखें नीची हो रही थीं और लज्जा के मारे उसकी गर्दन झुकी थी।

अमीर ने उस पर निगाह डाली और कहा, "इस औरत ने, जो हमारे सामने ऐसे खड़ी है, जैसे सच के सामने छाया, क्या कसूर किया है ?"

एक वजीर ने उत्तर दिया, "यह औरत कुलटा है। रात को जब इसका खाविंद घर आया तब उसने देखा कि यह अपने एक यार के साथ सोई हुई है। इसका दोस्त डरकर भाग गया और खाविंद ने इसे पुलिस के हवाले कर दिया।"

यह सुनकर अमीर बहुत बिगड़ा। स्त्री शर्म के मारे पानी-पानी हो गई। अमीर ने ऊंची आवाज में कहा, "इसे वापस कैदखाने में ले जाओ और कांटों के बिस्तर पर सुलाओ, ताकि यह उस बिस्तर को याद करे, जिसे इसने अपने पाप से नापाक बनाया और इसे इनार[1] मिला हुआ

१. कड़ुआ फल.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सिरका[1] पिलाओ, ताकि यह अपने घर के खाने को याद करे। सुबह होने पर इसे नंगा करके खींचते और घसीटते हुए शहर के बाहर ले जाओ और संगसार[2] कर दो। इसकी लाश को वहीं पड़ा रहने दो, ताकि भेड़िये इसका गोश्त खा जायं और इसकी हड्डियों को कीड़े-मकोड़े चाट लें।"

उस औरत को फिर कैदखाने की अंधेरी कोठरी में ले जाया गया। लोग उसकी तरफ अफसोस की नजरों से देख रहे थे। वह अमीर के इंसाफ पर खुश थे, लेकिन उन्हें उस स्त्री के सौंदर्य, कोमलता और उसकी दुःखी आंखों पर भी रहम आ रहा था।

इसके बाद दो सिपाही अधेड़ उम्र के एक कमजोर आदमी को लिये हुए आये, जो अपने कांपते हुए घुटनों को घसीटता हुआ चलता था। उसने भीड़ की तरफ व्याकुल आंखों से देखा। उसकी आंखों में मायूसी, बर्बादी और गरीबी झलक रही थी।

अमीर ने उसपर निगाह डाली और जोश में आकर पूछा, "इस गंदे आदमी ने, जो इस तरह खड़ा है, जैसे जिंदों में मुर्दा, क्या कसूर किया है?"

वजीर ने जवाब दिया, "यह चोर है। रात के वक्त यह कलीसा[3] में जा घुसा और जोगियों ने इसे पकड़ लिया। इसकी झोली में पूजा के बर्तन पाये गये।"

अमीर ने उसकी तरफ इस तरह देखा, जैसे भूखा गिद्ध पर-कटी चिड़िया की ओर देखता है। चिल्लाकर बोला, "इसे फिर कैदखाने के अंधेरे में फेंक दो और जंजीरों में जकड़ दो। जब सुबह हो जाय तब इसे रेशमी रस्सी से एक ऊंचे पेड़ पर लटका दो और इसी तरह इसे तबतक जमीन और आसमान के बीच लटका रहने दो जबतक इसकी गुनहगार

---

१. शराब.

२. संगसार करना—इस्लामी धर्मशास्त्र के अनुसार एक प्रकार का दंड, जिसमें व्यभिचारी को जमीन में कमर तक गाड़ देते थे और उसके सिर पर पत्थर बरसा कर उसके प्राण लेते थे.

३. गिरजा.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अंगुलियां सड़-गल न जायं और उनकी बदबू चारों तरफ फैल न जाय।"

सिपाही चोर को फिर कैदखाने में ले गये और लोग कानाफूसी करने लगे कि इस मरियल काफ़िर ने पूजा के बर्तन चुराने की हिम्मत कैसे की ?

अमीर गद्दी से उतरा और उसके विद्वान तथा बुद्धिमान सलाहकार भी उसके पीछे हो लिये, सिपाही कुछ आगे और कुछ पीछे। लोगों की भीड़ तितर-बितर हो गई और इस तरह वह स्थान खाली हो गया, अलबत्ता कैदियों की आहें और गहरी सांसें सुनाई देती रहीं।

मैं वहां खड़ा इस कानून पर हैरान हो रहा था, जो इंसान ने इंसान के लिए बनाया है। मैं उस चीज पर गौर कर रहा था, जिसे लोग इंसाफ कहते हैं। सोचते-सोचते मेरे विचार इस तरह गायब हो गये, जिस तरह शाम की लाली धुंधलके में छिप जाती है। मैं उस मकान से निकला। अपने दिल में कहता था कि घास मिट्टी से बढ़ती है, बकरी घास को खा लेती है, भेड़िया बकरी को अपनी खुराक बनाता है, गैंड़ा भेड़िये को खा जाता है और शेर गैंडे को मौत के घाट उतारता है। क्या कोई ऐसी ताकत भी मौजूद है, जो मौत पर भी छा जाय और जुल्म के इस सिलसिले को खत्म कर दे ? क्या कोई ऐसी ताकत मौजूद है, जो इन तमाम घिनौनी बातों को अच्छे नतीजे में बदल दे ? क्या कोई ऐसी ताकत है, जो जिंदगी की सारी ताकतों को अपने हाथ में ले ले और अपने अंदर जज्ब कर ले—जिस तरह समुद्र सारी नदियों को अपनी गहराइयों में समा लेता है ? क्या कोई ऐसी ताकत है, जो कातिल[1] को और मकतूल[2] को बुरा काम करनेवाली और उसके साथ बुरा काम करनेवाले और चोर और जिसके यहां चोरी की गई उसके अमीर के आसन से ज्यादा ऊंचे न्याय के आसन के सामने खड़ा कर दे ?

दूसरे दिन मैं शहर से निकलकर खेतों की तरफ गया, ताकि मन को कुछ चैन मिले और जंगल का मनोहर वायुमंडल दुःख और मायूसी के उन जंतुओं को मार दे, जो शहर के तंग गली-कूचों और अंधेरे मकानों ने मेरे अंदर पैदा कर दिये थे। जिस वक्त घाटी में पहुंचा तो देखा कि गिद्धों,

---

१. कत्ल करनेवाला.

२. जिसका कत्ल किया जाता है.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चीलों और कौवों के झुंड-के-झुंड उड़ रहे हैं और जमीन पर उतर रहे हैं। उनकी आवाजों और परों की फड़फड़ाहट से वातावरण कांप रहा है। मैं जरा आगे बढ़ा तो देखा कि मेरे सामने एक लाश पेड़ पर लटक रही है और एक नंगी औरत की बेजान देह उन पत्थरों के ढेर में पड़ी है, जिनसे उसे संगसार किया गया था। उधर एक नौजवान की लाश धूल तथा खून से सनी हुई है और उसका सिर धड़ से जुदा पड़ा है।

मैं वहीं ठहर गया। मेरी आंखों पर एक मोटा और अंधेरा पर्दा पड़ गया और मुझे कल्पना और मौत के सिवाय, जो खून में सनी उन लाशों पर छाई हुई थी, कुछ भी दिखाई नहीं देता है। बर्बादी की पुकार के अलावा मेरे कान कुछ भी नहीं सुनते थे। इस पुकार में कौवों की आवाज भी मिली हुई थी, जो इंसानी कानून के शिकारों के चारों तरफ मंडरा रहे थे।

तीन इंसान कल तक जिंदा थे, आज सुबह मौत के मुंह में चले गये।

तीन आदमियों ने इंसान के अस्तित्व में अपनी निष्ठा को खो दिया और अंधे कानून ने हाथ बढ़ाकर उन्हें बेदर्दी के साथ पामाल कर दिया।

तीन आदमियों को जेल ने कसूरवार ठहराया, क्योंकि वे कमजोर थे और कानून ने उन्हें मौत के घाट उतार दिया, क्योंकि वह ताकतवर था।

एक आदमी ने दूसरे को कत्ल कर दिया था तो वह कातिल (खूनी) ठहरा; लेकिन जब अमीर ने उसे कत्ल करवा दिया तो वह अमीर इंसाफ करनेवाला समझा गया!

एक शख्स ने पूजा का सामान ले लिया तो लोगों ने उसे चोर कहा, लेकिन जब अमीर ने उसकी जिंदगी छीन ली तो वह अमीर विद्वान् ठहरा!

एक औरत ने अपने पति से बेईमानी की तो लोगों ने उसे कुलटा ठहराया, लेकिन जब अमीर ने उसे नंगा करके संगसार करवाया तो वह अमीर शरीफ कहलाया!

खून बहाना हराम है, लेकिन अमीर के लिए यह किसने हलाल कर दिया?

माल हड़प करना जुर्म है, लेकिन आत्माओं को हड़प करना किसने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जायज करार दिया ?

औरतों की बेईमानी खराब बात है, लेकिन यह किसने कहा कि खूबसूरत देहों को संगसार करना पाक काम है ?

हम छोटी-सी बदमाशी के मुकाबले में बहुत बड़ी बदमाशी करते हैं और कहते हैं कि यह कानून है। हम फिसाद का बदला बदतरीन फिसाद से देते हैं और कहते हैं कि यह शील है। हम एक अपराध का बदला लेने के लिए दूसरा बड़ा अपराध करते हैं और चिल्लाते हैं कि यह इंसाफ है !

क्या अमीर ने कभी अपने दुश्मन को मौत के घाट नहीं उतारा ? क्या उसने कभी अपनी प्रजा के किसी कमजोर इंसान का माल हड़प नहीं किया ? क्या उसने कभी किसी खूबसूरत औरत की ओर आंख नहीं उठाई ? क्या वह इन तमाम जुर्मों से पाक है कि जिससे कातिल की गर्दन उड़ाना, चोर को सूली चढ़ाना और व्यभिचारिणी को संगसार करना उसके लिए जायज हो गया ?

वे कौन थे, जिन्होंने चोर को दरख्त पर लटकाया ? क्या आसमान से फरिश्ते उतरे थे या वे वही इंसान थे, जो उस माल को, जो उनके हाथ में आ जाता है, हड़प लेते हैं ?

और उस कातिल का सिर किसने कलम किया था ? क्या ऊपर से नबी और पैगंबर आये थे या वे ही सिपाही थे, जो कत्ल और खून करते रहते हैं ?

और उस व्यभिचारिणी को किसने संगसार किया था ? क्या उस काम के लिए पाक रूहें अपनी स्थानों से आई थीं ? या वे वही लोग थे, जो अंधेरे के पर्दे में बुरे काम किया करते हैं ?

कानून !...कानून क्या चीज है ? उसे आसमान की ऊंचाइयों से सूरज की किरणों के साथ उतरते किसने देखा है ? और किस आदमी ने खुदाई इच्छा को इंसान के दिल से मिला-जुला पाया है ? और किस खानदान में फरिश्तों ने आकर इंसानों से कहा है कि कमजोरों को जिंदगी की रोशनी से महरूम कर दो, गिरे हुए को तलवार से उड़ा दो और कसूर करनेवाले को फौलादी पांवों के नीचे रौंद डालो ?

मेरे दिमाग में यही विचार चक्कर लगा रहे थे और मुझे परेशान कर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रहे थे कि इतने में मैंने किसी के पैरों की आहट सुनी। आंख उठाई तो देखा कि एक औरत पेड़ों में से निकलकर लाशों के करीब आ रही है। उसके चेहरे पर खतरे के निशान दिखाई दे रहे थे, मानो वह उस भयावने नज्जारे को देखकर डर गई हो। वह उस लाश की तरफ बढ़ी, जिसका सिर कटा हुआ था और चीख-चीखकर रोने लगी। अपनी कांपती हुई बांहों से उसने लाश को गले लगाया। उसकी आंखों से आंसुओं की झड़ी लगी थी। वह अपनी उंगलियां लाश के बालों पर फेर रही थी। जब थक गई तो उसने अपने हाथों से जमीन खोदना शुरू किया, यहां तक कि एक लंबी-चौड़ी कब्र खोद ली। फिर उसने उस नौजवान की लाश को उठाकर कब्र में रख दिया। उसका कटा हुआ और खून से लथपथ सिर उसके कंधों पर रख दिया और कब्र को मिट्टी से ढांककर उसके ऊपर उस तलवार के फल को गाड़ दिया, जिससे उसका सिर काटा गया था। इसके बाद उसने आंसू बहाते हुए मुझसे कहा, "अमीर से कह दो कि बजाय इसके कि मैं उस इंसान की लाश को, जिसने मुझे बेइज्जती के कब्जे से छुड़ाया, जंगल के खूंख्वार जानवरों और परिंदों के खाने के लिए छोड़ दूं, मेरे लिए बेहतर है कि मैं मर जाऊं और उस आदमी से जा मिलूं।"

मैंने उससे कहा, "ओ दुःखी औरत, मुझसे डरो मत, क्योंकि मैं तुमसे पहले इन मैयतों पर विलाप कर चुका हूं, लेकिन मुझे यह तो बताओ कि इस आदमी ने तुम्हें बेइज्जती के कब्जे से किस तरह बचाया था ?"

उसने टूटती हुई आवाज में जवाब दिया, "अमीर का एक अफसर हमारे खेतों में लगान और जजिया वसूल करने आया था; लेकिन जब उसने मुझे देखा तो उसकी नीयत में बदी आ गई। इसके बाद उसने मेरे बाप की तरफ भारी रकम निकाल दी और चूंकि मेरे गरीब बाप यह रकम अदा नहीं कर सकते थे, उस अफसर ने गुस्से में आकर रुपये के बदले में मुझ पर कब्जा कर लिया, इस खयाल से कि मुझे अमीर के महल में पहुचा दे। मैंने रो-रोकर उससे दया की भीख मांगी, लेकिन उसे रहम नहीं आया। मैंने उससे बाप के बुढ़ापे की तरफ ध्यान देने की मिन्नत की, लेकिन वह न पसीजा। तब मैंने चिल्ला-चिल्लाकर गांववालों को इकट्ठा किया और उनके सामने फरियाद की। इसपर यह नौजवान, जिसके साथ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरी मंगनी हो चुकी थी, आया और उसने मुझे अफसर के हाथों से छुड़ाया। अफसर ने गुस्से में आकर उसे कत्ल कर देना चाहा, लेकिन नौजवान ने फुर्ती के साथ अपने को बचाया और दीवार से लटकती हुई पुरानी तलवार खींचकर उसने अपने ऊपर के हमले के जवाब में और मेरे शरीर के बचाव के लिए अफसर को कत्ल कर दिया। इसके बाद वह अपनी इज्जत के लिए मक़तूल की लाश के पास ही खड़ा रहा। आखिरकार सिपाहियों ने उसे गिरफ्तार करके कैदखाने में डाल दिया।"

यह कहते-कहते उसने मेरी तरफ दिल को पिघलानेवाली निगाह से देखा, फिर जल्दी से पीठ मोड़कर चल दी। उसकी दर्दनाक आवाज हवा में गूंजती रही।

थोड़ी देर के बाद मैंने एक नौजवान को आते देखा, जिसने अपना चेहरा कपड़े से ढांक रखा था। वह व्यभिचारिणी की लाश के पास पहुंचकर रुक गया। उसने अपना कुर्ता उतारकर उससे उस नंगी औरत को ढांक दिया और अपने खंजर से जमीन खोदने लगा। कब्र तैयार हो गई तो उसने उस औरत को उसमें दफना दिया। जब यह काम पूरा हो गया तो उसने इधर-उधर से कुछ फूल तोड़कर उनका एक गुलदस्ता बनाया और उस कब्र पर रख दिया। जब वह जाने लगा तो मैंने उसे रोक लिया और कहा, "इस औरत के साथ तुम्हारा क्या ताल्लुक था कि तुमने अमीर की इच्छा के खिलाफ और अपनी जिंदगी खतरे में डालकर इसके लिए इतनी मेहनत की और इसकी देह को कौओं और चीलों की खूराक बनने से बचाया?"

नौजवान ने मेरी तरफ देखा। उसकी आंखोंसे मालूम हो रहा था कि वह बहुत रोया-धोया है और उसने सारी रात जागते हुए बिताई है। वह बहुत दुःखी और मायूसी-भरी आवाजमें बोला, "मैं वही बदनसीब आदमी हूं, जिसकी वजह से इस बेचारी को संगसार किया गया। हम एक-दूसरे को तभी से चाहते थे, जबकि हम बचपन के दिनों में इकट्ठे खेला करते थे। हम जवान हो गये और हमारी मुहब्बत भी पूरी तरह उभर आई। एक बार जब मैं शहर चला गया था, लड़की के बाप ने उसकी शादी जबरदस्ता किसी दूसरे आदमी के साथ कर दी। मैं वापस आया और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैंने यह खबर सुनी तो मेरी जिंदगी में अंधेरा छा गया और मुझे जीना दूभर हो गया। मैं अपनी भीतरी इच्छा के साथ बहुत झगड़ता रहा, लेकिन परास्त हो गया। मेरी मुहब्बत मुझे इस तरह लेकर चल दी, जिस तरह आंखोंवाला किसी अंधे को रास्ता दिखाता है। मैं छिपकर उसके घर पहुंचा, ताकि उसकी आंखों का नूर देखूं और उसकी आवाज का गीत सुनूं। मैंने उसे अकेली पाया। वह अपनी किस्मत को रो रही थी और अपनी जिंदगी पर अफसोस कर रही थी। मैं उसके पास बैठ गया। हम चैन से बातें करने में मग्न हो गये और खुदा जानता है कि हमारे दिल पाक थे। लेकिन जब एक घंटा गुजर गया तो एकाएक उसका खाविंद आ गया। उसने जब मुझे देखा तो वह गुस्से से पागल हो गया। उसने अपनी औरत के गले में कपड़ा डालकर शोर मचाना शुरू कर दिया, "लोगो ! आओ ! और इस औरत और उसके यार को देखो !" अड़ोसी-पड़ोसी जमा हो गये और थोड़ी देर में पुलिसवाले भी खबर पाकर आ पहुंचे। उस आदमी ने अपनी औरत को पुलिस के सख्त हाथों में दे दिया, जो उसे घसीटते हुए थाने की तरफ ले गये। लेकिन किसी ने मुझ पर हाथ भी न उठाया, क्योंकि अंधा कानून और गंदी रूढ़ियां औरत का ही पीछा करती हैं, मर्द का तो हर कसूर माफ समझा जाता है।"

यह कहानी सुनाने के बाद नौजवान अपना मुंह छिपाये शहर की तरफ चल दिया और मुझे लाश की तरफ देखते हुए छोड़ गया, जो पेड़ से लटक रही थी और हवा के झोंकों से पेड़ की शाखाओं के साथ हिल रही थी, मानो वह रूहों से दया की मांग कर रही हो, और चाहती हो कि उसे नीचे उतारकर जमीन पर इंसानियत के प्रेमियों और मुहब्बत के शहीदों के पहलू में डाल दिया जाय।

एक घंटे के बाद एक दुबली-पतली औरत आ पहुंची, जिसके कपड़े चिथड़े हो रहे थे। वह पेड़ से लटकती हुई लाश के करीब आकर ठहर गई और उसने रो-पीटकर अपने दिल को हलका किया। इसके बाद वह पेड़ पर चढ़ गई और उसने अपने दांतों से रेशमी रस्सी को खोला। लाश गीले कपड़े की तरह जमीन पर आ गई। औरत पेड़ से नीचे उतरी और उसने दो कब्रों के पहलू में तीसरी कब्र खोदी और उसमें लाश को दफन कर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिया। जब वह कब्र पर मिट्टी डाल चुकी तो उसने लकड़ी के दो टुकड़े लेकर उनका सलीब बनाया और उसे कब्र के सिरहाने गाड़ दिया। जब वह जाने लगी तो मैंने बढ़कर सवाल किया, "ओ औरत, तुम्हें किस बात ने मजबूर किया कि तुम एक चोर को दफन करने के लिए यहां आओ?"

उसने मेरी तरफ देखा। उसकी निगाहों से परेशानी और बेचैनी के निशान दिखाई दे रहे थे। उसने कहा, "यह मेरा खाविंद, मेरी जिंदगी का साथी और मेरे बच्चों का बाप है। हमारे पांच बच्चे भूखों मर रहे हैं। उनमें सबसे बड़ा आठ साल का है और सबसे छोटा अभी दूध पीता है। मेरा खाविंद चोर न था। वह गिरजाघर की जमीन में खेतीबाड़ी करता था और उसे गिरजाघर के जोगी इतना ही मेहनताना देते थे कि अगर हम शाम को खाना खा लेते तो सुबह के लिए हमारे पास कुछ न बचता। जब मेरा खाविंद जवान था तो वह गिरजाघर के खेतों को अपने पसीने से सींचता था और अपनी बांहों की ताकत से वहां के बागों को हरा-भरा रखता था। लेकिन जब वह बूढ़ा हो गया और जब सालों की मेहनत ने उसकी ताकत को खत्म कर दिया और बीमारियों ने उसे घेर लिया तो उन्होंने उसे यह कहकर नौकरी से हटा दिया कि 'गिरजा को अब तुम्हारी जरूरत नहीं है, अब तुम चले जाओ। जब तुम्हारे बेटे जवान हो जायं तो उन्हें यहां भेज देना, ताकि वे तुम्हारी जगह ले लें।' मेरा खाविंद उनके सामने बहुत रोया-धोया। उसने ईसा-मसीह के नाम पर उनसे दया की भीख मांगी और उन्हें फरिश्तों तथा मसीह के साथियों की कसमें दिलाईं; लेकिन उन्होंने दया न की और न उस पर मेहरबानी की—न मुझपर, न हमारे बच्चों पर।

"मेरा खाविंद शहर में गया ताकि कोई नौकरी ढूंढ़े, लेकिन नाकामयाब होकर लौटा, क्योंकि उन महलों के रहनेवाले सिर्फ जवान आदमियों को नौकर रखते थे। इसके बाद वह सड़क पर बैठ गया, ताकि लोगों से दान या भीख मिले। लेकिन किसी ने उसकी तरफ निगाह न की, लोग कहते थे, 'ऐसे इंसान को भीख या खैरात देना मजहब के खिलाफ है।'

"आखिर एक ऐसी रात आ पहुंची, जबकि हमारे बच्चे भूख के मारे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जमीन पर तड़प रहे थे। मेरा दुध-मुंहा बच्चा मेरी छाती को चूसता था, लेकिन वहां दूध कहां था! यह नजारा देखकर मेरे खाविंद का चेहरा बदल गया। वह अंधेरे के परदे में चुपके-से निकला और गिरजाघर के भंडार में पहुंच गया, जहां जोगी और पादरी अनाज और शराब जमा करके रखते हैं। मेरे खाविंद ने अनाज की एक झोली भरकर अपने कंधे पर उठाई और बाहर निकलना चाहा, लेकिन वह कुछ ही गज गया था कि चौकीदार जाग उठे और उन्होंने उस गरीब को पकड़ लिया। उन्होंने उसे गालियां दीं, खूब मारा-पीटा और जब सुबह हुई तो यह कहकर पुलिस के हवाले कर दिया कि यह चोर है और गिरजाघर के सोने के बर्तन चुराने आया था।'

"पुलिस ने उसे कैदखाने में डाल दिया। उसके बाद इसे पेड़ से लटका दिया गया ताकि गिद्ध इसके गोश्त से अपना पेट भरें! इसका कसूर क्या है? सिर्फ इतना ही कि इसने इस बात की कोशिश की थी कि इसके भूखे बच्चे उस अनाज से अपना पेट भरें, जो इसने अपनी बाजुओं की ताकत से उन दिनों जमा किया था, जबकि वह गिरजाघर का नौकर था।"

इतना कहकर वह गरीब औरत चली गई, लेकिन उसकी बातों ने सारे वायुमंडल को उदास और दुःखी बना दिया ऐसा मालूम होने लगा मानो उसके मुंह से धुएं के बादल निकलकर हवा में दुःख का वातावरण पैदा कर रहे हैं।

मैं उन कब्रों के पास खड़ा रहा, जिनकी मिट्टी के जर्रों से फरियादें निकल रही थीं। मैं खड़ा सोच रहा था कि अगर इस खेत के पेड़ों से मेरे दिल की आग की लपट छू जाय तो ये हलचल करने लग जायं और अपनी जगह छोड़कर अमीर और उसके सिपाहियों से जूझ पड़ें और गिरजाघर की दीवारों को तोड़-फोड़कर पादरियों के सिर पर गिरा दें।

मैं उन नई कब्रों की ओर देख रहा था। मेरी निगाह से हमदर्दी की मिठास और दुःख और अफसोस का कड़ुवापन निकल रहा था।

यह एक नौजवान की कब्र है, जिसने अपनी जिंदगी को एक अबला औरत की इज्जत बचाने के लिए न्यौछावर कर दिया। इसने उस औरत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को भेड़िये के मुंह से छुड़ाया और इस बहादुरी के लिए इसकी गर्दन उड़ा दी गई ! उस औरत ने अपने रहवर की कब्र पर तलवार गाड़ दी है, जो इस नौजवान की बहादुरी की तरफ इशारा करती है।

यह कब्र उस औरत की है, जो मारी जाने से पहले प्रेम की पुतली थी। इसे संगसार किया गया, क्योंकि वह मरते दम तक पाक रही। इसके दोस्त ने इसकी कब्र पर फूलों का गुच्छा रख दिया है, जो प्रीति की सुगंध की तरफ इशारा करता है।

और यह उस बदनसीब गरीब की कब्र है, जिसकी बाजुओं में जबतक ताकत थी तबतक वह गिरजाघर के खेतों में खेती-बाड़ी करता रहा, लेकिन जब उसमें ताकत न रही तो उसे निकाल दिया गया। वह काम करके अपने बच्चों का पेट पालना चाहता था, लेकिन उसे काम न मिला। फिर उसने भीख मांगना चाहा, लेकिन किसी ने उसे भीख न दी। आखिर-कार जब इसकी मायूसी हद से ज्यादा बढ़ गई तो इसने उस अनाज में से थोड़ा-सा उठाना चाहा, जो उसने अपना खून-पसीना एक करके जमा किया था। इसे पकड़ लिया गया और इसकी जान ले ली गई। इसकी औरत ने इसकी कब्र पर सलीब बना दिया है, ताकि रात के सूनेपन में आसमान के तारे पादरियों के जुल्म को देखें, जो मसीह की सिखावन को फैलाने का दावा तो करते हैं; लेकिन असलियत में तलवारों से दुखियों और कमजोरों की गर्दनें उड़ाते हैं।

सूरज छिप रहा था, मानो वह आदमियों के जुल्म और अत्याचारों से तंग आ गया हो और उनसे नफरत करता हो। शाम अपने घूंघट में सारी दुनिया को छिपा रही थी। मैंने आसमान की तरफ देखा और कब्रों के राज पर हाथ मलते हुए ऊंची आवाज से कहा, "यह है तुम्हारी तलवार, ऐ बहादुर मर्द, जो जमीन में गड़ी है; ये हैं तुम्हारे फूल, ऐ औरत, जिनसे प्रीति की किरणें निकल रही हैं; और यह है तुम्हारा सलीब, ऐ ईसामसीह, जो रात के अंधेरे में छिप रहा है !"○

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२

अंधेरे में उजाला

बाप मरा उस समय वह दूध पीती बच्ची थी और जब मां मरी तब आठ-नौ बरस की भोली-भाली लड़की, जिसे लाचारी और दरिद्रता ने एक गरीब पड़ोसी के टुकड़ों पर ला पटका। यह पड़ोसी लेबनान की मनोहारी घाटियों में खेती-बाड़ी करता था और वहीं एक झोंपड़ी में अपने कुनबे के साथ अनाज और फलों पर जिंदगी बिताता था।

बाप की ओर से उस बेचारी को मरनेवाले का नाम और अखरोट शफतालू के पेड़ों से घिरी हुई एक छोटी-सी झोपड़ी विरासत में मिली थी। मां की ओर से दुःख के आंसू और मुफलिसी का अपमान और तिरस्कार! अब वह अपने गांव में परदेसी थी और उन ऊंची चट्टानों और घने पेड़ों में अकेली।

उसके रोज के काम का सिलसिला यह था कि वह तड़के नंगे पांव दूध देनेवाली गाय-भैंसों का झुंड हांकती हरी-भरी चरागाहों में जाती और पेड़ों की छाया के तले बैठकर चिड़ियों के साथ गाती, नहर के साथ रोती, गाय-भैंसों को, उनके चारे की बहुतायत पर, ईर्ष्या की नजर से देखती और फूलों का खिलना और तितलियों का उड़ना ताकती। शाम को जब भूख लगती तो घर वापस आती और अपने मालिक की छोटी लड़की के साथ बैठकर थोड़े-से सूखे फल और जैतून के तेल और सिरके में डूबी तरकारियों से ज्वार की रोटी कंगालों की तरह खाती। उसके बाद सूखे घास के बिस्तर पर अपनी बांहों का तकिया बनाकर लेट जाती और अपने दुर्भाग्य पर ठंडी आहें भरती इस आशा में सो जाती कि काश जीवन एक गहरी नींद होता, जिसे न सपने तोड़ सकते, न जाग्रति छू सकती! सुबह जब उसका मालिक उसे जगाता तो वह घबड़ाकर उठ बैठती—उसके डर से कांपती और अक्खड़पन से डरती हुई।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साल-पर-साल बीतते गये और गरीब रैहाना उसी तरह उन टीलों और घाटियों में पलती बढ़ती रही। उम्र के साथ-साथ उसकी मुसीबतें भी बढ़ रही थीं। उसके भीतर अनजाने तौर पर नाजुक भावनाएं पैदा हो रही थीं, जैसे फूल की गहराइयों में खुशबू पैदा होती है। दिल की धड़कनें और आशंकाएं उसे चारों तरफ से घेर रही थीं, जैसे ढोर-जानवर झरने को घेर लेते हैं।

अब वह सूझबूझवाली लड़की थी, उस बढ़िया और अछूती जमीन की तरह, जो आत्मसाक्षात्कार के बीजों और अनुभव के पैरों से अपरिचित हो।

अब उसके अंदर एक पवित्र आत्मा ने जन्म लिया था, जिसे ईश्वरीय इच्छा ने उसके जादू-भरे चरागाह में फेंक दिया था, जहां जीवन मौसम के परिवर्तन के साथ बदलता रहता है।

अपनी इन अच्छाइयों के कारण वह ऐसी मालूम होती थी, मानो अनजान भगवान का नूर धरती और सूरज के बीच चमक रहा हो।

हम लोग जिनकी जिंदगी का ज्यादातर हिस्सा सुसभ्य शहरों में बीतता है, लेबनान की देहाती जिंदगी के बारे में कुछ नहीं जानते। हम नई सभ्यता की धारा में बहते हैं, यहां तक कि उस सीधे-सादे, साफ-सुथरे और सुंदर जीवन के दर्शन को भूल जाते हैं या जानबूझकर भुला देते हैं—वह जीवन जो ध्यान देने पर हमें वसंत में मुस्कराता हुआ, गर्मियों में फलों से लदा हुआ, पतझड़ के दिनों में सोना बिखेरनेवाला, जाड़ों में शांति लानेवाला और अपने हर दौर में प्रकृति के उपहार भेंट करनेवाला होता है। भौतिक दृष्टि से हम देहातियों से बढ़े-चढ़े हैं, परंतु आत्मिक दृष्टि से वे हमारी तुलना में कहीं अधिक अच्छे हैं। हम बोते बहुत कुछ हैं, पर काटते कुछ नहीं। इसके विपरीत वे जो कुछ बोते हैं, वही काटते हैं। हम खुदगरजी और जरूरतों के गुलाम हैं, वे संतोष के पुतले हैं; हम मायूसी, डर और उदासी से कड़ुवे जीवन की शराब पीते हैं, वे पवित्र, शुद्ध, साफ-सुथरा जीवन बिताते हैं।

रैहाना अब सोलह बरस की थी। उसकी आत्मा एक निर्मल आइने के समान थी, जिसमें हरियाली और फूलों की शोभा का प्रतिबिंब पड़ता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है। उसका हृदय घाटियों के शून्य स्थान की तरह था, जिसमें हर आवाज गंजती है।

प्रकृति के रोने-धोने के दिन थे। रैहाना एक झरने के पास बैठी थी। वह झरना जमीन पर होते हुए भी उससे इस प्रकार दूर था, जैसे कवि की प्रतिभा उसकी भौतिक परिस्थितियों से अछूती होती है। वह पीले पत्तों को देखने में मग्न थी, जिनसे हवा की लहरें खेल रही थीं, जिस तरह मौत इंसान के प्राणों के साथ खेलती है। उसने उन मुरझाये हुए फूलों की ओर निगाह डाली, जो टहनियों से गिरकर अपने बीजों को धरती के हवाले कर रहे थे, जिस तरह अंधाधुंदी के जमाने में औरतें अपने हीरे-जवाहरात और जेवर मिट्टी में दबा देती हैं।

वह फूलों और पेड़ों को देख रही थी और ग्रीष्म ऋतु की जुदाई की शोक भरी अनुभूति उसके हृदय को व्यथित कर रही थी। उसने सुना, घाटी घोड़े की टापों से गूंज रही है। पलटकर देखा तो एक घुड़सवार धीरे-धीरे उसकी ओर आ रहा था। झरने के पास पहुंचकर वह घोड़े से उतर गया। उसकी पोशाक और रूप-रंग से उसकी खुशहाली और होशियारी प्रकट हो रही थी। उसने बड़े शिष्टाचार से, जो खास पुरुष का ही काम होता है, रैहाना को सलाम किया और कहा, "मैं शहर का रास्ता भूल गया हूं। क्या तुम मेरी सहायता कर सकती हो?"

वह एकदम ऐसे खड़ी हो गई, जैसे झरने के किनारे के पेड़ की टहनी। फिर उसने उत्तर दिया, "मुझे शहर का रास्ता मालूम नहीं, लेकिन मैं अभी जाकर अपने मालिक से पूछे लेती हूं। वह जानता है।"

ये शब्द उसने दिल कड़ा करके कहे। लज्जा ने उसकी सुंदरता और मोहकता में चार चांद लगा दिये, परंतु जब वह जाने लगी तो अजनबी ने उसे रोक लिया। जवानी की शराब उसकी रगों में लहरें मार रही थी और उसकी आंखें एक अवर्णनीय आनंद से चमक रही थीं। वह कहने लगा, "नहीं! नहीं! तुम जाओ मत!"

रैहाना ने उसकी आवाज में एक ऐसी सामर्थ्य का अनुभव किया, जिसने उसके पैरों में बेड़ी डाल दी और वह जहां थी वहीं चकित होकर खड़ी रही। उसने शर्म से उचटती हुई निगाह उस अजनबी पर डाली। वह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसे घूर रहा था—एक ऐसी शान के साथ, जिसका मतलब उसकी समझ में नहीं आया। वह मुस्करा रहा था—एक ऐसे जादूभरे ढंग से, जिसकी मिठास रैहाना को रुला देती। वह मजा ले-लेकर प्यार भरी नजर से रैहाना के नंगे पांवों, सुंदर भुजाओं, चमकदार गर्दन और घने लेकिन नरम और नाजुक बालों को देख रहा था। वह शौक और अचरज के साथ इस बात पर गौर कररहा था कि सूरज नेकिस तरह उसके चेहरे को चमकदार बनाया है और प्रकृति ने कैसे उसकी भजाओं को इतनी सामर्थ्य दी है।

लेकिन रैहाना ?वह शर्मसेनीची निगाह किये खड़ी थी। अज्ञात कारण से वह न वहां से हिलना चाहती थी, न उससे बातचीत कर सकती थी।

उस दिन शाम को दुधारू गायें-भैंसें अकेली अपने बाड़े में वापस आईं। रात को जब रैहाना का मालिक खेत से लौटा तो उसे खोजने के लिए निकला। लेकिन उसका कहीं पता न था। उसने 'रैहाना !' रैहाना !' कहकर उसे पुकारना शुरू किया, लेकिन पेड़ों में सनसनाती हुई हवा और घाटियों के सिवा किसी ने जवाब न दिया। विवश और निराश होकर वह अपनी झोपड़ी में वापस आया और उसने अपनी औरत को उस दुर्घटना का हाल बताया। वह उस यकीन न आनेवाली बात को सुनकर हैरान रह गई। उस दुःख में वह बेचारी सारी रात चुपके-चुपके रोती और अपने दिल में कहती रही, "मैंने एक बार सपने में देखा था कि रैहाना एक जंगली हिंसक पशु के चंगुल में फंसी है, वह पशु उसे फाड़ रहा है और वह हंस भी रही है और रो भी रही है।"

उस छोटे से सुंदर गांव में लोगों को रैहाना के विषय में केवल इतना ही मालूम था। मुझे उसकी जानकारी गांव के एक बूढ़े आदमी से मिली, जिसके सामने रैहाना छोटी से बड़ी हुई थी और एकाएक लापता हुई थी। इस तरह की अपनी यादगार के तौर पर पीछे कुछ छोड़ा भी तो अपनी मालकिन की आंख में दो बूंद आंसू या वह मीठी याद, जो उस घाटी में सबेरे-सबेरे सुगंधित वायु की नर्म और नाजुक लहरों के साथ बहती है और नष्ट हो जाती है, जैसे खिड़की के शीशे पर बच्चे के मुंह की भाप !

—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

: २ :

सन् १९०० ईसवी की बात है। पतझड़ का मौसम था कि मैं अपनी छुट्टियों के दिन उत्तरी लेबनान में बिताकर वापस आया और कालेज के खुलने से पहले लगातार एक सप्ताह तक अपने दोस्तों के साथ घूमता-फिरता, आजादी से उस सुख का आनंद लूटता रहा, जिससे जवानी को बेहद प्यार है और जिसका अनुभव वह मां-बाप या नजदीक के रिश्तेदारों के घरों में भी करती है और स्कूल-कालेजों की चहारदीवारी में भी। हम सबकी हालत उस वक्त उन पंछियों की-सी थी, जो पिंजड़े का दरवाजा खुला देखें और जिनका हृदय उड़ने के आनंद और चहचहाने की खुशी से भर जाय।

जवानी एक सुंदर सपना है, जिसकी मिठास किताबों की बारीक और छिपी हुई समस्याओं को अपना दास बनाकर एक दुखदायी जाग्रति में बदल देती है। तो क्या कभी वह दिन भी आयेगा, जब महान दार्शनिक जवानी की कल्पनाओं और साक्षात्कार की मिठास को एक कर देंगे, जिस तरह झिड़की दो घृणा करनेवाले हृदयों को आपस में मिला देती है? कभी वह दिन भी आयेगा, जब प्रकृति मानव की अध्यापिका, मानवता उसकी किताब और जिंदगी उसकी पाठशाला होगी? कोई मुझे बता दे कि क्या मेरी यह इच्छा कभी पूरी होगी?

यद्यपि हम जानते नहीं, पर अनुभव करते हैं कि हम बड़ी तेजी के साथ 'आत्मिक उन्नति' की ओर जा रहे हैं और वह उन्नति प्रकृति के सौंदर्य की अनुभूति है, जो हमें अपने दिल की भावनाओं के द्वारा प्राप्त होती है, और सौभाग्य और सज्जनता की अधिकता है, जो उस सौंदर्य के प्रति हमारे प्रेम का परिणाम है।

एक दिन मैं चौक में किसी ऊंची जगह पर बैठा उन हंगामों को देख रहा था, जो शहर के मैदानों में हमेशा पाये जाते हैं। दूकानदारों और फेरीवालों की आवाजें सुन रहा था, जो वे अपने माल या खाने-पीने की चीजों की तारीफ में लगा रहे थे। तभी पांच बरस का एक बच्चा फटे-पुराने कपड़े पहने कंधे पर छोटी-सी टोकरी लिये, जिसमें फूलों के हार थे, मेरे पास आया और घुटी हुई आवाज में, जिससे परंपरागत पतन एवं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भयानक विनाश प्रकट हो रहा था, कहने लगा, "बाबूजी, फूल लेंगे ?"

मैंने उसके नन्हे-मुन्ने-से पीलेचेहरे कीओर देखा। उसकी आंखेंदुर्भाग्य और दरिद्रता कीपरछाइयों से धुंधली हो रही थीं, मुंह थोड़ा-सा खुला हुआ था, मानो बीमार की छाती का गहरा घाव हो। कलाइयां नंगी और दुबली-पतली थीं। छोटा-सा नाजुक शरीर फूलों की टोकरी पर झुका था, जैसे हरे-भरे पौधों में मुरझाये हुए पीले गुलाब की टहनी हो। मैंने एक क्षण में उसका वह हृदयविदारक स्वरूप देखा और मेरे अंदर का प्यार और दया उस मुस्कराहट की शकल में जाहिर हुई, जो आंसुओं से ज्यादा कड़ुवी होती है—वह मुस्कराहट, जो हमारे अंतःकरण की गहराइयों से उभरकर होंठों पर आती है और अगर हम उससे भागने की कोशिश करते हैं तो वह हमारी आंखों में पहुंचती है और आंसू बनकर हमारे गालों पर ढलक आती है।

मैंने कुछ फूल खरीदे और उससे बातें करने लगा। मुझे मालूम था कि उसकी दुःखभरी निगाहोंके पीछे एक छोटा-सा दिल है, जिसमें शाश्वत और अविनाशी फकीरों की दर्दभरी कहानी का एक अध्याय छिपा है—वह दुःखभरी कहानी, जो दिनरात संसार के रंगमंच पर खेली जाती है, पर बहुत कम लोग उसकी व्यथाओं को देखने की सामर्थ्य रखते हैं।

जब मैं प्यार-भरे स्वर में उससे सहानुभूति के साथ बातें करने लगा तो उसका डर दूर हुआ और वह मुझे अचरज से देखने लगा, क्योंकि वह भी अपने जैसे मुहताजों की तरह उन नौजवानों की झिड़कियां-घुड़कियां सुनने का आदी था, जो आम तौर से सड़क पर भीख मांगनेवाली नौजवान लड़के लड़कीको इस तरह देखते हैं, मानो वह एक गंदी और अपवित्र चीज है, जिसकी कोई हस्ती नहीं। उन खुदा के बंदों को कभी यह ख्याल नहीं होता कि यह गरीब भी उन किस्मत के मारों में से एक है, जिनकी छातियां जमाने के तीरों ने छलनी कर दी हैं !

मैंने उससे पूछा, "तुम्हारा नाम क्या है ?"

जमीन से नजर ऊपर उठाये बिना उसने उत्तर दिया, "फवाद !"

"तुम किसके बेटे हो ?" मैंने आगे पूछा, "तुम्हारे रिश्तेदार कहां हैं ?"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"मैं रैहाना का बेटा हूं !" उसने उत्तर दिया।

"और तुम्हारा बाप कहां है ?"

जवाब में उसने इस तरह सिर हिला दिया, मानो वह बाप के माने ही न जानता हो।

"फवाद ! तुम्हारी मां कहां है ?"

"वह घर में बीमार पड़ी है।"

बच्चे के मुंह से निकलेहुए ये संक्षिप्तशब्द मेरे कानोंमें पहुंचे और मेरी भावनाओं ने अनोखी तस्वीरें औरदुःखभरी परछाइयां बनातेहुए असलियत की कल्पना कर ली। मैं उसी क्षण समझ गया कि गरीब रैहाना, जिसकी कहानी मैंने गांव के बूढ़े से सुनी थी, आजकल बेरुत में है और बीमार है; वह तरुण सुंदरी, जो कलतक घाटी के पेड़ों में संतोष और निश्चितता का जीवन बिता रही थी, आज शहर में है और दरिद्रता और बेबसी की जिंदगी जी रही है; वह अनाथ लड़की, जिसने सुंदर चरागाहों में गायें-भैंसें चराते हुए अपनी तरुणाई का प्रारंभिक काल प्रकृति की हथेलियों पर बिताया था, आज सड़ी हुई सभ्यता की बाढ़ में बहकर असफलता और दुर्भाग्य के खूनी चंगुल का शिकार हो गई है।

मैं चुपचाप बैठा इन सारी बातों के बारे में सोच रहा था और वह बच्चा एक अजीब हैरानी की हालत में मुझ पर निगाह जमाये निश्चल खड़ा था, मानो अपनी पवित्र और अबोधआत्मा की आंखों से मेरे अंतःकरण की बरबादी का दर्दनाक दृश्य देख रहा हो। जब उसने जाने का इरादा किया तो मैंने उसका हाथ पकड़ लिया और कहा, "मुझे अपनी मां के पास ले चलो, मैं उसे देखना चाहता हूं।"

वह चकित होकर चुपचाप मेरे आगे-आगे हो लिया। वह बार-बार मुड़-मुड़कर देख रहा था, यह मालूम करने के लिए कि मैं उसके पीछे-पीछे आ भी रहा हूं या नहीं।

मैं उन गंदे गली-कूचों को पार कर रहा था, जहां का वायुमंडल मृत्यु की सांसों से बोझिल था, उन टूटे-फूटे मकानों के पास जा रहा था, जहां अंधेरे पर्दे में छिपकर बदमाश गुनाह किया करते हैं; उन चौराहों को पार कर रहा था, जिनके दाएं-बाएं काले सांपों की तरह बल खाती हुई सड़कें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

थीं। मुझ पर एक अज्ञात भय छाया हुआ था। वह लड़का मेरे आगे-आगे था, जिसके बचपन और मन की पवित्रता ने उसमें निडरता पैदा कर दी थी—एक ऐसी निडरता, जिसे वह व्यक्ति अनुभव ही नहीं कर सकता, जो उस शहर के बदमाशों और दुष्टों की चालबाजियों से परिचित हो, जिसे पौर्वात्य लोग 'शाम की दुलहिन' और 'बादशाहों के ताज का मोती' कहते हैं।

एक मुहल्ले के आखिरी सिरे पर पहुंचकर लड़का एक छोटे-से मकान में दाखिल हुआ, जिसका सिर्फ एक टूटा-फूटा हिस्सा कालचक्र के आघातों से बच रहा था। उसके पीछे-पीछे मैं भी उस मकान में चला गया। हर कदम पर मेरे दिल की धड़कन बढ़ती जा रही थी। अंत में मैं उस सील-भरे कमरे में पहुंचा, जिसमें सामानके नाम परसिर्फ एक टूटा दीया था,जिसकी पीली रोशनी के तीर अंधेरे की छाती को छेद रहे थे, और एक टूटी हुई चारपाई थी, जिससे गरीबी और लाचारी जाहिर हो रही थी। उस चारपाई पर एक स्त्री पड़ी हुई थी, उसका मुंह आंगन की ओर था, मानो उसके द्वारा जमाने के जुल्म से वह बच रही थी, या फिर उसके पत्थरों में एक ऐसा दिल पा रही थी, जो मनुष्य के दिल से ज्यादा नर्म और मुलायम था।

बच्चा उसके पास गया और 'मां' कहकर उसने उसे आवाज दी। उस स्त्री ने घबराकर आंखें खोल दीं और यह देखकर कि वह मेरी तरफ इशारा कर रहा है, वह अपने सड़े-गले लिहाफ में कांप उठी। एक ऐसी दर्दनाक आवाज में, जो आत्मिक व्यथा और कड़वी आहों से भरी हुई थी, उसने मेरी ओर देखकर कहा, "तुम क्या चाहते हो? क्या तुम इसलिए आये हो कि मेरी जिंदगी के आखिरी लहमे खरीदकर उन्हें अपनी विषय-वासना से नापाक कर दो? जाओ, मेरे पास से चले जाओ! बाजार उन औरतों से भरा पड़ा है, जो कौड़ियों के मोल अपना शरीर और अपनी आत्मा बेचा करती हैं। अब मेरे पास कुछ है भी नहीं, जिसे मैं बेच सकूं, सिवा उन बचे-खुचे, टूटते हुए सांसों के, जिन्हें मौत जल्दी ही कब्र के आराम के बदले में खरीदेगी।"

मैं उसकी चारपाई के पास खड़ा हो गया। उसके इन शब्दों ने मेरे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अंत:करण को अकथनीय व्यथा से भर दिया, इसलिए कि वे उसके दुर्भाग्य की संक्षिप्त कहानी कह रहे थे।

मैंने दु:खी स्वर में उससे कहा, "रैहाना ! मुझसे डरो नहीं। मैं तुम्हारे पास भूखे जानवर की हैसियत से नहीं, सहानुभूति रखनेवाले इंसान की हैसियत से आया हूं। मैं लेबनानी हूं और एक अर्से तक उन घाटियों और उस गांव में रहा हूं, जो सनोवर के जंगल के पास है। किस्मत की मारी रैहाना, मुझसे तुम डरो मत !"

उसने मेरे ये शब्द सुने और वह जान गई कि वे उस आत्मा की गहराइयों से निकल रहे थे, जिसे उसके दु:ख के साथ हमदर्दी थी। वह अपने बिस्तर पर ऐसे कांप उठी, जिस तरह बिना पत्तों की टहनियां जाड़े की हवाओं के सामने कांपती हैं। उसने दोनों हाथों से अपना चेहरा छिपा लिया, जैसे अपने को उस याद से बचाना चाहती हो, जो अपनी मधुरता की दृष्टि से भयानक और अपनी सुंदरता की दृष्टि से कड़ुवी थी।

थोड़ी देर की खामोशी के बाद, जो आहों से भरी थी, कांपते हुए कंधों में से उसका चेहरा दिखाई दिया और मैंने देखा कि उसकी धंसी हुई आंखें कमरे में खड़ी हुई एक अनुभूतिविहीन वस्तु पर जमी हुई हैं; सूखे होंठ निराशा से फड़क रहे हैं; गले में गहरी और टूटती हुई कराह के साथ मृत्यु की खरखराहट है। प्रार्थना और याचना से उभरती और टूटती हुई कराह के साथ कमजोरी और दु:ख से गिरती हुई आवाज में उसने कहा, "तुम एक उपकारकर्ता और सहानुभूति रखनेवाले की हैसियत से आये हो। अगर अपराध करनेवालों पर उपकार करना अच्छी बात है और पापियों के साथ मेहरबानी से पेश आना नेकी है तो भगवान तुम्हें इसका पुण्य दे दें। मगर मैं प्रार्थना करती हूं कि तुम जहां से आये हो, उल्टे पांव वहीं वापस चले जाओ। तुम्हारा यहां ठहरना तुम्हारे लिए लज्जा और बदनामी का बायस बन जायेगा, और मेरी स्थिति के प्रति तुम्हारी यह सहानुभूति तुम्हें दुनिया की नजरों में कलंकित कर देगी। जाओ, इससे पहले कि इस गंदे और अपवित्रता से भरे हुए कमरे में तुम्हें कोई देख ले, यहां से चले जाओ। इस गली से जाते समय अपने मुंह पर कपड़ा डाल लेना, वरना किसी आते-जाते की निगाह तुम पर पड़ जायगी और तुम मुफ्त में बदनाम हो जाओगे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वह दया और सहानुभूति, जो तुम्हारे हृदय में है, मुझे फिर से नेकचलन नहीं बना सकती। मेरे दोषों को नहीं मिटा सकती। मेरे दिल से मौत के ताकतवर हाथ को नहीं हटा सकती। मुझे मेरे दुर्भाग्य और पाप ने इन अंधेरी गहराइयों में फेंक दिया है। भगवान के लिए तुम अपनी सहानुभूति के कारण इस गंदी नाली में न गिरो!"

कुछ रुककर उसने कहा :

"मैं उस कोढ़ी की तरह हूं, जो कब्रिस्तान में बैठा हो। इसलिए तुम्हें चाहिए कि मेरे पास न आओ, वरना समाज तुम्हें अपमानित कर देगा। इस अक्षम्य अपराध के दंडस्वरूप तुम्हारे सारे सामाजिक अधिकार तुमसे छीन लिये जायंगे और तुमकहीं मुंह दिखाने के लायक न रहोगे। जाओ, फौरन वापसचले जाओ और देखो,उन पवित्र घाटियों में मेरा नाम अपनी जबान पर न लाना, क्योंकि गड़रिये अपने रेवड़ की रक्षा के लिए संक्रामक रोग से पीड़ित भेड़ को त्याग देता है। अगर मेरे बारे में तुमसे कोई पूछे भी तो कह देना कि रैहाना मर गई। इसके सिवा और कुछ मत कहना।"

उसने अपने बच्चे के छोटे-छोटे हाथ अपने हाथ में ले लिये और उन्हें दुःख-भरा चुंबन दिया। उसके बाद उसने एक आह भरी और कहने लगी, "लोग मेरे बच्चे को अपमान और घृणा से देखेंगे और कहेंगे, 'यह पाप का फल है! यह रैहाना वेश्या का बेटा है! यह बेहयाई की उपज है! यहहरामी है!' ऐसे बहुत से लोग हैं, जो इसके बारे में यही कुछ कहेंगे, इसलिए कि वे अंधे हैं, उन्हें दिखाई नहीं देता। वे मूर्ख हैं, जो नहीं जानते कि इसकी मां ने अपनी व्यथा और आंसुओंसे इसके बचपन को नहलाया है अपने दुर्भाग्य और दुर्दैव से इसके जीवन का प्रायश्चित्त कर दिया है।

"मैं मर जाऊंगी और गली के बच्चों में इसे अनाथ बनाकर छोड़ जाऊंगी। यह इस निर्दय जीवन में अकेला रह जायेगा। मैं इसके लिए कुछ न छोड़ूंगी, सिवाय भयावनी स्मृति के, जो इसे लज्जित करेगी, अगर यह डरपोक निकला,और इसका खून खौलायेगी,अगर यह बहादुर और न्यायी साबित हुआ।

"अगर जमाने ने इसका साथ दिया और यह शक्तिशाली युवक बन गया तो भगवान उस पुरुष के विरुद्ध इसकी सहायता करेगा, जिसने इसे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और इसकी मां को संसार में अछूतों से भी बदतर बना दिया, और यदि यह मर गया, जीवनके जाल से इसने छुटकारा पा लिया, तो यह उस लोक में मुझे अपनी प्रतीक्षा करते हुए पायगा, जहां चारों ओर प्रकाश-ही-प्रकाश और सुख-ही-सुख है।"

मैंने अपने हृदय के भावों को प्रकट करते हुए कहा, "रैहाना, माना कि तुम कब्रिस्तान में बैठी हो, मगर फिर भी तुम कोढ़ी नहीं हो; माना कि जमाने ने तुम्हें नीचों के हवाले कर दिया है, फिर भी तुम नीच नहीं हो। शरीर की गंदगी आत्मा की पवित्रता को नहीं छू सकती, जिस प्रकार बर्फ की पर्तें जिंदा बीजों को नहीं मार सकतीं। यह जीवन है क्या? महज सुख-दुःख का खलिहान है, जिसे दाना निकालने से पहले इंसान की उम्र कुचल-कुचलकर रख देती है, परंतु अफसोस गेहूं की उन बालियों पर है, जो खलिहान से अलग पड़ी हैं! चींटियां उन्हें उठाकर ले जाती हैं, पंछी चुग लेते हैं और वे किसान के घरों में नहीं पहुंच पातीं।

"तुम अत्याचार पीड़ित हो, रैहाना! पर अत्याचारी नहीं हो। अत्याचारी वह नीच है, जो पैसे की रू से चाहे कितना ही ऊंचा क्यों न हो, पर आत्मा की निगाह से अत्यंत पतित है। तुम अत्याचार-पीड़ित हो, परंतु मनुष्य के लिए अत्याचार-पीड़ित होना अत्याचारी होने से बेहतर है। भौतिक दुर्बलताओं का शिकार होना ऐसा शक्तिशाली होने से बेहतर है, जो अपने हाथों से जीवन के फूलों को मसल देता है, अपनी घृणित इच्छाओं से सुंदर भावनाओं को मिट्टी में मिला देता है।

"रैहाना! आत्मा एक सुनहरी कड़ी है, जो ईश्वरीय जंजीर से टूटकर गिर पड़ी है। इस कड़ी को दहकती हुई आग की ज्वालाएं लपक लेती हैं और इसका रूप बदल देती हैं। इसका सारा सौंदर्य नष्ट कर देती हैं, लेकिन इस कड़ी के सोने को किसी दूसरी धातु में नहीं बदलतीं; बल्कि इसकी चमक में और बढ़ावा कर देती हैं। पर खेद उस सूखी लकड़ी पर है, जिसे आग की ज्वालाएं जलाकर राख कर देती हैं और हवा उसकी राख को जंगल में उड़ा देती है।

"रैहाना! निःसंदेह तुम वह फूल हो, जो इंसानी शरीर में छिपे हुए जानवर के पांवों तले रौंदा गया है; तुम्हें फौलादी जूतों ने बेरहमी से कुचल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

डाला है, परंतु डर की कोई बात नहीं। तुम्हारी सुगंध, जो विधवाओं के शोक-विलाप, अनाथों की पुकार और गरीबों की आह के साथ आकाश की ओर जा रही है, दया और न्याय का झरना है। रैहाना, सब्र करो कि तुम रौंदा हुआ फूल हो, रौंदनेवाला पांव नहीं।"

मैं बोल रहा था और वह सुन रही थी। मैंने उसे जो तसल्ली दी थी, जो ढांढस बंधाया था, उससे उसका पीला चेहरा चमक उठा, जिस प्रकार डूबनेवाले सूरज की सुंदर किरणें बादलों को चमका देती हैं। उसने मुझे अपने पलंग के पास बैठ जाने का इशारा किया। मैं बैठ गया। मेरी निगाह उसके चेहरे पर जमी हुई थी, जो उसकी दुःखी आत्मा के रहस्यों को प्रकट कर रहा था; उस व्यक्ति के मुंह पर केंद्रित थी, जिसे मालूम था कि उसकी मृत्यु निकट है; उस नौजवान स्त्री के चेहरे देख रही थीं, जिसे अपने फटे-पुराने बिस्तर के चारों ओर मौत के भयानक पांवों की चाप सुनाई दे रही थी; उस ठुकराई हुई औरत के मुंह को ताक रही थी जो कल तक लेबनान की सुहावनी घाटियों में शक्ति और जीवन से भरी-पूरी जिंदगी बसर कर रही थी, लेकिन आज बेजान पड़ी जीवन के बंधनों से मुक्त होने की प्रतीक्षा कर रही थी।

थोड़ी देर की स्तब्धता के बाद उसने अपनी बची-खुची शक्ति जमा की और वह इस तरह बोलने लगी कि आंसू उसके शब्दों के साथ-साथ निकलने लगे और उसकी शक्ति उसकी सांसों के साथ घुटने लगी:

"हां, मैं अत्याचार-पीड़ित हूं; उस हिंस्र पशु का शिकार हूं, जो आदमी में छिपा हुआ है; मैं पांव तले रौंदा हुआ फूल हूं। मैं झरने के किनारे बैठी थी कि एक अजनबी आदमी घोड़े पर सवार वहां आ गया। उसने मुझसे प्यार-भरी बातें कीं और बताया कि मैं सुंदर हूं और वह मुझसे प्रेम करता है और जीवन-भर प्रेम करता रहेगा। उसने कहा कि जंगल जंगलियों से भरा पड़ा है और घाटियां पंछियों और गीदड़ों का घर हैं। उसके बाद वह मुझ पर झुका और अपनी छाती से चिपटाकर उसने मुझे प्यार किया। मैं उस वक्त तक चुंबन के आनंद को नहीं जानती थी, इसलिए कि मैं एक ठुकराई हुई अनाथ लड़की थी। उसने मुझे घोड़े

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की पीठ पर अपने पीछे बिठा लिया और एक सुंदर, पर तनहा मकान में ले गया। वहां मैं उसके साथ रहने लगी। वह मेरे लिए भांति-भांति के तोहफे लाता—रेशमी कपड़े, बढ़िया सुगंधें, खाने की स्वादिष्ट चीजें और कीमती शराबें। उसने यह सबकुछ किया—मुस्कराते हुए अपनी वासनाओं की गंदगी और उद्देश्यों की पशुता को शब्दों की मधुरता और आकर्षक इशारों में छिपाते हुए!—परंतु जब मैंने अपने शरीर से उसकी वासनाओं का पेट भर दिया, अपनी आत्मा को अपमान और कलंक से बोझिल बना दिया तो वह मेरे प्रति लापरवाह हो गया। मेरे पेट में एक भड़कती हुई आग की जीवित लपट छोड़कर, जो मेरे कलेजे से खुराक लेकर देखते-देखते बढ़ने लगी, वह न मालूम कहां भाग गया। इस प्रकार मैं इस अंधेरे गढ़े में आ फंसी, जहां चारों ओर आक्रोश और विलाप का धुआं और दुःख और क्लेश की कड़ुवाहट है। इस तरह मेरी जिंदगी दो हिस्सों में बंट गई—एक कमजोर और दर्दनाक हिस्सा और दूसरा छोटा हिस्सा, जो अनंत वायु-मंडल उड जाने के लिए रात की स्तब्धता में चिल्लाता था।

"वह निर्दयी मुझे और मेरे दूध-पीते बच्चे को उस सुनसान मकान में छोड़कर चलता बना और हम दोनों भूख, सर्दी और अकेलेपन के कष्ट सहन करने लगे। आहों और विलापों के सिवाय हमारा न कोई मददगार था और न डर और धड़कनों के सिवाय कोई हमसे बातचीत करनेवाला ही था।

"अंत में उसके दोस्तों को मेरी दुर्दशा का पता चला तो वे मेरे पास आये, पर उनमें से हरेक अपनी दौलत से मेरी इज्जत खरीदना चाहता था। मेरा शरीर लेकर उसके बदले में मुझे रोटी देना चाहता था।

"आह! कितनी बार मैंने चाहा कि गला घोंटकर अपना काम तमाम कर दूं, पर न कर सकी, क्योंकि मैं अकेली नहीं थी। अब मेरे जीवन में मेरा बच्चा भी शरीक था, जिसे भगवान ने परलोक के आनंद-भवनों से इस संसार में धकेल दिया था—बिलकुल उसी तरह, जैसे मुझे पवित्र जीवन से दूर करके इस नरक की गहराइयों में फेंक दिया था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"मगर अब वह घड़ी पास आ गई है, जिसका इंतजार मैं कई दिनों से कर रही थी। मेरे जीवन का स्वामी, वह मृत्युदूत, लंबे वियोग के बाद मुझे लेने आया है, ताकि मैं उसके नर्म और मुलायम बिस्तर पर आराम करूं।"

एक गहरी खामोशी के बाद, जो उड़नेवाली आत्माओं के स्पर्श के समान थी, उसने अपनी आंखें खोलीं, जिन पर मृत्यु की छाया पड़ी थी, और वह धीरे-धीरे कहने लगी :

"हे अदृश्य न्यायदेवता, तू जो इन भयानक घटनाओं के पीछे छिपा हुआ है, तू ही मेरी यान्त्रिक आत्मा की पुकार और मंदगति हृदय की आवाज सुननेवाला है। तुझसे, केवल तुझी से, मैं प्रार्थना करती हूं कि तू मुझ पर दया कर, अपने दायें हाथ से मेरे बच्चे का हाथ पकड़ और बायें हाथ से मेरी आत्मा का उपहार स्वीकार कर!"

उसकी शक्ति समाप्त होने लगी। उसमें कमजोरी और बढ़ गई। उसने दुःख और व्यथा से भरी निगाह अपने बच्चे पर डाली और उसकी आंखें धीरे-धीरे बंद होने लगीं। कड़े करुण स्वर में, जो स्तब्धता के अधिक निकट था, उसने कहा :

"ए आकाश में रहनेवाले! तेरा नाम हमेशा पवित्र रहे! तेरा भेजा हुआ मृत्युदूत आ गया है। तेरी इच्छा जिस प्रकार आकाश में सर्वोपरि है, उसी प्रकार वह पृथ्वी पर भी रहे।...हे भगवान!...हमारे अपराधों को...क्षमा करना!"...

उसकी आवाज बंद हो गई, पर होंठ थोड़ी देर तक हिलते रहे। फिर होठों के बंद होने के साथ उसके शरीर की सारी क्रियाएं खत्म हो गईं। उसके बाद उसके शरीर में कंपकंपी पैदा हुई और मुंह से हलकी-सी आह निकली। चेहरे पर पीलापन छा गया और आत्मा उड़ गई; परंतु उसकी आंखें एक काल्पनिक वस्तु पर जमी रहीं।

० ० ०

सुबह को रैहाना की लाश लकड़ी के एक ताबूत में रखी गई और फकीरों के कंधों पर शहर से दूर एक मैदान में पहुंचाकर दफना दी गई। पादरी ने उसके जनाजे की नमाज पढ़ने से इंकार कर दिया और लोगों ने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसकी लाश को उस कब्रिस्तान में दफनाने की इजाजत न दी, जहां सलीब[1] कब्रों की रक्षा करता है। उस सुदूर मैदान में उसके जनाजे के साथ कोई नहीं गया, सिवा उसके बेटे और एक नौजवान के जिसे संसार की विपत्तियों ने सहानुभूति का पाठ पढ़ाया था। ○

१. यीशु का क्रास.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

३

नई दुलहिन

दूल्हा-दुलहिन मन्दिर से निकले। उनके पीछे-पीछे उनको बधाइयाँ देनेवाले प्रसन्न और आनन्दित लोग थे और आगे-आगे बड़ी-बड़ी मोम-बत्तियां और फानूस थे। नवयुवक खुशी के गीत गा रहे थे और कुमारिकाएं मंगल-गान गा रही थीं।

यह जुलूस दूल्हे के मकान पर पहुंचा, जो कीमती गलीचों और भड़कीले सामान से सजा हुआ और सुगंधों से महक रहा था। दूल्हा-दुलहिन एक ऊंचे तख्त पर बैठ गए और मेहमान रेशमी सोफों और मखमली कुरसियों पर विराजमान हो गए, यहां तक कि सारा बड़ा हॉल इंसानों से भर गया।

नौकर शराब की सुराहियां ले आये और शराब के दौर चलने लगे। प्यालों की झंकार और आनंद के स्वर मस्ती की दुनिया पैदा करने लगे। इसके बाद गानेवाले आ गये और अपने जादू-भरे संगीत से लोगों को मुग्ध करने लगे। उनके मीठे सुरों और सारंगी की रसीली आवाज से हृदयों में खुशी की लहरें उछलने लगीं। तबले की थाप और श्रोताओं की दाद अलग ही बहार दिखाने लगी।

इसके बाद नाचनेवाली औरतें उठीं और अपने नृत्य और संगीत से सुननेवालों को मस्त करने लगीं। उनके लचकदार शरीर इस तरह हिल रहे थे, जिस तरह सुगंधित वायु के झोंकों से पेड़ों की नरम शाखाएं झूमती हैं। उनके कपड़े इस तरह उड़ रहे थे, मानो सफेद बादल चांद की किरणों से खेल रहे हों। आंखें उनको घूर रही थीं, माथे उनको सलाम कर रहे थे, युवकों की आत्माएं उनको गले लगा रही थीं और बूढ़े उनके रूप और सौंदर्य से आनंदित हो रहे थे।

शराब का दौर बढ़ गया और मेहमान अपनी इच्छाओं को शराब में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

डुबोने लगे। गति और हलचल बढ़ गई, आवाजें ऊंची हो गईं। चारों ओर मनमानी होने लगी, मस्तिष्क विचलित होने लगे। इंद्रियों में गर्मी पैदा हो गई। दिल बेचैन हो उठे और घर-का-घर तार टूटी हुई सारंगी की तरह हो गया, जिसे किसी पागल के हाथ में दे दिया गया हो और वह जोर से मिज़राब मारकर उससे संगीत पैदा करने की कोशिश कर रहा हो।

यहां एक नौजवान है, जो अपनी प्रेयसी के प्रेम में डूबा हुआ बैठा है। वहीं एक नवयुवक सौंदर्य और प्रीति की कहानी सुना रहा है। एक तरफ एक बूढ़ा जाम-पर-जाम चढ़ाकर गानेवाली औरतों से गजल की फरमाइश कर रहा है, जिससे उसकी जवानी की याद ताजी हो जाय। उस छज्ज में एक औरत बैठी उस शख्स को गम्जे दिखा रही है, जो उसकी तरफ प्रणय की दृष्टि से घूर रहा है। उस कोने में एक बड़ी उम्र की महिला बैठी है, जिसके सिर के बाल सफेद हो रहे हैं। वह मेहमान लड़कियों में से अपने लड़के के लिए किसी दुलहिन का चुनाव कर रही है। उस खिड़की के पास एक विवाहित स्त्री बैठी है, जिसे उसके पति के शराब के नशे में चूर हो जाने से अपने परिचितों से बातचीत करने की फुरसत मिल गई है। गर्ज कि सारे-के-सारे लोग शराब और गजल के सागर में डूबे हुए थे और खुशी और मस्ती के आलम में दुनिया और उसकी सारी चीजों से गाफिल, बीते हुए दुःखों और आनेवाली चिंताओं से लापरवाह, वर्तमान के आनंद में खोये हुए थे।

यह सिलसिला जारी था और सुंदर नववधू इस दृश्य को अपनी बड़ी-बड़ी आंखों से इस तरह देख रही थी, जिस तरह निराश कैदी कैदखाने की काली दीवारों पर नजर डालता है। उसकी निगाहें बार-बार हॉल के एक कोने पर पड़ रही थीं, जिसमें बीस साल की उम्र वाला एक नौजवान आनंदित मेहमानों से इस तरह अलहदा बैठा था, जैसे कोई घायल पंछी अपने झुंड से जुदा हो गया हो। उसने अपना हाथ अपनी छाती पर इस तरह रखा था, मानो उसका दिल बाहर निकलना चाहता हो और उसे उस हॉल का वायुमंडल किसी अप्रिय वस्तु से घिरा हुआ नजर आ रहा था। ऐसा मालूम होता था कि उसकी आत्मा उसके शरीर से अलग हो चुकी है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और अंधेरे के विस्तार में उड़ रही है।

आधी रात बीत गई और मजलिस की खुशी की किलकारियां बढ़ती गईं, यहां तक कि गड़बड़ मच गई। सब लोग शराब के नशे में चूर हो गए। उनकी जुबानें लड़खड़ाने लगीं, बदसूरत दूल्हा अपनी जगह से उठकर मेहमानों के बीच में फिरने लगा। वह भी नशे के चंगुल में फंस गया था।

इसी क्षण दुलहिन ने एक लड़की को इशारे से बुलाया और जब वह करीब आकर उसके पास बैठ गई तो दुलहिन ने इधर-उधर निगाह दौड़ाई मानो वह उस लड़की से कोई रहस्य की बात कहना चाहती हो। इसके बाद उसने कांपती हुई आवाज में लड़की से कानाफूसी की, "ऐ मेरी बहन ! मैं तुम्हें उस प्रीति की कसम दिलाती हूं, जो मेरे और तुम्हारे दरमियान बचपन से है। मैं तुम्हें उस चीज की कसम दिलाती हूं, जो तुम्हें इस दुनिया में सबसे प्यारी है। मैं तुम्हें तुम्हारे हृदय के रहस्यों की सौगंध दिलाती हूं, मैं तुम्हें उस प्रेम की कसम दिलाती हूं, जिसमें हमारी आत्मा बंधी हुई हैं और किरणें पैदा कर रही हैं। मैं तुम्हें तुम्हारे दिल की खुशी और अपने दिल के दर्द की कसम दिलाकर प्रार्थना करती हूं कि तुम अभी सलीम के पास जाओ और उससे कहो कि वह छुपकर बाग में जाये और चिनार के पेड़ के नीचे मेरी राह देखे। ऐ सोसन ! मेरी ओर से तुम उससे अनुरोध करो और किसी तरह से मेरी बात उससे मनवा लो। उसे बीते हुए दिनों की याद दिलाओ, उसे प्रीति की कसम दिलाओ और कहो कि वह बेचारी रो-रो कर अंधी हुई जाती है। वह चाहती है कि अनंत अंधेरे में समा जाने से पहले वह अपना हृदय खोलकर तुम्हारे सामने रख दे। और कहो कि वह अभागिन नरक की आग में जलने से पहले तुम्हारी आंखों की रोशनी बढ़ाना चाहती है और कहो कि वह अपराधी है और चाहती है कि अपने दोषों को स्वीकार करे और तुमसे क्षमा मांगे। जल्दी करो मेरी बहन ! और मेरी तरफ से उसके सामने रो-धोकर उससे प्रार्थना करो। इन जंगली सूअरों की निगाहों से न डरो, क्योंकि ये सब शराब के नशे में चूर हैं और इनके कान और आंखें बंद हो चुकी हैं।"

सोसन दुलहिन के पास से उठी और सलीम के नजदीक जा बैठी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वह अकेला बैठा था। वह उसके कान में प्रेम से बातें करने लगी, जो उसके चेहरे से टपका पड़ता था। सलीम सिर झुकाये उसकी बातें सुनता रहा। जब सोसन की बात खत्म हुई तब सलीम ने उसकी ओर दुःखभरी निगाह से देखा और उत्तर दिया, "बहुत अच्छा, मैं चिनार के पेड़ के नीचे उसका इंतजार करूंगा।"

इतना कहकर वह अपनी जगह से उठा और बाग की ओर निकल गया। कुछ मिनट के बाद दुलहिन भी उठी और मेहमानों की आंख बचा कर अंधेरे के परदे में बाहर निकल गई। वह मुड़-मुड़कर पीछे देखती जाती थी और उस हिरनी की तरह भागती जा रही थी, जो भेड़ियों के झुंड से बच निकली हो। आखिर वह चिनार के पेड़ों के नीचे पहुंच गई, जहां वह नवयुवक खड़ा था। जब उसने अपने आपको उसके पास पाया तो वह उससे लिपट गई और उसकी आंखों में आंखें डालकर आंसू बहाती हुई दुख भरे शब्दों में बोली, "सुनो, ऐ मेरे प्यारे, ध्यान से सुनो! मैं अपनी मूर्खता और जल्दबाजी पर बहुत लज्जित हूं। ऐ सलीम! शर्म ने मेरे दिल को कुचल डाला है। मैं तुमसे मुहब्बत करती हूं, तुम्हारे सिवा किसी से मुहब्बत नहीं करती और आखिरी दम तक तुम्हारे अलावा किसी से मुहब्बत नहीं करूंगी। लोगों ने मुझसे कहा कि तुमने मुझे भुला दिया, मुझे छोड़ दिया। किसी दूसरी लड़की की बात से मेरे दिल को कड़वा बना दिया। उन्होंने मेरा दिल जला दिया और अपनी झूठी बातों से मुझे परेशान कर दिया। उन्होंने मुझे उस लड़की के बारे में सबकुछ बता दिया, जिसके प्रेम में पड़कर तुमने मुझसे नफरत की और मुझे छोड़ दिया। उस डायन ने मुझपर जुल्म किया और मेरी मुहब्बत को तबाह कर दिया! और तब मैं एक आदमी को अपना पति बनाने पर राजी हुई। लेकिन ऐ सलीम! मेरा पति तुम्हारे सिवा कोई नहीं, और अब—और अब—मेरी आंखों से परदे हट गये हैं। इसलिए तुम्हारे पास आई हूं कि अपने आपको तुम्हारे पहलू में डाल दूं। दुनिया की कोई ताकत उस आदमी के पहलू में नहीं ले जा सकती, जिसके कब्जे में मुझे जबरन दे दिया गया है। मैंने उस आदमी को, जिसे मैंने झूठमूठ का पति बनाया, उन फूलों को जो मुझे मौलवी ने दे दिये, उस शरीयत को, जिसे मैंने रूढ़ि के बन्धनों से लाचार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होकर मंजूर किया और दूसरी सभी चीजों को उसी मकान में छोड़ दिया है, जो शराबियों से भरा हुआ है। मैं तुम्हारे पास आई हूं, ताकि तुम्हारे साथ किसी दूसरे देश में चली जाऊं। हम दुनिया के किसी और हिस्से में चलें, भूतों की बस्ती में चलें, मौत के कब्जे में चलें। आओ सलीम! जल्दी करो, रात के अंधेरे पर्दे में हम इस मकान से निकल जायं। समुद्र के किनारे पर जायं और जहाज पर सवार होकर दूर किसी ऊजड़ और अनजान शहर को चले जायं। आओ, अभी चलें। सुबह होने से पहले ही हम दुश्मनों के चंगुल से निकल भागें। देखो, देखो, ये हैं मेरी सोने की चूड़ियां, ये हैं हार, ये हैं कीमती अगूठियां और ये हैं जवाहरात! ये सब चीजें हमारी आगे की जिंदगी के लिए काफी हैं और हम अमीरों की तरह रह सकेंगे।...अरे! तुम बोलते क्यों नहीं, सलीम? मेरी तरफ देखते क्यों नहीं? मुझे चूमते क्यों नहीं? क्या तुम मेरा रोना-धोना और मेरे दिल का विलाप नहीं सुनते? क्या तुम यकीन नहीं करते कि मैं अपने दूल्हे और अपने मां-बाप को छोड़कर नई दुलहिन की पोशाक में ही तुम्हारे साथ भाग जाने के लिए यहां आई हूं? बोलो-बोलो, ये क्षण हीरों के कणों से भी ज्यादा अनमोल और बादशाहों के ताजों से भी ज्यादा अहम हैं।"

दुलहिन बातें कर रही थी। उसकी आवाज में एक ऐसा गीत भरा हुआ था, जो जिंदगी की बुराइयों से ज्यादा क्लेश-भरा, मौत की फरियाद से ज्यादा दर्दनाक और सागर की लहरों के ज्वार से ज्यादा गहरा था। यह गीत उसकी आत्मा को आशा और निराशा, सुख और दुःख, खुशी और हैरानी के बीच झुला रहा था।

नौजवान उसकी बातें सुन रहा था। उसके मन में प्रीति और सज्जनता के बीच कशमकश चल रही थी—वह प्रीति, जो कठिनाइयों को आसान बना देती है और अंधेरे को रोशनी में बदल देती है, वह सज्जनता, जो मनुष्य के सामने आकर उसे उसकी इच्छाओं से रोकती है; वह प्रीति, जिसे

---

१. धर्मशास्त्र।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भगवान ने दिल में उतारा है और वह सज्जनता, जो दिमाग से संबंध रखती है।

कुछ देर तक वह खामोशी के साथ उन अंधेरे दिनों की शक्ल बनाता रहा, जिनमें राष्ट्र उठने और गिरने के दरमियान कशमकश करते हैं। फिर उसने सिर उठाया। उसकी वासनाओं पर उसकी सज्जनता विजय पा चुकी थी। उसने उस डरपोक और बेचैन लड़की की ओर देखा और कहा, "ऐ औरत ! जा, अपने पति के पहलू में जा, कुदरत को ऐसा ही मंजूर है। जल्दी से अपनी खुशी की दुनिया में जा, इसके पहले कि दुश्मनों की नजरें तुम्हें देख पायें और लोग कहें कि दुलहिन ने विवाह की पहली रात को ही बेईमानी की, जिस तरह उसके मुरब्बी ने विरह के दिनों में उससे बेवफाई दिखाई।"

ये शब्द सुनकर दुलहिन कांप उठी और इस तरह बेचैन हो गई, जिस तरह कुम्हलाया हुआ फूल हवा के झोंकों से परेशान हो जाता है। फिर दर्दभरी आवाज से बोली, "जबतक मुझमें आखिरी सांस बाकी है, मैं उस मकान में वापस नहीं जाऊंगी, जहां से मैं हमेशा के लिए निकल आई हूं। मैंने उसे और वहां की हर चीज को इस तरह छोड़ दिया है, जिस तरह कैदी कैदखाने से भाग खड़ा होता है। तुम मुझे अपने-आप से दूर न हटाओ और यह न कहो कि मैं बेईमान हूं,क्योंकि वह मुहब्बत, जिसने मेरी आत्मा को तुम्हारी आत्मा के साथ जोड़ दिया है, उस मौलवी के हाथ से बहुत ज्यादा मजबूत है, जिसने मेरा जिस्म दूल्हे के कब्जे में कर दिया। आओ, मुझे अपनी उन बाहों को अपने गले में डालने दो, जिन्हें कोई ताकत छुड़ा न सके। और आओ, हम इस तरह मिल जायं कि हमें मौत भी एक-दूसरे से जुदा न कर सके।"

नौजवान ने बड़े जोर के साथ अपने गले को उसकी बाहों से छुड़ाकर कहा, "मुझसे दूर हो जा, ऐ औरत ! मैंने तुम्हें छोड़ दिया...छोड़ दिया। मैंने तुमसे नफरत की, और किसी दूसरी से मुहब्बत पैदा कर ली। लोग गलत नहीं कहते। क्या तुम्हें सुनाई देता है, मैं क्या कह रहा हूं ? मैंने तुम्हें इस हद तक छोड़ दिया कि मैं तुम्हें भूल गया, मैंने इस हद तक नफरत की कि तुम्हारी शक्ल से बेजार हो गया। मुझसे दूर हट जा और मुझे अपनी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राह जाने दे। तू अपने पति के पास वापस चली जा और उसकी वफादार बीबी बन।"

दुलहिन ने चिल्लाकर कहा, "नहीं—नहीं! मैं तुम्हारी बातों का यकीन नहीं कर सकती। तुम मुझसे मुहब्बत करते थे। मैंने तुम्हारी आंखों में मुहब्बत देखी थी और जब कभी तुम्हारे जिस्म को छुआ था, तो मानो मुहब्बत को छुआ था। तुम मुझसे मुहब्बत करते हो, मुहब्बत करते हो, मुहब्बत करते हो, जिस तरह मैं तुमसे मुहब्बत करती हूं। मैं इस जगह से तुम्हारे बिना नहीं हटूंगी, और उस मकान में हर्गिज नहीं जाऊंगी। मेरा इरादा पक्का है और मैं तुम्हारे पास इसलिए आई हूं कि किसी दूसरे मुल्क में चली जाऊं। इसलिए चलो मेरे आगे। अगर नहीं तो हाथ उठाओ और मेरा खून कर डालो।"

नौजवान ने पहले से ऊंची आवाज में कहा, "ऐ औरत! मुझे छोड़ दे, वरना मैं जोर-जोर से चिल्लाकर उन मेहमानों को यहां जमा कर लूंगा जो तुम्हारी शादी की खुशी मनाने के लिए आये हुए हैं। फिर क्या होगा! वे तुम्हारे इस गंदे बर्ताव को देखकर तुम्हें बुरा भला कहेंगे। फिर इस बात को भी तो सोचो कि वह औरत भी तुम्हारे सामने खड़ी होगी और तुम्हारी हार और अपनी जीत पर मुंह बनाकर मुस्करायेगी।"

यह कहकर नौजवान ने उसकी भुजाओं को पकड़ लिया ताकि अपने आपको उनसे छुड़ाये। दुलहिन के चेहरे का रंग बदल गया। उसकी आंखें लाल हो गईं, उसकी मुहब्बत और बेबसी गुस्से और बेरहमी में बदल गई और उसने चिल्लाकर कहा, "देखती हूं वह कौन है, जो मेरे बाद तुम्हारी मुहब्बत से फायदा उठाती है और मेरे दिल के सिवा कौन-सा दिल है, जो तुम्हारे होंठों के चुम्बन से सुखी होता है!"

यह कहकर उसने अपने कपड़ों में से एक पानीदार खंजर निकाला और बिजली की-सी तेजी के साथ उस नौजवान की छाती में भोंक दिया। वह इस तरह जमीन पर गिरा, जैसे आंधी से टूटी हुई पेड़ की डाली। दुलहिन उसके पास हाथ में खंजर लिये खड़ी थी। उस खंजर से खून टपक रहा था। नौजवान ने आंखें खोलीं, जो मौत की छाया में पहुंच रही थीं। उसके होंठ हिलने लगे और उनमें से ये शब्द धीमी आवाज में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निकले, "ऐ मेरी जान ! अब मेरे पास आओ ! मेरे करीब आओ और मुझे छोड़कर न जाओ। जिन्दगी मौत से कमजोर है और मौत मुहब्बत से कमजोर है। सुनो, अपने बारातियों के खुशी के ठहाके सुनो ! शराब के प्यालों की झनकार सुनो। तुमने मुझे ठहाकों और इन झनकारों की बेरहमी से निजात दिलाई। लाओ, मैं उस हाथ को चूमूं, जिसने मेरे बंधनों को तोड़ दिया। तुम मेरे होंठों को चूमो, जिन्होंने तुमसे झूठ कहा और मेरे दिल के राज को छिपाये रखा। मेरी आंखों को अपनी उंगलियों से बंद कर दो, जो मेरे खून में सनी हुई हैं और जब मेरी रूह जिस्म के पिंजड़े में से उड़ जाय तो खंजर को मेरी बगल में रख देना और उन लोगों से कहना कि इस आदमी ने मायूसी और हसद की वजह से खुदकुशी कर ली है। मैं तुम्हारा ही आशिक था और तुम्हारा सिवा किसी से मुहब्बत नहीं करता था। लेकिन मेरे दिल की सज्जनता और नेकी ने मुझे इजाजत नहीं दी कि तुम्हारे साथ शादी की रात को भाग निकलूं। ऐ मेरी जान ! इससे पहले कि लोग मेरी लाश को देखें, मुझे चुम्बन दो, मुझे चूमो, मुझे चूमो !"

इतना कहकर उसने अपने बदनाम दिल पर हाथ रखा और उसकी गरदन मुड़ गई। उसकी रूह उड़ गई।

दुलहिन ने अपना सिर उठाया, मकान की तरफ निगाह दौड़ाई और चीख-पुकार करने लगी, "आओ, लोगो, आओ, और देखो ! यह है दूल्हा और यह है दुलहिन ! दौड़ो, ताकि मैं तुम्हें नरम-नरम बिस्तर दिखाऊं। जो सो रहा है, उसे जगाओ और जो बेहोश है, उसे होश में लाओ। और सब-के-सब आओ, ताकि मैं तुम्हें मुहब्बत, जिंदगी और मौत का राज खोल कर दिखाऊं।"

दुलहिन की पुकार उस घर के कोने-कोने में पहुंच गई और महफिल के खुशी से झूमते लोगों के कानों में गूंज उठी। उनकी रूहें कांप उठीं। यह सोचकर वे एक पल रुक गये कि शायद उनके कान उन्हें धोखा दे रहे हैं। लेकिन उसके बाद वे मकान के दरवाजों से निकल-निकल कर जल्दी से भाग चले। वे इधर-उधर तलाश करनेवाली नजरों से देखने लगे। शीघ्र ही उनकी निगाहें लाश और दुलहिन पर पड़ीं। वह नजारा देखकर वे डर के मारे पीछे की तरफ भागे, क्योंकि उस खूनी नजारे को देखने की हिम्मत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किसी में भी नहीं थी, जहां मुर्दे की छाती से खून बह रहा था और दुलहिन के हाथ में खंजर चमक रहा था। उनकी जबानें बंद हो गईं और जिस्मों के अंदर रूहें जम गईं।

दुलहिन ने उनकी तरफ देखा। उसका चेहरा दुःख और डर से स्याह हो रहा था। उसने चिल्लाकर कहा, "आगे आओ, ऐ डरपोको! मौत के खयाल से मत डरो! कांपो मत, और इस खंजर से मत घबराओ, क्योंकि यह पाक हथियार है, जो तुम्हारे गंदे जिस्म को और अंधेरे दिलों को नहीं छू सकता। देखो इस नौजवान को, जिसने शादी की पोशाक पहन ली है। यह मेरा मुरब्बी है और इसको मैंने इसलिए मार डाला है कि यह मेरा मुरब्बी है। यह दूल्हा है और मैं दुलहिन हूं। हम राह ढूंढ़ते थे, लेकिन नाकामयाब रहे, क्योंकि तुम्हारी मूढ़ताओं और बंधनों ने हमारे लिए जिंदगी की राहें बंद कर दी थीं। आओ, कायर और कमजोर इन्सानो! देखो, ताकि तुम्हें हमारे चेहरों से खुदा का नूर नजर आये। सुनो, ताकि हमारे दिल से तुम्हारे कानों में फरियाद पहुंचे। वह डायन औरत कहां है, जिसने मेरे मुरब्बी के बारे में मुझसे यह कहा कि वह उसकी मुहब्बत में पड़ा है, उसने मुझे छोड़ दिया है और मुझे भूल चुका है। जब मौलवी ने अपना हाथ मेरे और मंगेतर के सिर पर उठाया होगा तब उस बदमाश औरत को यह शक हो गया होगा कि उसकी फतह हुई। लेकिन वह जहन्नुमी नागिन है कहां? मैं उसे दावत देती हूं कि वह करीब आये और देखे कि उसने तुम लोगों को मेरे मुरब्बी की शादी की खुशियां मनाने के लिए किस तरह इकट्ठा किया है—हां, मेरे मुरब्बी की शादी, और उस आदमी की शादी नहीं, जिसे मैंने अपना पति बनाया है।

"तुम मेरी बातों को नहीं समझते, लेकिन तुम अपने बाल-बच्चों को बताओगे कि एक औरत ने अपने मुरब्बी को अपने ब्याह की रात कत्ल कर दिया। तुम मेरा जिक्र करोगे और अपने कसूरवार मन से मुझे बुरा-भला कहोगे, लेकिन तुम्हारे पोते मुझे ही बधाइयां देंगे।

"और ऐ मूर्ख, तुमने झूठ, ढोंग और फरेब से मुझे अपनी बीवी बनाना चाहा। तुम उस जाति के नाश को देखो, जो अत्याचारों में रोशनी ढूंढ़ती है; जो पत्थर से पानी निकालने की उम्मीद रखती है और रेगिस्तान में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फूल उगाने की इच्छुक है। तुम उन बस्तियों को देखो, जो अपने आपको इस तरह मूर्खता के हवाले कर चुकी हैं, जिस तरह एक अंधा अपना हाथ दूसरे अंधे के हाथ में दे देता है। तुम उस ताकत के पुतले हो, जो हारों और चूड़ियों के लिए गर्दनें और बाहें काटती हैं। मैं तुम्हें माफ करती हूं, क्योंकि खुश रूहें इस दुनिया से कूच करने से पहले सबके गुनाह माफ कर दिया करती हैं।"

इतना कहकर दुलहिन ने खंजर ऊंचा किया और हंसते हुए उसे अपनी छाती में भोंक लिया। ○

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

४

दोस्त की वापसी

अभी रात नहीं हुई थी कि दुश्मन हार खा गया। उसकी पीठ पर तलवार और भाले के जख्मों के निशान थे। विजय पानेवाली सेना गर्व का झंडा लहराती हुई वादी की पथरीली जमीन पर शोर मचाते हुए घोड़ों की टापों की आवाज के साथ जीत और खुशी के गीत गाती हुई वापस लौटी।

दूर क्षितिज पर चांद निकल रहा था और तब वह लश्कर एक टीले पर चढ़ा। वह टीला ऐसे दिखाई देने लगा जैसे वह कौम की उठती हुई आवाजों के साथ आसमान पर चढ़ने लगा हो। उन टीलों के दरमियान धान के खेत ऐसे नजर आने लगे, मानो वे लेबनान की छाती पर बीती हुई पीढ़ियों की लगाई हुई शराफत की मुहरें हों।

चांद की किरणें लश्कर के चमकते हुए हथियारों पर पड़ रही थीं। दूर-दूर के पहाड़ उसके नारों का जवाब दे रहे थे और वह चला जा रहा था। जब वह पहाड़ की चोटी पर पहुंचा तो रेतीली घाटियों से एक घोड़े के हिनहिनाने की आवाज ने उसको वहीं ठहरा दिया।

ऐसा मालूम होता था कि वह घोड़ा उस लश्कर का स्वागत कर रहा हो। उसका हाल मालूम करने के लिए लश्कर घोड़े के पास पहुंचा। वहां लश्करवालों ने देखा कि मिट्टी और खून में लथपथ एक लाश पड़ी हुई है।

सेना का सेनापति चिल्लाया, "मुझे इसकी तलवार दिखाओ, ताकि मैं पहचान सकूं कि यह कौन है।"

सेना के कुछ सवार घोड़े से उतरे और लाश के चारों ओर खड़े होकर उसे टटोलने लगे।

थोड़ी देर के बाद एक सवार सरदार के पास आकर भर्राई हुई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आवाज में कहने लगा, "हुजूर, उसकी ठंडी उंगलियां तलवार की मूठ पर जमी हुई हैं। उन उंगलियों से तलवार छीन लेना बहुत मुश्किल है।"

दूसरे ने कहा, "उसकी तलवार की धार खून के म्यान में छिपी हुई है।"

तीसरे ने कहा, "हथेली और तलवार के दस्ते पर लहू जम गया है। वह दस्ता कलाई के साथ भी खून से इतनी मजबूती से जुड़ गया है कि दोनों एक हो गये हैं।"

तब सरदार घोड़े से उतरा और यह कहता हुआ मृत व्यक्ति के पास पहुंचा, "इसका सिर उठा लो ताकि चांद की रोशनी में उसका चेहरा हम देख सकें।"

फौज के सिपाहियों ने जल्दी से उसका सिर ऊपर उठाया। मौत के पर्दे के पीछे से मृतक का चेहरा दिखाई दिया। वीरता और बहादुरी के चिह्न अबतक उसमें साफ नजर आ रहे थे।

यह एक ऐसे घुड़सवार का चेहरा था, जो घटनाओं की भाषा में अपनी बहादुरी की कहानियां सुना रहा था। उस पर खुशी और अफसोस के निशान एक ही साथ दिखाई दे रहे थे।

यह ऐसा चेहरा था, जो दुश्मन ने गुस्से में और मौत से मुस्कराता हुआ मिला था।

यह एक लेबनानी बहादुर का चेहरा था, जो आज की लड़ाई में शरीक रहा और जिसने विजय के चिह्न अपनी आंखों से देखे थे। मगर मौत ने उसे इतना भी अवसर नहीं दिया कि वह अपने साथियों से मिलकर विजय की खुशियां मनाता।

जब उन्होंने उसका नकाब उतारा और उसके पीले चेहरे से धूल पोंछ डाली तो सरदार घबराहट और तकलीफ से चीखते हुए बोला, "आह! यह तो इब्न उल साबी है।"

लश्कर के तमाम सिपाही भी यह सुनकर आहें भरने लगे।

थोड़ी देर बाद सब खामोश हो गये और वहां शांति छा गई। ऐसा मालूम होता था कि जीत की शराब का नशा उन बदमस्त सिपाहियों के सिर से उतर गया है और उन्हें अब इस बात का होश आया है कि लड़ाई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में हासिल की हुई तमाम कामयाबी इस एक बहादुर की जान के मुकाबले में कोई कीमत नहीं रखती।

इस तथ्य को समझ लेने के बाद उनकी जबानों पर मुहर-सी लग गई और वे पत्थर के बुत बने खड़े-के-खड़े रह गए।

बहादुर और निर्भीक पुरुषों के दिलों पर मौत का यही असर होता है। मृत्यु का दृश्य देखकर रोना-पीटना औरतों का और चीखना-चिल्लाना बच्चों का काम है। हाथ में तलवार लेकर धर्म के नाम पर लड़ने के लिए निकले हुए मर्दों के चेहरों पर मौत को देखकर आतंक, रौब और खामोशी ऐसे छा जाती है, जैसे कोई बाज अपने शिकार की गर्दन दबा लेता है।

ऐसी खामोशी आंख के आंसुओं को खुश्क और जबान से निकलने-वाली फरियाद को बंद कर देती है, और इसीलिए यह मुसीबत और ज्यादा भयानक और दर्दनाक सूरत अख्तियार कर लेती है।

ऐसी खामोशी हवा में उड़नेवाली आत्माओं को पहाड़ की चोटियों से गहरे गढ़ों में धकेल देती है।

और ऐसी खामोशी अक्सर आनेवाले तूफानों का पूर्व लक्षण हुआ करती है।

सिपाही मृतक के कपड़े उतारकर देखने लगे कि शरीर का कौन-सा हिस्सा मौत का निशाना बना है। नोंकदार भालों के जख्म मृतक की छाती पर ऐसे नजर आने लगे, मानो वे रात की शांतिपूर्ण स्तब्धता में उस जवान की हिम्मत और बहादुरी का संदेश दुनिया को दे रहे हों। लश्कर का सरदार लाश को ध्यान से देखने के लिए और पास आया। उसकी नजर नवयुवक की कलाई में बंधे हुए जरकशी रूमाल पर पड़ी। उसने उसे ध्यान से देखा और रूमाल बनानेवाले हाथ को वह पहचान गया। वह जल्दी से रूमाल को अपने कपड़ों से और अपने उदास चेहरे को कांपते हाथों से छिपाता हुआ दो कदम पीछे हटा।

दुःखी चेहरे को छिपानेवाले हाथ वही हाथ थे, जो अपनी एक हरकत से बड़े-बड़े बहादुरों के सिर उतार दिया करते थे; लेकिन अब वे कमजोर पड़ गये थे। वे कांप रहे थे और आंसुओं को पोंछ रहे थे। यह क्यों? सिर्फ इसलिए कि उन हाथों में वह रूमाल था, जो मृत नवयुवक की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कलाई पर एक सुंदर और नाजुक प्रियतमा ने बांधा था।

वह नवयुवक, जो यह इरादा लेकर आया था कि अपनी बहादुरी के जौहर दिखाकर अपनी और कौम की इज्जत की रक्षा करेगा, अब अपने साथियों के कंधों पर सवार होकर अपनी प्रियतमा के सामने जायेगा।

सरदार के विचार मृत्यु के अत्याचारों और प्रीति के रहस्यों के सागरों में डुबकियां लगा रहे थे कि एक ने कहा, "आओ, बलूत[1] के इस पेड़ के नीचे उसकी कब्र खोदें। इसकी जड़ें उसके खून से भर जायंगी और उसका शरीर इसकी शाखाओं की खुराक बनेगा। इस तरह पेड़ की जड़ें मजबूत बनेंगी और इसकी उम्र बढ़ेगी। यह पेड़ हमेशा के लिए इन टीलों के सामने उस नौजवान की बहादुरी और वीरता की यादगार रहेगा।"

दूसरे ने कहा, "इसको चावल के खेतों में गिरजे के करीब दफन करना चाहिए, जिससे इसकी हड्डियों पर हमेशा के लिए पवित्र सलीब का मुबारक साया पड़ता रहे।"

तीसरे ने कहा, "इसको उस स्थान पर दफन करना चाहिए, जहां की मिट्टी इसके खून से सन चुकी है। इसकी तलवार इसके दाहिनी तरफ रख देनी चाहिए। इसका भाला इसके बाईं तरफ गाड़कर इसके घोड़े को उसकी कब्र पर ही बलि चढ़ाना चाहिए, ताकि अकेलेपन में वे उसके साथी बनें।"

चौथे ने कहा, "दुश्मन के खून से रंगी हुई तलवार को मिट्टी में दफन न करो। मौत के मैदान में आगे बढ़ते हुए घोड़े को कत्ल न करो और उन हथियारों को खाली मैदान के सिपुर्द न करो, जो मजबूत कलाइयों और ताकतवर हाथों में रहने के आदी हैं; बल्कि इन तमाम चीजों को नवयुवक के सच्चे वारिसों तक पहुंचा दो, इसलिए कि वे ही उनके सही हकदार हैं।"

पांचवें ने कहा, "आओ, हम सब मिलकर अपने धर्म के मुताबिक इसकी लाश पर नमाज पढ़ें और उसके लिए दुआ मांगें, ताकि इसे निजात मिले और हमारी फतह इस बहादुर की वजह से मुबारक रहे।"

---

१. एक प्रकार का वृक्ष, जिसकी छाल में चमड़ा रंगा जाता है.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छठे ने कहा, "आओ, भालों और ढालों का ताबूत बनाकर इसको अपने कंधों पर उठायें और जीत के गीत गाते हुए इन वादियों के चक्कर काटें, ताकि यह नवयुवक अपनी आत्मा की आंखों से दुश्मन की लाशों को देखे और मिट्टी में मिल जाने से पहले उसके जख्म दुश्मनों को देख-देखकर हँसें।"

सातवें ने कहा, "नहीं, आओ! इसको अपने घोड़े की जीन पर बिठाकर दुश्मनों की खोपड़ियों का सहारा इसके लिए तलाश करें। इसके भाले को इसके गले में लटकाएं और कामयाब मुजाहिद की तरह इसे शहर में ले जायं, इसलिए कि इसने उस वक्त तक जान नहीं दी जबतक दुश्मनों की आत्माओं का भारी बोझ उसके कंधों पर न पड़ा।"

आठवें ने कहा, "आओ, इस पहाड़ के अंचल में इसके जिस्म को मिट्टी के हवाले कर दें। झरनों की आवाजें इसका साथ देंगी, नदियों की आवाजें इसके दुःख की हिस्सेदार बनेंगी और इस तरह ऐसे जंगल में, जहां रात भी दबे पांव आया करती है, इसकी हड्डियां हमेशा सुख से रहेंगी।"

नौवें ने कहा, "इसको यहां न छोड़ो। इस जंगल में भीषणता बरसती है और भयानक एकांत इस जगह छाया रहता है। इसलिए चलो, इसे शहर के कब्रिस्तान में ले जायं। हमारे बाप-दादाओं की आत्माएं इसके साथ रहेंगी। रात की खामोशी में वें आपस में बातें करेंगी और अपनी लड़ाइयों और अपने कारनामों के किस्से सुनायेंगी।"

ये सारे प्रस्ताव सुनने के बाद सरदार लश्कर के बीच आया और सबको हाथ के इशारे से खामोश करके ठंडी आहें भरते हुए बोला, "लड़ाइयों की याद दिलाकर इसकी शांति में बाधा मत डालो। इसकी आत्मा के कानों तक, जो हमारे सिरों पर उड़ रही है, तलवारों और भालों की खबरें न पहुंचाओ, बल्कि आओ, इसको आराम से उठाकर इसके घर पहुंचायें—इसलिए कि उसजमात में एक ऐसी आत्मा है, जो इसके स्वागत के लिए हमेशा से जाग रही है—एक नौजवान कुमारी की आत्मा, जो भालों से घिरे हुए लड़ाई के मैदान से इसकी वापसी की राह देख रही है। हमें चाहिए कि इसकी लाश को उस कुमारी तक पहुंचा दें, ताकि वह इसके चेहरे पर आखिरी नजर डालने और इसके माथे का आखिरी चुंबन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेने से महरूम न रहे।"

तब उस नौजवान की लाश को कंधों पर उठाया गया। सबके सिर झुके हुए और आंखें आंसुओं से भरी हुई थीं। दुःख से भरी खामोशी के साथ वे जा रहे थे और नौजवान का घोड़ा उदासी के साथ अपनी लगाम को पीछे घसीटता उनके पीछे-पीछे आ रहा था। वह कभी-कभी हिनहिनाने लगता। तब आसपास के टीले गूंज के रूप में उसकी हिनहिनाहट का जवाब दे देते, मानो उन टीलों के भी ऐसा दिल था, जो उस वफादार जानवर के दुःख को समझता था।

उस वादी में, जहां चांद की चांदनी हर चोटी पर कदम रखती है, फतह का काफिला मौत के काफिले के पीछे-पीछे चला जा रहा था और उन दोनों काफिलों के आगे-आगे सच्ची मुहब्बत अपने टूटे हुए परों को घसीटती हुई जा रही थी। ○

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

५

□ सबेरे की रोशनी

: १ :

उत्तर लेबनान के एक गांव में शेख अब्बास नाम का एक बड़ा जमींदार रहता था। वह अपने को गांव का मालिक ही समझता था। जब वह किसानों से बातें करता तब वे दीनता के साथ सिर झुका लेते और जब वह गुस्से में आता तो वे डर के मारे कांप उठते। उसकी शक्ल देखते ही भाग जाते। अगर वह किसी के गाल पर तमाचा मार देता तो वह आदमी चुप खड़ा रहता और सोचता कि यह मार आसमान से आ पड़ी है। अगर वह किसी को देखकर तनिक मुस्कराता तो सब लोग उस आदमी को बधाई देते।

ये गरीब लोग शेख अब्बास के सामने सिर झुकाते थे—इसलिए नहीं कि वे कमजोर थे और शेख ताकतवर था, बल्कि इसलिए कि वे कंगाल थे और उन्हें शेख की जरूरत थी, क्योंकि जिस भूमि में वे खेतीबाड़ी करते थे और जिन मकानों में रहते थे, वे सब शेख की जायदाद थी। जी-तोड़ मेहनत करने पर भी उन्हें इतना भी अनाज नहीं मिल पाता था, जो उन्हें भूख के गढ़ों से निकाल सके। अधिकतर किसान तो जाड़ा बीतने से पहले ही रोटी तक को मुहताज हो जाते थे और एक-एक करके शेख के पास जाकर रोना-धोना शुरू कर देते थे, ताकि उससे एक दिनार या गेहूं की एक टोकरी कर्ज मिल सके। शेख उनकी मांग को खुशी से मंजूर कर लेता, क्योंकि वह जानता था कि फसल के समय एक दिनार और गेहूं की एक टोकरी की दो टोकरियां बन जायंगी। इस तरह वे शेख अब्बास के कर्ज के नीचे दबे हुए थे।

जाड़े का मौसम आया। बर्फ गिरने लगी। देहात के लोग शेख अब्बास के गोदामों को अनाज से और मटकों को अंगूर के रस से भरकर घरों में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बैठ गये।

रात हो गई थी। तूफानी हवा बर्फ से लदे बड़े-बड़े पहाड़ों से बर्फ को उड़ा-उड़ाकर नीचे फैंकने लगी।

इस भयानक रात में बाईस बरस का एक नवयुवक कजहिया[1] के गिरजाघर से एक कठिन रास्ता पार कर शेख अब्बास के गांव को जा रहा था। कजहिया का गिरजा लेबनान का सबसे अधिक प्रसिद्ध और धनवान गिरजा है।

सर्दी नवयुवक के जोड़ों को ऐंठ रही थी। भूख और डर ने उसकी ताकत को खत्म कर दिया था। उसकी काली पोशाक बर्फ से ढकी हुई थी, मानो उसने कफन पहन रखा हो। वह आगे की ओर बढ़ता तो हवा ऐसे जोर से धक्का लगाती, मानो वह उसे जीवन के बंधन में देखना नहीं चाहती थी। वह बेचारा गिर पड़ता और फिर उठ जाता।

नवयुवक चलता गया और मौत भी उसके पीछे-पीछे हो ली। अंत में उसकी सारी ताकत चुक गई। उसकी सुध-बुध कम होती गई। उसकी नसों का लहू जम गया और वह बर्फ पर गिर पड़ा।

उसके शरीर में जीवन का केवल एक ही निशान बाकी था, और वह था उसका रह-रहकर चिल्लाना।

इस गांव के उत्तर की ओर खेतों के बीच एक छोटे-से मकान में राहील नाम की एक स्त्री अपनी कोई अठारह साल की बेटी मरियम के साथ रहती थी। यह स्त्री समआन नामक एक आदमी की बेवा थी, जो पांच साल हुए जंगल में मरा पाया गया था और जिसके हत्यारे का पता आजतक नहीं लगा था।

अपनी ही मेहनत से वह रोजी कमाती थी। उसकी बेटी मरियम खूबसूरत थी और घर के काम-काज में अपनी मां का हाथ बंटाती थी।

उस भयावनी रात में राहील और मरियम अंगीठी के पास बैठी थीं। आधी रात बीच चुकी थी। अब वे सोने जा रही थीं कि इतने में मरियम

---

१. कजहिया सरियानी (सीरियन) शब्द है, जिसका अर्थ है 'जीवन का स्वर्ग.'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को खिड़की में से कोई आवाज सुनाई दी। उसने मां से पूछा, "अम्मा, क्या तुमने सुना ? मुझे लगता है, बाहर कोई कराह रहा है।"

राहील उठकर खिड़की के पास गई और बोली, "हां, मुझे भी आवाज सुनाई दे रही है। आओ, दरवाजा खोलकर बाहर जायं और उसकी तलाश करें !" इतना कहकर राहील बाहर निकल गई। मरियम दरवाजे में ही खड़ी रही।

राहील थोड़ी दूर गई होगी कि इतने में उसने अपने सामने एक आदमी को बर्फ पर बेहोश पड़ा पाया। उसने आगे बढ़कर उसके कपड़ों से बर्फ को झाड़ा और उसका सिर अपनी गोद में रखकर वह उसकी नाड़ी और दिल की धड़कन देखने लगी। फिर उसने जोर से आवाज दी।

मरियम घर से निकली और डर तथा जाड़े से कांपती हुई उस स्थान पर पहुंच गई। दोनों ने नौजवान को उठा लिया और उसे लेकर मकान पर पहुंच गईं। उन्होंने उस युवक को अंगीठी के पास लिटा दिया। मां उसके हाथ-पांव मलने लगी और बेटी अपने कपड़े से उसके भीगे हुए बालों को पोंछने लगी। कुछ मिनट में उस युवक के शरीर में हरकत हुई और उसकी आंखों में जान आ गई। मरियम ने उसके गीले जूते और भीगा लबादा उतारते हुए कहा, "देखो मां, इसकी पोशाक जोगियों की-सी है।"

राहील ने अंगीठी में सूखी लकड़ी डालते हुए कहा, "अजीब बात है ! ऐसी भयावनी रात में तो जोगी या पादरी मठ से नहीं निकला करते। इस दुःखी आदमी को किस बात ने मजबूर किया होगा कि वह अपनी जान खतरे में डाले ?"

लड़की बोली, "लेकिन इसके दाढ़ी तो नहीं है। जोगियों के तो घनी दाढ़ी होती है !"

मां बोली, "बेटी, इसके पांव मलो !"

इसके बाद मरियम पासवाली कोठरी में से एक प्याले में थोड़ी-सी शराब लाई और उस युवक को पिलाई। तब उस युवक ने उसकी तरफ देखकर कहा, "भगवान तुम्हारा भला करे !"

फिर राहील दो रोटियां एक रकाबी में रखकर लाई और युवक के पास बैठकर उसके मुंह में इस तरह कौर देने लगी जैसे मां अपने बेटे को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

O-,3M83x 152M0

खिलाती है। जब वह काफी खा चुका तो बोला, "आदमी के हाथों ने मुझे इस हालत में डाला, और आदमी के ही हाथों ने मुझे बरबादी से बचा लिया!"

राहील ने ममताभरी आवाज में पूछा, "ऐ भाई, तुम पर ऐसी क्या गुजरी कि जिससे तुम्हें इस भयावनी रात में जोगियों के मठ को छोड़ना पड़ा?"

नौजवान ने आह भरकर कहा, "मैं मठ से जबरदस्ती निकाल दिया गया।"

राहील ने डरी आवाज में पूछा, "निकाल दिया गया?"

"हां, मुझे मठ से निकाल दिया गया, क्योंकि मुझे दुःखियों और गरीबों का माल खाने से नफरत हो गई थी।"

तब राहील ने प्यार से पूछा, "ए भाई, तुम्हारे मां-बाप कहां हैं?"

युवक ने दर्दभरी आवाज में उत्तर दिया, "मेरे न बाप है, न मां-बहन, और न कोई ऐसी जगह, जहां मैं अपना सिर छिपा सकूं!"

नौजवान ने अपना सिर उठाया और कहना शुरू किया, "सात साल की उम्र में ही मेरे मां-बाप गुजर गये। गांव का पादरी मुझे कजहिया के मठ में ले गया। वहां मुझे गायों का चरवाहा बनाया गया। जब मैं पंद्रह बरस का हुआ तब उन्होंने मुझे यह मोटी और काली पोशाक पहना दी और कहा, 'भगवान की कसम खाकर अहद करो कि तुम अपने-आपको गरीबी, हुक्म मानने और संयम के लिए निछावर कर दोगे।' उनके कहने का मतलब ध्यान में आने से पहले ही मैंने उनके शब्दों को दुहराया। मेरा नाम खलील था और जब मैं जोगी बना तब उन्होंने मेरा नाम बिरादर मुबारक रख दिया; मगर उन्होंने मुझे अपना भाई न बनाया। वे बड़े अच्छे-अच्छे खाने खाते थे, मगर मुझे सूखी रोटियां और बासी सब्जी खिलाते थे। मुझे यह बुरा लगता था और मैं उस पर सोचता रहता था।

"आखिर एक दिन हिम्मत करके मैं मठ के जोगियों के पास गया और बोला, 'हम गरीबों और दुःखियों के दान से फायदा क्यों उठाते हैं? हम बेकार बैठकर क्यों ऐश उड़ाते हैं? आओ, इस मठ की यह बड़ी खेती उन गरीब देहातियों में बांट दें और उनका जो माल हम उनसे ले चुके हैं,

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय
वाराणसी। 2017
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उनकी जेबों में डाल दें। हम उन कमजोर लोगों की सेवा करें, जिन्होंने हमें ताकतवर बनाया है और उन गांवों की तरक्की करें, जिनके दान ने हमें धनवान बना दिया है।'

"जब मेरी बात खत्म हुई तो जोगियों में से एक आगे बढ़ा और दांत पीसकर बोला, 'ए मरियल आदमी, तेरी इतनी जुर्रत !' फिर दूसरा बोला, 'शैतान, तू अभी इसका नतीजा भुगतेगा !'

"इसके बाद उन्होंने बड़े पादरी से शिकायत की। उसने मुझे बुलाकर एक माह तक जेलखाने में रखने का हुक्म दिया। एक महीना मैं उस कब्र में पड़ा रहा, जहां मुझे रोशनी भी दिखाई नहीं दी। महीना बीत गया। मैं जेलखाने से बाहर निकला, मगर वहां की तकलीफें मेरी हिम्मत को पस्त नहीं कर सकीं। आज शाम को मैंने उन लोगों को इंजील से ये फिकरे पढ़ सुनाये—उसने एक समूह से, जो उसका यकीन पाने के लिए निकला था, कहा—'ए सांप की औलादो, आनेवाली आफत से डरो और संयम का मीठा फल पैदा करो ! तुम अपने दिलों में कहते हो कि हम हजरत इब्राहीम की औलाद हैं; लेकिन मैं तुमसे कहता हूं कि भगवान इस पत्थर से भी इब्राहीम की संतान पैदा कर सकता है। और अब कुल्हाड़ा पेड़ की जड़ काट चुका है और जो पेड़ अच्छे फल नहीं देता उसे आग में जला दिया जाता है।' लोगों ने पूछा, 'अब हम क्या करें?' उसने उत्तर दिया, 'जिसके पास कपड़े हैं, वह उन्हें उस आदमी को दे दे, जिसके पास नहीं हैं, और जिसके पास खाना है, वह उसे दे दे, जो भूखा है।'

"मेरे होठों से इन शब्दों का निकलना था कि एक ने मेरे मुंह पर बड़े जोर से तमाचा मारा; दूसरे ने मुझे पांव से ठोकरें मारीं; तीसरे ने मेरे हाथ से इंजील छीन ली और चौथे ने बड़े पादरी को पुकारा। बड़ा पादरी जल्दी से आया और जब उसने सारी बातें सुनीं तो उसकी आंखें लाल हो गईं। वह गुस्से से कांपने लगा और गरजती हुई आवाज में बोला, 'इस बदमाश जोगी को पकड़ लो और मठ से निकाल दो, ताकि बाहर की आफतें इसे अच्छा सबक सिखा दें !'

"जोगियों ने मुझे तुरंत पकड़ लिया और मुझे मठ के बाहर धकेल दिया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"इस तरह जोगियों और पादरियों ने मुझे मौत के मुंह में दे दिया, मगर बर्फ और आंधी के पीछे से एक ताकत ने मेरी पुकार को सुना और आपको मेरे पास भेजा, ताकि आप मुझे मरने से बचा लें!"

खलील की कहानी सुनकर राहील बोली, "भगवान जिसे सच्चाई के रास्ते में मदद देता है, उसे न जुल्म खत्म कर सकते हैं और न आंधी और बर्फ मार सकते हैं।"

मरियम ने आह भरकर कहा, "आंधी और बर्फ फूलों को बरबाद कर सकते हैं; लेकिन बीज नहीं मर सकते!"

इस हमदर्दी से खलील का पीला चेहरा चमक उठा। कुछ ही मिनट में उसकी आंखें मुंद गईं और वह इस तरह सो गया, जैसे बच्चा मां का दूध पीकर सो जाता है। राहील और मरियम भी अपने-अपने बिस्तरों पर जाकर सो गईं।

: २ :

दो हफ्ते बीत गये। खलील ने तीन बार कोशिश की कि वह समुद्र के किनारे की राह ले, मगर राहील ने प्यार से उसे रोककर कहा, "देखो भाई, तुम अब कहीं मत जाओ, यहीं रहो; क्योंकि जो रोटियां दो आदमियों का पेट भरती हैं, वे तीन के लिए काफी होती हैं। भैया, हम गरीब जरूर हैं, मगर भगवान की दुआ से उसी तरह जीते हैं, जैसे दूसरे आदमी।"

मरियम भी अपनी खामोश आहों से अपना प्यार जाहिर करती थी।

एक दिन हिम्मत करके उसने खलील से कहा, "तुम इसी गांव में क्यों नहीं रहते? क्या यहां की जिंदगी दूर-दूर के उजाड़ परदेस से अच्छी नहीं है?"

उसके शब्दों की कोमलता और स्वर के संगीत से व्याकुल होकर खलील बोला, "इस गांव के लोग पसंद न करेंगे कि पादरियों के मठ से निकाला गया आदमी उनका पड़ोसी बने। अगर मैं इस गांव में रह गया और मैंने यहां के लोगों से कहा, 'आओ भाइयो, अपनी मर्जी के मुताबिक प्रार्थना करें, न कि इस तरह जिस तरह जोगी और पादरी चाहते हैं, क्योंकि भगवान की यह मर्जी नहीं हो सकती कि वह ऐसे मूर्खों का देवता बने, जो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ईश्वर को छोड़ औरों के पीछे चलते हैं' तो ये लोग मुझे काफिर ठहरायंगे और कहेंगे कि यह आदमी उस हुकूमत से बैर रखता है, जो भगवान ने पादरियों को दी है।...फिर भी मरियम ! इस गांव में एक ऐसा जादू है, जिसने मुझे जीत लिया है। मैं इस गांव में एक बड़ा अच्छा फूल देखता हूं, जो कांटों में पड़ा है। क्या मैं इस फूल को छोड़कर जा सकता हूं ? नहीं, कभी नहीं !"

मगर खलील की किस्मत ने उसे ज्यादा दिन तक चैन से नहीं रहने दिया।

उस गांव के मालिक शेख अब्बास की पादरियों से गहरी दोस्ती थी। एक दिन उस गांव का पादरी इलियास शेख़ अब्बास के पास गया और बोला, "पादरियों ने एक बदमाश बागी को मठ से निकाल दिया था। वह काफिर अब दो हफ्तों से इस गांव में आया हुआ है और समआन की बेवा राहील के घर में रहता है। हमारा फर्ज है कि हम भी उसे अपने गांव से निकाल बाहर करें !"

अब्बास ने पूछा, "क्या हमारे लिए यह मुनासिब न होगा कि हम उसे यहीं रहने दें और अपने अंगूर के बागों का रखवाला या ढोरों का चरवाहा बना लें?"

पादरी बोला, "अगर यह आदमी काम करनेवाला होता तो वे पादरी उसे क्यों निकाल देते, जिनकी खेती बहुत बड़ी है और जिनके पास बेशुमार ढोर हैं ?" और फिर उसने वह सारा किस्सा उसे सुनाया जो उसने मठ के पादरियों से सुना था। सुनकर शेख अब्बास गुस्से से लाल-पीला हो गया। उसने जोर से चिल्लाकर अपने नौकरों को आवाज दी और कहा, "बेवा राहील के घर में एक आदमी है, जिसने पादरियों का लिबास पहन रखा है। जाओ, उसकी मुश्कें कसकर यहां ले आओ। और अगर वह औरत किसी तरह रुकावट डाले तो उसे भी गिरफ्तार कर लो और उसके सिर के बालों को पकड़कर उसे बर्फ में खींचते हुए ले आओ, क्योंकि बदमाश का मददगार भी बदमाश ही होता है।"

नौकर हुक्म बजा लाने के लिए तेजी से बाहर निकले।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

: ३ :

राहील, मरियम और खलील एक चौकी के पास बैठे खाना खा रहे थे कि इतने में दरवाजा खुला और शेख अब्बास के नौकर अंदर आये। राहील डर गई और मरियम ने एक चीख मारी, मगर खलील खामोश था, क्योंकि उसने उनके आने का सबब जान लिया था। एक नौकर आगे बढ़ा और खलील के कंधे पर हाथ रखकर बोला, "पादरियों के मठ से निकाले हुए नौजवान तुम्हीं हो ?"

खलील ने जवाब दिया, "जी हां, मैं ही हूं ! क्यों, क्या चाहते हो ?"

नौकर ने कहा, "हम चाहते हैं कि तुम्हारी मुश्कें कसकर तुम्हें शेख अब्बास के मकान पर ले चलें और अगर तुम कुछ आनाकानी करो तो तुम्हें मरे हुए बकरे की तरह घसीटते हुए ले जायें।"

राहील का चेहरा पीला पड़ गया। उसने कांपती हुई आवाज में पूछा, "इसका क्या कसूर है, जिसकी वजह से शेख अब्बास ने इसे बुलाया है ?"

नौकर मारे गुस्से के चिल्ला उठा, "क्या इस गांव में कोई ऐसी औरत भी हो सकती है, जो शेख अब्बास की इच्छा के खिलाफ जाय ?"

यह कहकर उसने खलील की मुश्कें कसने को एक मोटी रस्सी निकाली। खलील उठकर खड़ा हो गया। उसके होठों पर मुस्कराहट थी। उसने उन नौकरों से कहा, "दोस्तों, मुझे तुम्हारी हालत पर तरस आता है। तुम एक जबरदस्त आदमी के हाथ में अंधे औजार की तरह हो। वह तुम पर जुल्म करता है और तुम्हारे हाथों से कमजोरों को बरबाद कराता है। तुम्हारी लाचारी पर मुझे दुख है। आओ, मेरी मुश्कें कस लो और जो जी में आये करो !"

नौकरों ने ये बातें सुनीं तो उनकी आंखें पथरा गईं। मगर फौरन उन्हें याद आ गया कि वे किस काम के लिए वहां आये हैं। आगे बढ़कर उन्होंने खलील की मुश्कें कस लीं और उसे पकड़े हुए चुपचाप बाहर निकले। राहील और मरियम भी उनके पीछे-पीछे चल दीं—उसी तरह जिस तरह यरूशलम की लड़कियां हजरत ईसामसीह के पीछे हो ली थीं, जबकि उन्हें क्रूस पर लटकाने के लिए ले जाया जा रहा था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

: ४ :

देहात में छोटी-बड़ी खबरें बहुत जल्दी फैल जाती हैं। शेख अब्बास के आदमियों नें ज्योंही खलील को गिरफ्तार किया, यह खबर गांव के लोगों में छूत की बीमारी की तरह फैल गई। वे अपने-अपने मकान छोड़कर बिखरे हुए सिपाहियों की तरह हर तरफ से तेजी के साथ भागे और जैसे ही नवयुवक को शेख के मकान में लाया गया, वह बड़ा घर स्त्रियों, पुरुषों और बच्चों से भर गया। सब-के-सब उस काफिर की ओर आश्चर्य से देख रहे थे, जिसे पादरियों ने मठ से निकाल दिया था।

शेख अब्बास एक ऊंची गद्दी पर विराजमान था और उसके पास पादरी इलियास बैठा था। सामने किसान व नौकर-चाकर खड़े थे और बीच में खलील, जिसकी मुश्कें कसी हुई थीं, इस तरह अकड़ कर खड़ा था, जैसे गढ़ों के बीच में ऊंचा टीला।

शेख अब्बास ने खलील की ओर देखकर पूछा, "ए शख्स, तेरा नाम क्या है?"

खलील ने उत्तर दिया, "मुझे खलील कहते हैं।"

शेख ने पूछा, "तुम्हारा खानदान कौन-सा है? और तुम कहां के रहने वाले हो?"

खलील ने उन किसानों की ओर देखा, जो उसकी तरफ नफरत से देख रहे थे और कहा, "ये दुःखी-गरीब लोगही मेरा खानदान हैं और ये ही फैले हुए गांव मेरी मातृभूमि है।"

शेख अब्बास मुस्कराया और बोला, "तुम जिन लोगों के साथ अपना रिश्ता जोड़ते हो, वे तुम्हें सजा दिलाना चाहते हैं और जिन गांवों को तुम अपनी मातृभूमि बताते हो, वे नहीं चाहते कि तुम यहां चैन से रहो!"

खलील ने व्याकुल होकर उत्तर दिया, "नासमझ जातियां अपने शील-वान बेटों को पकड़कर जुल्म करनेवालों की बेरहमी के हवाले कर देती हैं और बेइज्जती तथा दुर्दशा के गढ़ों में फंसे हुए गांव अपने प्यारे बेटों पर जुल्म करते हैं। ये दीन-दुःखी लोग, जिन्होंने आज मुझे रस्सों से जकड़कर तुम्हारे हवाले किया है, कल अपनी गर्दनें तुम्हारे हवाले कर चुके हैं।"

शेख ने जोर से ठहाका मारकर कहा, "क्या तुम पादरियों के मठ में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चरवाहे नहीं थे ? तो फिर तुमने अपने ढोरों को क्यों छोड़ दिया ? और तुम वहां से क्यों निकाले गये ?"

खलील ने उत्तर दिया, "मैं चरवाहा था, कसाई नहीं। मैं ढोरों को हरी-भरी चरागाहों में ले जाता था, सूखे पहाड़ों पर नहीं। अगर हम इन गरीब आदमियों के साथ ऐसा ही सलूक करते तो तुम आज इन शानदार महलों के मालिक न होते और ये बेचारे अपने अंधेरे झोंपड़ों में भूखों न मरते।"

शेख के माथे पर ठंडे पसीने की बूंदें चमकने लगीं। लेकिन जल्दी ही वह सम्हल गया और उसने हाथ फैलाकर कहा, "तुम्हारी मुश्कें कसवाकर तुम्हें यहां इसलिए नहीं मंगाया गया है कि तुम्हारी वाहियात बातें सुनें; बल्कि इसलिए कि एक बदमाश अपराधी की तरह तुम्हारी जांच की जाय। तुम पर जो जुर्म लगाये गये हैं, उनके बारे में तुम अपनी सफाई पेश करो या हमारे सामने झुककर दया की प्रार्थना करो। हम तुम्हें माफ कर देंगे और उसी तरह गायों का चरवाहा बना देंगे, जिस तरह तुम पादरियों के मठ में थे।"

खलील ने लापरवाही से जवाब दिया, "अपराधी का इंसाफ अपराधी नहीं किया करते और "बदमाश काफिर" अपनी सफाई दोषियों के सामने पेश नहीं किया करते !"

ये शब्द कहकर खलील ने उस बड़े मकान में जमा हुए लोगों पर नजर दौड़ाई और कहा, "ए लोगो, तुम अपनी अंगीठियों की गर्मी छोड़कर यह देखने आये हो कि किस तरह तुम्हारा बेटा और तुम्हारा भाई जकड़ा हुआ लाया गया है। तुम एक मुजरिम काफिर को अदालत के सामने खड़ा देखने आये हो। वह अपराधी मैं ही हूं। वह काफिर मैं ही हूं। तुम मेरी दलील सुनो और मेरे साथ रहम न करो, बल्कि इंसाफ करो, क्योंकि दया कमजोर और अपराधी लोगों के लिए होती है। बेकसूर आदमी तो इंसाफ चाहता है। मैं तुम्हारे इंसाफ के फैसले को स्वीकार करता हूं, क्योंकि जनता की इच्छा भगवान की इच्छा होती है। अपने दिलों को खोलो और मेरी बातों को सुनो, फिर तुम्हारा विवेक जैसा कहे वैसा न्याय करो।"

"ए मर्दो, मेरा जुर्म यह है कि मैं तुम्हारी बरबादी की जानकारी और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुम्हारी गुलामी को महसूस करता हूं, और ए नारियो! मेरा गुनाह यह है कि मेरे दिल में तुम्हारे लिए और तुम्हारे बच्चों के लिए हमदर्दी भरी हुई है। मित्रो, मैं तुममें से ही एक हूं। मैंने मठ में यह देखा कि तुम लोग अपने खेतों में बकरियों के उस रेवड़ की तरह हो, जिसके पीछे भेड़िया जा रहा है। मैं रास्ते के बीच में खड़ा होकर चीखने-चिल्लाने लगा। इस पर भेड़िये ने मुझ पर हमला करके मुझे दूर भगा दिया, ताकि मेरे शोर-गुल से बकरियां भेड़िये को रात के अंधेरे में अकेला छोड़कर इधर-उधर भाग न जायं।

"तुमने सुना है कि अल्लाताला ने हजरत आदम से कहा था कि मेहनत करके रोटी कमाओ। फिर शेख अब्बास वह रोटी क्यों खाता है, जिसमें तुम्हारे माथे का पसीना मिला हुआ है? तुम बहुत बड़े और आलीशान महल बनाते हो, लेकिन तुम्हारे रहने के लिए झोंपड़ी के सिवा कुछ नहीं। क्या तुमने ईसामसीह का वह वचन नहीं सुना है, जो उन्होंने अपने शिष्यों से कहा था—'जो कुछ दो, मुफ्त दो और जो कुछ लो, मुफ्त लो। घरों में सोना, चांदी और तांबा जमा न करो?' फिर ये पादरी और जोगी किस शिक्षा के अनुसार अपनी प्रार्थनाओं को चांदी-सोने के बदले में बेचते हैं?"

खलील का चेहरा चमक उठा। उसने जान लिया कि सुननेवालों के हृदय में उनकी आत्मा जग रही है। उसकी आवाज पहले से ज्यादा ऊंची हो गई। वह कहने लगा, "मेरे भाइयो, तुम अल्लाह के बेटे होकर यह कैसे कबूल करते हो कि आदमी की गुलामी मंजूर की जाय? ईसामसीह ने तुम्हें 'भाई' कहकर पुकारा था, फिर तुम अपने को शेख अब्बास के गुलाम क्यों कहलाते हो?···आज तुमने जो बातें मुझसे सुनीं, उन्हीं बातों के सबब से मैं मठ से निकाला गया। अब अगर तुम्हारे गांव का शेख और तुम्हारे गिरजा का पादरी मुझे सूली पर चढ़ा दे तो मुझे खुशी ही होगी।"

खलील की बातों ने लोगों के दिलों पर जादू का-सा असर किया। उनकी आंखों से पर्दे इस तरह हट गये जैसे एक अंधा आदमी अचानक देखने लग जाय। मगर शेख अब्बास और पादरी इलियास गुस्से के मारे कांप रहे थे। वे चाहते थे कि खलील को चुप करा दें; पर ऐसा कर नहीं सकते थे। आखिर शेख अब्बास खड़ा हो गया। उसने त्यौरी चढ़ाकर कठोर आवाज में लोगों से कहा, "तुम्हें हो क्या गया है? क्या तुम सुन नहीं रहे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हो ? क्या तुम्हारे शरीर सुन्न हो गये हैं कि तुम इस काफिर को पकड़ने लायक नहीं रहे ?"

इतना कहकर शेख ने तलवार खींच ली और वह खलील की ओर झपटा ताकि उस पर वार करे, मगर इतने में वहाँ जमा हुए लोगों में से एक ताकतवर आदमी आगे बढ़ा और बोला, "ए सरदार! अपनी तलवार को म्यान में डालो, वरना तलवार का बदला तलवार से लिया जायगा !"

शेख कांपने लगा। उसके हाथ से तलवार गिर गई। उसने चिल्लाकर कहा, "क्या एक कमजोर नौकर ईश्वर के समान अपने मालिक को रोक सकता है ?"

उस आदमी ने जवाब दिया, "ईमानदार नौकर बदमाशी और जुल्म में अपने मालिक का मददगार नहीं होता।"

अब राहील को भी बोलने की हिम्मत हो गई। वह आगे बढ़ी और बोली, "इस आदमी ने अपनी बातों से हमारा ही दिल खोलकर रख दिया है। इसलिए अब जो आदमी बदमाशी करेगा वह सबका दुश्मन होगा।"

शेख ने दांत पीसते हुए कहा, "तू भी विद्रोह करती है, ए औरत ! क्या तू भूल गई कि आज से पांच बरस पहले जब तेरे शौहर ने मुझसे बगावत की थी तो उसका क्या नतीजा हुआ था ?"

यह सुनकर राहील को बहुत गुस्सा आया और गुस्से के मारे वह कांपने लगी। उसने लोगों की तरफ देखकर फरियाद की, "सुन रहे हैं आप ? यह हत्यारा गुस्से में आकर अपने गुनाह को कबूल कर रहा है। मेरे पति के हत्यारे का पता उस वक्त नहीं चल सका, क्योंकि वह तो दीवारों के पीछे छिपा हुआ था। भगवान ने अचानक हमें वह हत्यारा दिखा दिया है, जिसने मुझे बेवा बनाया !"

राहील की इस बात से उस कमरे में सन्नाटा-सा छा गया। इतने में पादरी इलियास उठा और उसने कांपती हुई आवाज में नौकरों को हुक्म दिया, "इस औरत को गिरफ्तार कर लो, जो तुम्हारे मालिक पर झूठा इलजाम लगा रही है और इसे काफिर खलील के साथ कैदखाने में डाल दो। जो आदमी ऐसा करने से तुम्हें रोकेगा, वह भी इनके अपराध में शामिल समझा जायगा और उनकी तरह उसे भी पाक गिरजा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से निकाल दिया जायगा।"

लेकिन नौकर चुप रहे। उनके जमादार ने कहा, "हमने शेख अब्बास की नौकरी रोटी के टुकड़े के लिए की थी, पर हम उसके गुलाम नहीं हैं?" इतना कहकर उसने अपनी वर्दी उतारकर शेख अब्बास के सामने फेंक दी। दूसरे नौकरों ने भी वैसा ही किया और कहा, "अब हम इस खूनी आदमी की नौकरी नहीं कर सकते!"

पादरी इलियास ने जब यह हालत देखी तो वह समझ गया कि झूठी ताक़त का जादू टूट चुका है। इसलिए वह उस घड़ी को कोसता हुआ मकान से बाहर चला गया, जब खलील उस गांव में आया था।

इसी समय एक आदमी आगे बढ़ा और उसने खलील की मुश्कें खोल दीं और शेख अब्बास की ओर देखकर, जो कुर्सी पर पत्थर की तरह चुप-चाप बैठा था, बोला, "इस नवयुवक ने हमारे अंधेरे दिलों को रोशन कर दिया है और इस बेवा ने हम पर ऐसा राज़ जाहिर कर दिया है, जो पांच साल से छिपा हुआ था। हम तुम्हें तुम्हारे हाल पर छोड़ते हैं। कुदरत खुद तुमसे बदला लेगी।"

अचानक स्त्रियों और पुरुषों की यह आवाज उस बड़े मकान में गूंज उठी—"आओ, हम इस मकान से भाग चलें, जिसकी दीवारों पर पाप और बुराइयां लिखी हुई हैं।"

एक ने कहा, "हमें वही करना चाहिए जो खलील हमें बताये, क्योंकि वह हमारी जरूरतों को जानता है और हमारे दिलों को समझता है।"

दूसरे ने कहा, "हम सुल्तान से प्रार्थना करें कि वह खलील को शेख अब्बास की जगह गांव का सरदार बना दे!"

जब हर तरफ से अलग-अलग आवाजें आने लगीं तो खलील ने अपना हाथ उठाकर लोगों को चुप कराया और कहा, "भाइयो, जल्दी न करो! मैं प्रेम के नाम पर तुमसे यह चाहता हूं कि तुम सुल्तान के पास न जाओ, क्योंकि वह इंसाफ नहीं करेगा और न इस बात की उम्मीद रखो कि मैं इस गांव का सरदार बनूंगा, क्योंकि ईमानदार सेवक कभी नहीं चाहता कि वह एक छिन के लिए भी बदमाश सरदार बने। अगर तुम मुझसे प्रेम करते हो तो मुझे आज्ञा दो कि मैं तुम्हारे बीच रहकर तुम्हारे सुख-दुख का साझीदार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बनूं और तुम्हें खेतों के सुधार और सुखों का रास्ता दिखाऊं।"

यह कहकर खलील उस मकान से निकला। सब लोग उसके पीछे-पीछे हो लिये। जब वे गिरजा के पास पहुंचे तो खलील एक पैगंबर की तरह वहां ठहर गया और लोगों से बोला, "भाइयो, आज रात हम अब्बास के घर पर इसलिए इकट्ठे हुए थे कि सुबह की रोशनी को देखें। वह रोशनी हमें दिखाई दी है। अब जाओ और अपने-अपने बिस्तरों पर जाकर सो जाओ!" और खलील, राहील और मरियम के पीछे-पीछे उनके मकान चला गया। लोग अपने-अपने घर चले गये।

: ५ :

दो महीने बीत गये। खलील हर रोज गांववालों को उनके अधिकार और कर्तव्य समझाता रहता। गांववाले उसकी बातें सुनकर सुख अनुभव करते और खुशी-खुशी अपनी खेती-बाड़ी का काम करते। इधर शेख अब्बास कुछ पागल-सा हो गया। वह अपने मकान में इस तरह घूमता-फिरता था, जैसे पिंजरे के अंदर चीता।

आखिर एक दिन वह मर गया।

किसानों में उसकी मृत्यु के कारणों के संबंध में मतभेद था। कुछ कहते थे कि उसका दिमाग फिर गया था। कुछ का ख्याल था कि उसने जिंदगी से मायूस और दुःखी होकर जहर खा लिया, मगर जो स्त्रियां उसकी पत्नी को सांत्वना देने के लिए जाती थीं, वे वापस आकर बताती थीं कि शेख डर के मारे मर गया; क्योंकि राहील का मृत पति समआन आधी रात के समय खून में सने हुए कपड़ों में उसे दिखाई देता था।

खलील और मरियम के बीच जो मुहब्बत पैदा हो गई थी, उसकी जानकारी जब गांववालों को हुई तो उन्हें बड़ी खुशी हुई और उन्होंने उनकी शादी बड़ी धूमधाम से कर दी। अब खलील सचमुच उन्हीं में से एक बन गया था।

जब फसल की कटाई के दिन आये तो किसानों ने खेतों में जाकर अनाज इकट्ठा किया। चूंकि अब शेख अब्बास नहीं था, इसलिए किसानों ने अपने कोठे गेहूं, ज्वार और जैतून से भर लिये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उन दिनों से लेकर आजतक उस गांव का हर आदमी सुख के साथ खेती-बाड़ी करता है और आनंद से अपनी मेहनत से पैदा किये बाग के फलों को जमा करता है। जमीन का मालिक वही है, जो उसमें खेती करता है।

आज इन घटनाओं को हुए आधी सदी बीत चुकी है। जब कोई बटोही उस रास्ते से गुजरता है तो वह उस गांव के लोगों की खूबियां देखकर दंग रह जाता है। वह देखता है कि मामूली झोंपड़ों की जगह सुंदर मकान बन गये हैं और उनके आसपास हरे-भरे खेत और लहलहाते बाग बहुत शोभा देते हैं।

अगर शेख अब्बास का इतिहास पूछें तो गांव का आदमी टूटे हुए एक पत्थर के पास ले जायेगा, जिसके आसपास की दीवारें गिर चुकी हैं, और कहेगा, "यह है शेख अब्बास का आलीशान महल और यही है उसका इतिहास!" और अगर पूछें कि खलील का इतिहास क्या है तो वह अपना हाथ आकाश की ओर उठाकर कहेगा, "हमारा प्यारा खलील वहां रहता है, मगर उसकी कहानी हमारे पुरखों ने हमारे दिलों के पन्नों पर लिख रखी है, जिसे समय नहीं मिटा सकता।" ○

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

६

पागल जान

गर्मियों के दिनों में जॉन हर रोज तारों की छांव में बैलों और बछड़ों को लिए, कंधों पर हल रखे, कोयल की कूक और हवा की लहरों से खेलते हुए पत्तों की सरसराहट पर कान लगाये खेत की ओर जाता। दोपहर को उन हरे-भरे खेतों की निचली ओर बहते हुए झरने के किनारे बैठकर भगवान का दिया खाता और रोटी के बचे-खुचे टुकड़े पंछियों के लिए घास पर डाल देता। जब शाम होती और डूबता हुआ सूरज दुनिया की रोशनी भी अपने साथ ले जाता तो अपने छोटे-से घर की ओर लौटता, जो उत्तरी लेबनान में खेतों और गांवों के पास बसा हुआ था। भोजन के बाद वह अपने बूढ़े मां-बाप के पास चुपचाप बैठकर उनकी बातें सुनता, जो आमतौर पर दुनिया की बीती हुई घटनाओं के बारे में होती। आखिर में जब उसे आराम और नींद की जरूरत महसूस होती तो वह सो जाता।

जाड़ों में हाथ तापने के लिए वह दीवार के सहारे आग के पास बैठ जाता और हवा का रोना-पीटना सुनता, ऋतुओं के बदलने पर विचार करता और छोटी-सी खिड़की में से बरफ से ढंकी हुई घाटियों एवं बिना पत्तियों के पेड़ों को देखता। वे पेड़ ऐसे मालूम होते थे, मानो वह फकीरों और दरिद्रों की एक जमात है, जो हवा के तेज और भयंकर झोंकों और सर्दी के बर्फीले जबड़ों में फंसी हुई सिसक रही है।

जाड़े की लंबी रातों में जबतक जॉन के मां-बाप सो न जाते तब तक वह जागता रहता और उनके सो जाने के बाद वह लकड़ी की एक मोटी-झोटी आलमारी में से बाइबिल निकालता और टिमटिमाते हुए दीये की रोशनी में उसे छुपकर पढ़ता। उस पाक पुस्तक का पढ़ना पादरियों ने मना कर दिया था, इसलिए उसे पढ़ते समय जॉन बड़ी सावधानी बरतता।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पादरियों ने वहां के सीधे-सादे देहातियों को उस पुस्तक का इस्तेमाल न करने की ताकीद कर दी थी; और यह धमकी दी थी कि अगर किसी के पास यह पुस्तक पायी गयी तो उसे धर्म से बहिष्कृत कर दिया जायगा।

इस प्रकार जॉन ने अपनी जवानी भगवान की उस सुंदर भूमि और रोशनी और सचाई से भरी हुई बाइबिल की पढ़ाई में बिता दी। जॉन बड़े शांत स्वभाव का संतोषी युवक था। वह हमेशा अपने मां-बाप की बातें ध्यान से सुनता और बीच में एक शब्द भी मुंह से न निकालता या कोई सवाल उनसे न पूछता। जब वह अपने संगी-साथियों या दोस्तों के साथ बैठा होता तब वह चुपचाप क्षितिज की ओर देखता रहता और उसके विचार उसकी निगाह की तरह दूर-दूर तक पहुंच जाते। जब-जब वह गिरजा में जाता तो हर बार वह मायूस होकर घर लौटता; क्योंकि वहां पादरी लोग जो बातें सुनाते, वे बाइबिल में दी हुई सिखावन से बिलकुल जुदा होती और उन पादरियों की जिंदगी उतनी बढ़िया नहीं होती थी, जिसके बारे में ईसामसीह ने कह रखा है।

: २ :

वसंत ऋतु आयी और खेतों और घाटियों की बरफ पिघल गयी। उसका जो थोड़ा-बहुत हिस्सा पहाड़ों की चोटियों पर रह गया था, वह भी पिघल-पिघलकर छोटी-छोटी नहरों की शकल में घाटियों में पहुंच रहा था और मौजें मारते हुए भारी प्रवाह के रूप में अपनी गड़गड़ाहट से प्रकृति की जागृति का एलान कर रहा था। बादाम और सेब के पेड़ फूलों से लद गये; चिनार और बेद की शाखाओं में कोंपलें फूटने लगीं और प्रकृति ने अपनी आनंददायी और रंगबिरंगी पोशाक देहातों पर फैला दी।

जॉन आग के पास बैठकर दिन बिताने से ऊब गया था। वह जानता था कि उसके बैल चरागाहों में जाने के लिए बहुत बेचैन हैं, इसलिए उसने अपने ढोरों को बाड़े से निकाला और उन्हें खेतों की ओर ले गया। उसने अपने चोगे के नीचे अपनी बाइबिल को छिपा लिया था—इस डर से कि कहीं कोई देख न ले। चलते-चलते वह एक सुहावने चरागाह में पहुंचा जो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संत एलिजा मठ[1] के खेतों के पास था। यह मठ नजदीक की एक पहाड़ी पर शान से खड़ा था। जब ढोर घास चरने लगे तो जॉन एक चट्टान से कमर लगाकर बैठ गया और अपनी बाइबिल की पोथी पढ़ने लगा। साथ ही इस दुनिया में रहनेवाली प्रभु की औलाद के दुःखों और स्वर्ग की सुंदरता के विषय में सोचने लगा।

वह लेंट[1] का आखिरी दिन था। उपवास के कारण गांव के लोगों को कई दिनों से गोश्त खाने का मौका नहीं मिला था। इसलिए वे बड़ी बेचैनी से ईस्टर की राह देख रहे थे। मगर दूसरे बहुत-से गरीब किसानों की तरह जॉन उपवास के दिनों और साल के दूसरे दिनों में कोई फर्क नहीं समझता था। उसके लिए उसका सारी जिंदगी ही एक लंबा लेंट थी। उसके खाने में सिर्फ रूखी-सूखी रोटी होती थी, जो हृदय की व्यथा एवं माथे के पसीने में गूँधी हुई होती थी; या फिर कुछ फल होते थे, जिन्हें वह अपने शरीर का खून देकर खरीदता था। लेंट के दिनों में वह सिर्फ उस रूहानी खुराक की इच्छा करता था, जो उसके दिल में उस मानव पुत्र (ईसा) के दुःख का और इस दुनिया में उसकी जिंदगी के खात्मे के बारे में हैरानी से भरे विचार लाती थी।

पंछी चहचहाते हुए जॉन के सिर पर मंडरा रहे थे। कबूतरों के झुंड आकाश में उड़ रहे थे। फूल हवा की लहरों पर झूम रहे थे, मानो सूरज की चमकती रोशनी से खुश हो रहे हों।

बाइबिल को पढ़ने और उसके बारे में सोचने में जॉन मगन था। बीच-बीच में वह अपना सिर उठाकर आसपास के गांव में फैले हुए गिरजों के गुंबदों को देखता और घंटियों की लय सुनता। कभी-कभी वह अपनी आंखें बंद कर लेता और सपनों के पंखों पर सवार होकर ईसामसीह के बताये हुए रास्ते से पुराने यरुसलम पहुंच जाता और भगवान ईसा के बारे

---

१. यह धनी मठ उत्तरी लेबनान में है। इसके अपने कई खेत हैं। इस मठ में सनेकों पादरी रहते हैं, जिन्हें एं लेपोन्स कहते है।

१, लेंट : ईसाइयो में ईस्टर से पहले चालीस दिन का उपपास, जो ईसा के उपवास के उपलक्ष्य में किया जाता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में उस शहर के रहनेवालों से पूछताछ करता। इस पर वे लोग उससे कहते, "यहां उसने (ईसा ने) लकवे के बीमार को ठीक किया था, अंधों को आंखें दी थीं और वहां उन्होंने (लोगों ने) उसके लिए कांटों का ताज बनाकर उसके सिर पर रखा था; उस ड्योढ़ी में से उसने जनता को अच्छी-अच्छी मिसालें देकर उपदेश दिया था; उस महल में उन्होंने उसे संगमरमर के खम्भों से बांधकर कोड़े लगाये थे; इस सड़क पर उसने व्यभिचारिणी को उसके पापों के लिए क्षमा कर दिया था और उस जगह पर वह अपने सलीब के बोझ से दबकर जमीन पर गिर पड़ा था।"

: ३ :

एक घंटा बीत गया। भगवान के साथ जॉन जिस्मानी तकलीफ को महसूस कर रहा था और रूहानी निगाह से ऊंचा उठता जा रहा था। इतने में दोपहर हो गई। वह अपनी जगह से उठा। उसने चारों ओर देखा; पर उसे अपने बैल कहीं दिखाई नहीं दिये। इसलिए वह उन्हें खोजने निकला। ढूंढ़ते-ढूंढ़ते वह उस रास्ते तक पहुंचा, जो आसपास के खेतों में जाता था। वहां उसने देखा कि पास ही एक आदमी बगीचे में खड़ा है। जब जॉन उसके पास पहुंचा तो उसने देखा कि वह आदमी मठ का पादरी है। इसलिए उसने बड़े आदर के साथ उसके सामने सिर झुकाकर नमस्कार किया और उससे पूछा, "क्या आपने मेरे बैलों को कहीं देखा है?"

पादरी के चेहरे से ऐसा लगता था कि वह अपने गुस्से को रोके हुए है। उसने कहा, "हां, मैंने देखा है। मेरे पीछे-पीछे आ, मैं तुझे उन्हें दिखा दूं।"

जब वे दोनों मठ में पहुंच गये तो वहां जॉन ने देखा कि एक अहाते में उसके बैल रस्सों से बंधे हुए हैं और एक पादरी उनकी निगरानी कर रहा है। उस पादरी के हाथ में एक मोटा-सा डंडा था और जैसे ही कोई जानवर इधर-उधर हिलता, वह उसकी पीठ पर डंडा जमा देता। यह देखकर उन बेबस जानवरों को छुड़ाने के लिए जॉन आगे बढ़ा। मगर पादरी ने उसका चोगा पकड़ लिया और मठ की तरफ मुंह करके वह जोर-जोर से चिल्लाने लगा, "यह रहा गुनहगार चरवाहा! मैंने उसे पकड़ लिया है।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह सुनते ही मठ के छोटे-बड़े पादरी वहां दौड़ते हुए पहुंचे और उन्होंने जॉन को घेर लिया। सबसे आगे लाट पादरी था। वह नज्जारा देखकर जॉन हक्का-बक्का रह गया। उसे ऐसा महसूस हुआ, मानो उसे गिरफ्तार कर लिया गया है।

उसने लाट पादरी से कहा, "मैंने ऐसा कोई कसूर नहीं किया है, जिससे मेरे साथ गुनहगार का-सा बर्ताव किया जाय।"

इस पर लाट पादरी ने गुस्से से कहा, "तेरे बैलों ने हमारे खेतों को बरबाद कर दिया है और अंगूर के बागों को नुकसान पहुंचाया है। इस नुकसान के लिए तू जिम्मेदार है, इसलिए जबतक तू हमारे नुकसान का एवज नहीं देगा, तबतक हम तेरे बैलों को नहीं छोड़ेंगे।"

जॉन ने कहा, 'मैं गरीब हूं। मेरे पास कानी कौड़ी भी नहीं है। मेरे जानवरों को मेहरबानी करके छोड़ दीजिए। मैं वादा करता हूं कि मैं आयंदा कभी उन्हें इन खेतों की ओर नहीं लाऊंगा।"

लाट पादरी एक कदम आगे बढ़ा और आसमान की तरफ हाथ उठा कर कहने लगा, "प्रभु ने हमें संत एलिजा की इस जमीन का रखवाला तैनात किया है और हमारा यह फर्ज है कि अपनी पूरी ताकत के साथ हम इसकी हिफाजत करें; क्योंकि यह जमीन पाक है और आग की तरह वह उसे जलाकर खाक कर देगी, जो इसमें जबर्दस्ती आयेगा। तूने प्रभु का जो जुर्म किया है उसकी भरपाई अगर तू नहीं करेगा तो तेरे बैलों ने जो घास खायी है, वह उनके पेट में जहर बन जायगी और उनका नाश कर देगी।"

इतना कहकर लाट पादरी वापस जाने के लिए तैयार हुआ; पर जॉन ने उसका पल्ला पकड़ा और गिड़गिड़ाकर कहने लगा, "भगवान यीशु और सारे संतों के नाम पर मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि आप मुझे और मेरे जानवरों को रिहा कर दें। मुझ पर कृपा कीजिए; क्योंकि मैं गरीब हूं और मठ की तिजोरियां सोने-चांदी से भरी हुई हैं। मेरे गरीब और बूढ़े मां-बाप पर दया कीजिए, जिनकी जिंदगी मुझ पर मुनहसिर है। अगर मैंने आपका कोई नुकसान किया हो तो भगवान मुझे माफ कर देंगे।"

लाट पादरी ने जॉन की तरफ निष्ठुरता से देखा और कहा, "तू गरीब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है या अमीर, इससे मठ को कुछ लेना-देना नहीं है। यह मठ तुझे माफ नहीं कर सकता। अगर तू अपने बैलों को छुड़ा ले जाना चाहता है, तो तुझे मठ को तीन दीनार देने पड़ेंगे।"

जॉन ने कहा, "मेरे पास एक कौड़ी भी नहीं है। एक गरीब चरवाहे पर मेहरवानी कीजिए।"

इस पर लाट पादरी कड़ककर बोला, "तो फिर तुझे अपनी जायदाद का कुछ हिस्सा बेचकर तीन दीनार लाने होंगे, क्योंकि संत एलिजा के गुस्से का शिकार बनकर नरक में जाने की बनिस्बत जमीन-जायदाद से महरूम होकर स्वर्ग में जाना ज्यादा अच्छा है।"

इस पर दूसरे पादरियों ने सिर हिलाकर हामी भरी। थोड़ी देर की स्तब्धता के बाद जॉन का चेहरा चमकने लगा। उसकी आंखों की ओर देखने से ऐसा लगने लगा, मानो अब उसके हृदय में और लाचारी बिलकुल नहीं रही है। उसने अपना सिर ऊपर उठाया और निडरता के साथ लाट पादरी की ओर देखता हुआ वह बोला, "क्या कमजोर गरीब लोग मठ की जायदाद में और ज्यादा सोना बढ़ाने के लिए अपनी उन छोटी-मोटी चीजों को बेच दें, जिनसे वे अपना पेट किसी तरह पाल सकते हैं? क्या यही इन्साफ है कि संत एलिजा से बैलों को उनकी मासूमियत की माफी दिलवाने के लिए गरीबों को कुचल दिया जाय और उन्हें ज्यादा गरीब बनाया जाय?"

लाट पादरी ने सिर उठाकर आकाश की ओर देखा और कहा, "प्रभु की पुस्तक में लिखा है कि जिसके पास बहुत हो, उसे और ज्यादा दिया जाय और जिसके पास कुछ न हो, उससे छीन लिया जाय!"

ये शब्द सुनते ही जॉन आपे से बाहर हो गया और जिस तरह दुश्मन के खिलाफ कोई सिपाही म्यान में से तलवार निकालता है, उसी तरह उसने अपनी जेब में से बाइबिल निकाली और ललकारकर कहा, "ऐ पाखंडियो, भगवान ईसामसीह की सिखावन को तुम लोग इसी तरह तोड़ते-मरोड़ते हो; और इसी तरह अपनी बुराइयों को फैलाने के लिए तुम लोग जिंदगी की पाक परंपराओं को खराब करते हो।...लानत है तुम पर! जब वह मानवपुत्र फिर से आयेगा, तो तुम्हारे मठ को मिट्टी में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मिलाकर उसका मलबा वादी में फेंक देगा और तुम्हारे मंदिरों और वेदियों को जलाकर खाक कर देगा। धिक्कार है तुम पर! जब ईसामसीह का कोप तुम पर होगा तो तुम नरक की गहराइयों में फेंक दिये जाओगे। लानत है तुम पर, ओ अपनी वासना के बुतों को पूजनेवालो, जो अपने काले कपड़ों के अंदर अपने दिल की कुरूपताओं को छिपाते हो। धिक्कार है तुम पर ऐ ईसा के दुश्मनो, तुम अपने होंठ प्रार्थना के लिए हिलाते हो, लेकिन उसी समय तुम्हारे दिल लालसाओं से भरे होते हैं। लानत है तुम पर, जो वेदियों के सामने अपने जिस्मों को तो झुकाते हो, पर उसी के साथ तुम्हारी आत्माएं प्रभु के खिलाफ बगावत करती हैं। मैंने और मेरे पुरखों ने जो जमीन तुम्हें दी थी, उसमें पैर रखने के जुर्म में तुमने मुझे जो सजा दी है, उस पाप से खुद तुम्हीं खराब हो गये हो। जब मैंने ईसा के नाम पर दया की मांग की तो तुमने मेरा मजाक उड़ाया। यह किताब ले लो और हंसनेवाले अपने इन पादरियों को बता दो कि उस प्रभु के पुत्र ने माफ करने से कब इंकार किया था?...लो पढ़ो यह स्वर्ग की त्रासदी और इन्हें बतला दो कि ईसामसीह ने कब यह कहा था कि दूसरों पर दया या मेहरबानी मत करो—फिर भले ही वह पहाड़ी पर दिया हुआ प्रवचन हो या मंदिर में की हुई तकरीर! क्या उसने उस व्यभिचारिणी को उसके पापों के लिए माफ नहीं किया था? क्या इंसानियत को गले लगाने के लिए उसने सलीब पर अपनी बांहें नहीं फैलायी थीं? गर्दिश के मारे हमारे घरों को देखो, जहां बीमार लोग सख्त बिस्तरों पर कराहते रहते हैं।...जेलों के सीखचों के पीछे झांको, जहां बेकसूर इंसान नाइंसाफी और जुल्मों का शिकार बना हुआ है।...उन भिखारियों को देखो, जो भीख मांगने के लिए हाथ फैलाये हुए हैं, जो अपने दिलों में जलील हुए हैं और जिनके जिस्म टूटे हुए हैं।...अपने गुलाम अनुयायियों के बारे में जरा सोचो तो सही कि उधर वे भूख से तड़प रहे हैं और इधर तुम लापरवाही से ऐशो-इशरत की जिंदगी बसर कर रहे हो...उनके बागों के फल खाकर और अंगूरों की शराब पीकर तुम मौज उड़ा रहे हो! तुमने कभी किसी दुःखी से भेंट नहीं की, न किसी मायूस को ढांढस बंधाया, न भूखे को खाना दिया। तुमने कभी किसी मुसाफिर को पनाह नहीं दी और न किसी अपाहिज

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के साथ हमदर्दी दिखाई। फिर भी हमारे बाप-दादाओं से तुमने जो कुछ हड़प किया है, उससे तुम्हें संतोष नहीं है। जहरीले नाग के फन की तरह तुम अपने हाथ फैलाते हो और नरक का डर दिखाकर उस बेवा का बचाया हुआ थोड़ा-सा पैसा छीन लेते हो, जो उसने खून-पसीना एक करके जमा किया होता है। इसी तरह गरीब किसान अपने बच्चों को जिंदा रखने के लिए अपना पेट काटकर जो कुछ बचाता है, उसे भी तुम धर्म के नाम पर चुरा लेते हो।"

जॉन ने एक गहरी सांस ली। फिर अपनी आवाज को धीमा किया और शांति से बोला, "तुम लोग बहुत हो और मैं अकेला हूं। जो जी चाहे, तुम मेरे साथ कर सकते हो। रात के अंधेरे में भेड़िये मेमने को फाड़कर खा जाते हैं, मगर उसके खून के धब्बे घाटी के पत्थरों पर दिन निकलने तक बाकी रहते हैं और सूरज सबको उस गुनाह की खबर कर देता है।"

जॉन की बातों में एक जादूभरी ताकत थी, जिसने पादरियों का ध्यान खींच लिया और उनके दिलों में भारी गुस्सा भर दिया। मारे गुस्से के वे कांप रहे थे और दांत पीस-पीस कर सिर्फ अपने अफसर के हुक्म की राह देख रहे थे कि हुक्म मिलते ही वे जॉन पर टूट पड़ें और उसे पीसकर रख दें। जरा-सी देर की खामोशी ऐसी लग रही थी जैसे खेतों और बागों को बरबाद कर देनेवाली आंधी के रुकने के बाद छाई हुई शांति हो। उसके बाद लाट पादरी ने चिल्लाकर हुक्म दिया, "इस बदमाश गुनहगार को पकड़ लो और इसके हाथ से यह किताब छीनकर उसे काल-कोठरी में डाल दो, क्योंकि जो कोई परमेश्वर के पाक नुमाइंदों को बुरा-भला कहता है, अल्लाह के प्यारों की बेअदबी करता है, उसे न तो इस दुनिया में माफ किया जायगा और न उस दुनिया में।"

यह सुनते ही सारे पादरी जॉन पर टूट पड़े और मुश्कें कसकर उसे एक तंग कोठरी में ले गये, जहां उन्होंने उसे बंद कर दिया।

जॉन ने जो हिम्मत दिखाई, उसकी कल्पना वे लोग नहीं कर सकते और न उसे समझ सकते हैं, जो 'शाम की दुलहिन' या 'बादशाह के मुकुट का मोती' कहलानेवाले उस गुलाम देश (लेबनान) को अपने कब्जे में करने, उसे धोखा देने या उस पर जुल्म ढाने में अत्याचारियों के साथ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शामिल होते हैं।

उस कोठरी में पड़े-पड़े जॉन उस दुःख के बारे में सोचने लगा, जो उसके देशवासियों को भुगतना पड़ रहा था और जिसके विषय में उसे अभी-अभी बहुत-कुछ मालूम हो चुका था। वह हमदर्दी से मुस्कराया। उसकी मुस्कराहट में वेदना और कटुता मिली हुई थी। वह ऐसी मुस्कराहट थी, जो दिल को बेधकर पार हो जाती है, जो आत्मा को दम घोंटनेवाली निरर्थकता तक पहुंचाती है, जो निराधार छोड़ी जाने पर आंखों में उतर आती है और असहाय बनकर गिर पड़ती है।

उसके बाद जॉन गर्व के साथ उठ खड़ा हुआ और उस छोटे-से झरोखे में से झांकने लगा, जो सूर्य के प्रकाश से भरी हुई घाटी की ओर था। उसे ऐसा महसूस हुआ, मानो एक प्रकार का आध्यात्मिक आनंद उसकी आत्मा से लिपट रहा है और उसका अंतर मधुर शांति से भरा हुआ है। उन लोगों ने उसके शरीर को बंदी बना रखा था; परंतु उसकी आत्मा आजाद थी, जो हवा की लहरों पर सवार होकर पहाड़ों की चोटियों तथा मैदानों में खुलकर संचार कर रही थी। ईसामसीह के प्रति उसके प्रेम में जरा भी फर्क नहीं आया और उन लोगों द्वारा दिये गए कष्टों से उसके हृदय की शांति में बाधा नहीं पड़ी; क्योंकि जो सचाई का पक्ष लेता है, उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। उत्पीड़न उसे दबा नहीं सकता। क्या सुकरात ने गर्व के साथ जहर का प्याला नहीं पिया? क्या संत पॉल ने सचाई की खातिर पत्थर नहीं खाये? असल में, जब हम अपनी अंतरात्मा की आवाज नहीं सुनते तो वह हमें तकलीफ देती है और जब हम उसके साथ दगाबाजी करते हैं, तो वह हमें मार डालती है।

: ४ :

जॉन के कारावास और उसके जानवरों की जब्ती की सूचना जब उसके मां-बाप को दी गई तो उसकी बूढ़ी मां लकड़ी के सहारे मठ तक पहुंच गई। लाट पादरी के सामने नमस्कार करके उसने उसके पैर चूमे और अपने इकलौते बेटे पर दया करने के लिए वह गिड़गिड़ाने लगी। तब लाट पादरी ने आदर से अपना मस्तक ऊपर उठाया और आकाश की ओर देखता हुआ वह बोला, "हम तेरे बेटे को उसके पागलपन के लिए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माफ कर देंगे, पर संत एलिजा के संतों में जो गैर मुनासिब तरीके से घुसता है उसे वह कभी माफ नहीं करेगा।"

जॉन की माता ने लाट पादरी की ओर आंसू-भरी आंखों से देखा और अपने गले में से चांदी का लाकेट निकालकर लाट पादरी को देते हुए कहा, "यही मेरी सबसे ज्यादा कीमती चीज है, जो मेरी मां ने मेरे विवाह के मौके पर भेंट में मुझे दी थी।...क्या मेरे बेटे के पाप के प्रायश्चित्त के तौर पर आप इसे मंजूर करेंगे ?"

लाट पादरी ने वह लाकेट ले लिया और अपनी जेब में रख दिया। तब जॉन की बूढ़ी मां ने उसके हाथों को चूमकर धन्यवाद दिया और अपना अहसान जाहिर किया। उसकी ओर देखकर लाट पादरी बोला, "बुरा हो इस पापी जमाने का ! तुम लोग धर्मग्रंथ की उक्तियों को तोड़-मरोड़कर बच्चों के दिमाग खराब कर देते हो, जिसकी सजा मां-बाप को भुगतनी पड़ती है। बच्चे कच्चे फल खाते हैं और दांत खट्टे होते हैं मां-बाप के। ओ भली औरत, तू चली जा और अपने पागल बेटे के लिए भगवान से प्रार्थना कर कि वह उसके दिमाग को ठीक कर दे।"

जॉन कैदखाने से बाहर निकला और अपने बैलों को हांकता हुआ अपनी मां के साथ चुपचाप चलने लगा। जब वे अपने टूटे-फूटे झोंपड़े में पहुंचे तो जॉन ने ढोरों को बाड़े में बंद कर दिया और खुद खिड़की के पास बैठकर छिपते सूरज को देखते हुए सोच में डूब गया। थोड़ी देर बाद उसने सुना कि उसका बाप उसकी मां से धीरे-धीरे कह रहा था, "सारा, मैंने कई मरतबा तुमसे कहा था कि जॉन पागल है; पर तुमने मेरी बात पर यकीन नहीं किया। अब तुमने जो कुछ देखा-सुना है, उसके कारण तुम मुझसे सहमत होगी; क्योंकि लाट पादरी ने आज तुमसे वही बात कही है, जो मैंने बरसों पहले कह रखी थी।"

जॉन सुदूर क्षितिज को ताकता रहा, जहां सूरज डूब रहा था।

: ५ :

ईस्टर का त्योहार आ गया और ठीक उसी समय बशेरी नामक शहर में एक नया गिरजा खड़ा हो गया। वह उपासना-स्थान ऐसा शानदार था कि मालूम होता था, मानो गरीब प्रजा की झोपड़ियों के बीच बादशाह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का कोई महल खड़ा हो। शहर के लोग बड़े पादरी के स्वागत की तैयारियों में लगे हुए थे। जो नये गिरजे के विधिवत उद्घाटन की धार्मिक क्रियाएं करनेवाला था, उस धर्माध्यक्ष की राह देखते हुए हजारों लोग कतारें बांधे सड़कों पर खड़े थे। झांझों की आवाज में सुर मिलाकर पादरी मंत्र बोल रहे थे और सड़क के किनारे खड़े हुए लोग भजन गा रहे थे। उनकी आवाजों से आकाश गूंज उठा था।

आखिरकार धर्माध्यक्ष आ पहुंचा। वह एक आलीशान घोड़े पर सवार था, जिसका जीन सोने से जड़ा हुआ था। जैसे ही वह घोड़े से नीचे उतरा, पादरियों और राजनेताओं ने बड़े तपाक से उसका स्वागत किया और उसकी स्तुति में अच्छे-अच्छे भाषण दिये। उसके बाद उसे नये गिरजे की ओर ले जाया गया, जहां उसने खास उसी के लिए बनवाये गये रेशमी कपड़े पहने, जिन पर जरी का काम किया हुआ था और चमकदार रत्न जड़े हुए थे। फिर उसने सोने का मुकुट अपने सिर पर रख लिया और हाथ में जवाहिरात से जड़ा डंडा पकड़ा। जब उसने वेदी की परिक्रमा शुरू की, तब उसके पीछे-पीछे कई पादरी और दूसरे लोग हो लिए, जो हाथों में जलती मोमबत्तियां पकड़े थे और धूप जलाते जाते थे।

उस समय दूसरे किसानों के साथ जॉन भी वह समारोह देखने के लिए द्वार-मंडप में खड़ा था। उसकी आंखें दुःख से भरी हुई थीं और वह ठंडी आहें भर रहा था; क्योंकि वह दृश्य देखकर उसकी आत्मा तड़प रही थी। वहां एक तरफ बहुत ही मूल्यवान कपड़े, कीमती मुकुट, रत्नों से जड़ा डंडा, सोने-चांदी के बर्तन और दूसरी गैर जरूरी फिजूलखर्ची की बातें थीं और दूसरी तरफ आसपास के गांवों से वह समारोह देखने के लिए आये हुए गरीब किसान थे, जो गरीबी के शिकंजे में फंसे हुए होने के कारण दुःखी थे। उनके फटे-पुराने कपड़े और उदास चेहरे उनकी दुर्दशाग्रस्त स्थिति को प्रकट कर रहे थे।

एक तरफ धनी पादरी बड़े-बड़े तमगे और फीते लगाकर अलग खड़े जोर से प्रार्थना कर रहे थे, दूसरी तरफ दुःखी गांववाले एक ओर खड़े होकर सच्चे दिल से प्रार्थना कर रहे थे, जो उनके टूटे दिलों से निकल रही थी।

उन पादरियों और नेताओं का अधिकार हमेशा हरे-भरे रहनेवाले

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चिनार के पत्तों की तरह बेरोक था और उन किसानों का जीवन उस किश्ती के समान था, जिसका मल्लाह मर चुका है, जिसकी पतवार टूट गई है, जिसके पालों को तेज हवा ने फाड़ दिया है और जो खतरनाक सागर में उठनेवाली भयावनी लहरों और जोरदार आंधी में डांवाडोल हो रही है।

जुल्म और अंधी गुलामी ! अत्याचार और अज्ञान से भरी अधीनता!—इनमें से कौन किसको जन्म देता है? क्या अत्याचार या अत्याचारी शासन वह मजबूत पेड़ है, जो निचली जमीन में नहीं उगता ? या अधीनता वह उजाड़ खेत है, जिसमें सिर्फ कांटे-ही-कांटे उगते हैं ?...ऐसे-ऐसे विचार जॉन के मन में उठ रहे थे, जब वह समारोह चल रहा था। उसने अपने दोनों हाथों से अपनी छाती को दबा लिया, मानो उसे डर लग रहा था कि विरोधी शक्तियों के उस दुःख में लोगों की दुर्दशा देखकर उसकी छाती फट जायगी।

कठोर मानवता के नष्ट होनेवाले उन जीवों को उसने देखा, जिनके हृदय सूखे थे और जिनके बीज अब जमीन के पेट में सहारा खोज रहे थे, जैसे कि निराधार यात्री नये संसार में पुनर्जन्म की इच्छा रखते हैं।

अंत में जब वह झूठी धूमधाम खत्म हुई और सब लोग अपने-अपने घर जाने की तैयारी करने लगे तो जॉन को ऐसा लगा, एक अज्ञात शक्ति उन कुचले गए गरीबों की ओर से बोलने के लिए उसे विवश कर रही है। वह उस मैदान के एक छोर पर चला गया और उसने अपने हाथ ऊपर आसमान की ओर उठाये। थोड़ी ही देर में उसके चारों ओर लोग जमा हो गये। तब उसने अपना मुंह खोला और वह कहने लगा, "ऐ प्यारे ईसा, प्रकाश-पुंज के बीच बैठे हुए ऐ मसीहा, मेरी बात ध्यान से सुन ! नीले गुंबद के पीछे से इस दुनिया को देख और यह देख ले कि किस तरह कांटों ने उन फूलों के गले घोंट दिये हैं, जिन्हें तेरे सत्य ने उगाया था।

"ऐ नेक चरवाहे, भेड़ियों ने उन दुर्बल मेमनों को अपना शिकार बना दिया है, जिन्हें तूने अपनी गोद में उठाया था। तेरा शुद्ध लहू उस जमीन के पेट में बहा दिया गया है, जिसे तेरे चरणों ने पाक बनाया था। यह अच्छी दुनिया तेरे दुश्मनों द्वारा ऐसा युद्ध-क्षेत्र बनाई गई है, जहां

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बलवान निर्बलों को पीस डालता है। सिंहासनों पर बैठकर तेरा उपदेश प्रचारित करनेवालों को अभागियों का आक्रोश और बेबसों का विलाप अब सुनाई नहीं दे रहा है। तूने जिन मेमनों को इस दुनिया में भेज दिया था वे अब भेड़िये बन गए हैं और उन मेमनों को खा रहे हैं, जिन्हें तूने अपने कंधों पर उठाया था और आशीर्वाद दिया था।

"वह प्रकाश-शब्द, जो तेरे अन्तःकरण से निकला था, धर्मग्रंथ से मिट गया है और उसकी जगह आत्मा को डरानेवाला खाली और भयावना शोरगुल आ गया है।

"ऐ मसीहा, इन लोगों ने अपनी शोहरत के लिए ये गिरजाघर बनाये हैं और उन्हें रेशम और सोने के पत्तरों से सजाया है।...तेरे प्यारे गरीबों के जिस्मों को उन्होंने जाड़े की रातों में फटे चीथड़ों में छोड़ दिया है।... उन्होंने जलती मोमबत्तियों और धूप के धुएं से आकाश को भर दिया है और तेरे ईमानदार भक्तों के पेट खाली हैं।...उन्होंने तेरे स्मृतियों के स्वरों से सारा वायुमंडल गूंजा दिया है; परन्तु विधवाओं और अनाथों के शोक-विलाप की ओर से उन्होंने अपने कानों को बिलकुल बहरा बना दिया है।

"फिर से आ जा, ऐ चिरंजीवी ईसा, तू आ जा और अपने पवित्र मंदिर से इन धर्म बेचनेवालों को निकाल बाहर कर; क्योंकि उन्होंने उस मंदिर को एक अंधेरी गुफा बना दिया है, जिसमें ढोंग और झूठ के जहरीले सांप रेंग रहे हैं और भीड़ लगाये हुए हैं।"

जॉन के दृढ़ एवं सच्चे शब्द लोगों को अच्छे लगे और अपनी फुस-फुसाहट से उन्होंने अपनी स्वीकृति जतलाई। बड़े पादरियों की निक-टता उसे दबा नहीं सकी। अपने पहले के अनुभव की स्मृतियों से अधिक शक्तिशाली बनकर वह ज्यादा हिम्मत के साथ आगे बोलता गया, "आ जा ऐ मसीहा, आ जा और उन बादशाहों से अपना हिसाब चुकता करवा ले, जिन्होंने कमजोरों से वह सबकुछ छीन लिया है, जो कमजोरों का था और भगवान से वह सबकुछ छीन लिया है, जो भगवान का था। वह अंगूर की बेल, जिसे तूने अपने दाहिने हाथ से लगाया था, लालच के कीड़ों ने खा डाली है और उसके गुच्छे नीचे गिरकर कुचल गये हैं। तेरे शांतिपुत्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अब अलग-अलग गुटों में बंट गये हैं और गरीब आत्माओं को सर्दियों-भरे खेतों में बदकिस्मती का शिकार बनाकर आपस में लड़-झगड़ रहे हैं। तेरी वेदी के सामने वे जोरशोर से प्रार्थना करते हैं और कहते हैं, 'कीर्ति तो आकाश में रहनेवाले परमेश्वर के लिए है और इस पृथ्वी पर रहनेवाले मनुष्यों के लिए है शांति और सदिच्छा!' आकाश में रहनेवाले हमारे पिता का नाम जब खाली दिलों, पापी होंठों और झूठी जबानों से निकलेगा तो क्या इससे उसकी कीर्ति बढ़ जायगी! जब दुर्भाग्य के पुत्र बलदानों को खिलाने और जालिमों के पेट भरने के लिए खेतों में अपना पसीना बहा रहे हों तो क्या इस संसार में शांति रह सकती है? क्या सचमुच कभी शांति आयेगी और उन्हें निर्धनता तथा अभाव के चंगुलों से बचायगी?

"शांति क्या है? क्या वह उन बच्चों की आंखों में है, जो सर्दी से ठिठुरनेवाली झोंपड़ियों में अपनी भूखी माताओं के सूखे स्तनों से चिपटे हुए हैं? या वह उन भूखे लोगों के बदनसीब झोंपड़ों में है, जो पत्थरों के फर्श पर सोते हैं और उस अन्न के एक कौर के लिए लालायित होते रहते हैं, जो गिरजाघर के पादरी अपने मोटे ताजे सूअरों के सामने डालते हैं?

"ऐ सुन्दरता के देवता ईसा, आनंद क्या है? जब कोई अमीर मौत का डर दिखाकर या चांदी के कुछ टुकड़ों के बदले में पुरुषों की शक्तिशाली भुजाएं और स्त्रियों की इज्जत खरीदता है तब क्या यह आनंद प्रकट होता है? या उन लोगों की शरण जाकर अपने शरीर और आत्मा को उनका गुलाम बनाने में आनंद है, जो अपने जगमगाते तमगों और सोने के मुकुटों से हमारी आंखों को चकाचौंध कर देते हैं? तेरे शक्ति के पुजारियों के विरुद्ध की जानेवाली हर शिकायत पर वे अपने तलवारों और भालोंवाले सिपाहियों से हमारी स्त्रियों और बच्चों पर हमला करवाते हैं और हमारा खून चूसते हैं।

"प्रेम और दया से परिपूर्ण ऐ ईसा, अपने मजबूत हाथों को आगे बढ़ाकर इन डाकुओं से तू हमें बचा ले; या फिर उस मौत को भेज दे, जो हमें इस हालत से बरी करके कब्र में पहुंचा दे, जहां हम तेरे सलीब की निगरानी में शांति के साथ विश्राम कर सकें। वहां हम तेरे लौटने की प्रतीक्षा करते रहेंगे। ऐ शक्तिशाली ईसा, यह जीवन गुलामी की एक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कालकोठरी के सिवा कुछ नहीं है।...यह भूत-प्रेतों की एक क्रीड़ास्थली है। यह एक गड्ढा है, जिसमें मौत के भूत-पिशाच रहते हैं। हमारे दिन सिर्फ तेज तलवारें हैं, जो रात के भयावने अंधेरे में हमारे विस्तरों की फटी-पुरानी रजाई के नीचे छिपी हुई होती हैं। सुबह के वक्त ये हथियार दैत्यों की तरह हमारे सिरों पर उठते हैं और कोड़ों की मार से खेतों में कराई जानेवाली गुलामी की ओर हमें इशारा करते हैं।

"ऐ ईसा, उन दवे हुए गरीबों पर दया कर, जो आज तेरे पुनर्जीवन का समारोह मनाने यहां आये थे।...उन पर तरस खा, क्योंकि वे दुखी और दुर्बल हैं।"

जॉन की ये वातें एक समूह को पसंद आईं और दूसरे को बुरी लगीं। एक दल बोला, "यह सच्ची वात कह रहा है और हमारी तरफ से भगवान के सामने फरियाद कर रहा है।" दूसरा दल बोला, "इस पर किसी ने बुरा जादू कर दिया है, क्योंकि यह शैतान की तरह बोल रहा है।" तीसरा दल वोला, "हमने आजतक ऐसी वकवास कभी नहीं सुनी—अपने बाप-दादा से भी नहीं सुनी! हमें चाहिए कि हम इसे बंद करवा दें।" एक आदमी अपने पासवाले व्यक्ति के कानों में धीरे से बोला, "जब मैंने इसकी बातें सुनीं तो मुझे ऐसा लगा, मानो मुझमें एक नई आत्मा का संचार हुआ है।" इस पर वह पासवाला व्यक्ति बोला, "मगर इसकी निस्वत पादरी लोग हमारी जरूरतों को ज्यादा अच्छी तरह जानते हैं। उनके प्रति अविश्वास करना पाप है।"

थोड़ी ही देर में [illegible], गर्जन की तरह चारों ओर से आवाजें उठने लगीं। तब उनमें से एक पादरी आगे बढ़ा। उसने जॉन को रोका और तुरंत सिपाहियों के हवाले कर दिया। तब उसे अधिकारी के महल में सुनवाई के लिए ले जाया गया।

जब उससे पूछताछ की जाने लगी तो उसने मुंह से एक भी शब्द नहीं निकाला; क्योंकि वह जानता था कि ईसामसीह ने अपने अत्याचारियों के सामने चुप्पी साध ली थी। अधिकारी ने जॉन को जेलखाने में डाल देने का हुक्म दिया। वहां उस रात को कारागार की दीवार के पत्थरों पर सिर रख कर वह शांति के साथ निर्मल अन्तःकरण से सो गया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दूसरे दिन जॉन का बाप अधिकारी के सामने हाजिर हुआ और दुःख-भरे स्वर में बोला, "हुजूर, मेरा यह बेटा पागल है। यह कई बार अकेले में ही बातें करता रहता है। वह ऐसी अजीब बातें करता है, जो किसी की समझ में नहीं आ सकतीं और न वैसा कुछ किसी को दिखाई दे सकता है। कई बार रात की खामोशी में बेकार शब्दों का प्रयोग करके वह बोलता रहता है। मैंने उसे कई मरतबा भूत-पिशाचों को बुलाते हुए सुना है, जैसे कि जादूगर बुलाता है। इस विषय में आप हमारे पड़ोसियों से भी पूछ सकते हैं। इससे बातें करने के बाद उनके मन में कोई शंका नहीं रही है कि यह पागल है, जब कोई इससे बोलता है तो यह उसका कोई जवाब नहीं देता; और जब यह खुद बोलता है तो मुंह से ऐसे गूढ शब्द और वाक्य निकालता है, जो सुननेवाले की समझ में नहीं आते और मूल बात से कोई ताल्लुक नहीं रखते। इसकी मां इसे अच्छी तरह जानती है। उसने इसे कई बार दूर क्षितिज की ओर टकटकी लगाये और झरनों, फूलों और सितारों के विषय में बच्चों की तरह जोश से बातें करते देखा है। उन पादरियों से पूछिए हुजूर, जिनके उपवास के दिनों में इसने उनके उपदेशों की कड़ी आलोचना करके हंसी उड़ाई थी। सरकार यह पागल तो है, मगर मुझ पर और अपनी मां पर बड़ी मेहरबानी की निगाह रखता है। हमारे बुढ़ापे के दिनों में यह हमारी बहुत मदद करता है। हमें भोजन और कपड़े देकर जिंदा और गर्म रखने के लिए यह जी-जान से काम करता है। आप हम पर तरस खाइए और उस पर दया कीजिये।"

अधिकारी ने जॉन को रिहा कर दिया और उसके पागलपन की खबर सारे गांव में फैल गई। जब लोग जॉन के बारे में बोलते तो उसका उल्लेख मजाक और उपहास के साथ करते। कुंवारी लड़कियां उसे दुःखभरी आंखों से देखतीं और कहतीं, "भगवान की लीला अपरंपार है।...इस युवक को देखो! कितना सुंदर है! मगर बेचारा पागल हो गया है। इसकी आंखें कैसी दयालु और तेजस्वी हैं, पर परमेश्वर ने उस तेज को उसकी अदृश्य आत्मा के अंधेरे के साथ जोड़ दिया है।

: ६ :

परमेश्वर के खेतों, हरेभरे चरागाहों और हरी घास तथा सुंदर फूलों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से सजी हुई पहाड़ियों की बगल में जॉन का भूत अकेला और बेचैन बैठा उन पशुओं को शांति के साथ चरते देख रहा है, जिन्हें मानव की ओर से कोई कष्ट नहीं पहुंच रहे हैं। उस घाटी के दोनों ओर फैले हुए गांवों को आंसूभरी आंखों से वह देखता है और गहरी आहें भरता हुआ कहता है, "तुम लोग बहुत हो और मैं अकेला हूं। रात के अंधेरे में भेड़िये मेमनों पर झपट पड़ते हैं, मग़र घाटी के पत्थरों पर पड़े हुए खून के धब्बे सुबह तक बने रहते हैं और उसकी खबर सूरज सारी दुनिया पर प्रकट कर देता है।"○

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

७

□ अद्‌भुत तथ्य

"शारीरिक जीवन के इस कैदखाने में आने से पहले हम कहां थे और क्या थे ?"

"ये समझदार, संज्ञाशील और शरीरों में बेचैन रहनेवाली आत्माएं हमारे शरीरों में आने से पहले कहां थीं और क्या थीं ? इससे पहले कि जमाना हमें निरर्थक आवाज बनाकर दुनिया में लाया, हम किस संतोष की जगह सांस ले रहे थे ?"

"हमारे प्राण इन स्वरूपों में बदलने से पहले किस स्थिति में थे ?"

"सपनों की दुनिया में बोलती हुई यह जागृति, विचारों से सजा हुआ यह चिंतन, यह आनंद और दुःख, प्रेम और घृणा के धागों से बंधी हुई अभिलाषाएं माताओं के पेट से पैदा हुईं या आकाश के वायुमंडल में ?"

"क्या इससे पहले कि अस्तित्व की आकांक्षा हमें जीवन की गोद में ले आई, हम कुछ न थे ?"

होश संभालते ही मैंने ये सवाल अपनी आत्मा से पूछे। मेरी आत्मा ने इन सवालों के जवाब कुछ ऐसे संदिग्ध वाक्यों में दिये, जो मेरी समझ से परे थे। मेरा चिन्तन उन वाक्यों को एक गहरी खामोशी की तरफ ले गया, जिस तरह बरफ के टुकड़े पानी में गिरकर पानी हो जाते हैं।

कल एक नई घटना मेरे सामने आई, जो अदृश्य जगत के भेद मुझ पर खोल देती है और अस्तित्व के रहस्यों से मुझे परिचित कर देती है। यह घटना मेरे कल्पना-लोक को उस जमाने के पास ले गई जब मेरा बाह्य शरीर प्रकट नहीं हुआ था। मैंने एक आदमी को देखा, जो अपनी आत्मा के संबंध में कुछ बता रहा था। उसके शब्दों ने मुझ पर ऐसा जादू कर दिया कि मेरे सीमित चिंतन और अल्पबुद्धि में एक बारीक रिश्ता मजबूत होने लगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैंने सलीम नुजूमी[1] को देखा, जो खुद अपनी तारीफ आप कर रहा था। वह सुदूर भूतकाल की उन घटनाओं को बयान कर रहा था, जो उसके मस्तिष्क में सुरक्षित थीं। मुझे विश्वास हो गया कि मैं एक ऐसे व्यक्ति के सामने खड़ा हूं, जो और मनुष्यों से अलग है। वह ऐसी नाजुक और बारीक बातों को समझता है, जिनकी याद औरों के दिमाग से मिट चुकी है।

मैं सलीम नुजूमी को अठारह बरस से जानता था। हमने उसका नाम 'तन्मय' या 'खोया हुआ' रखा था, इसलिए कि वह जब भी हममें से किसी को देखता तो ऐसी नजरों से घूरता, जिनसे अचरज टपकता था और मालूम होता कि इसने इससे पहले हमें कभी नहीं देखा है। अगर हम कभी उसका नाम लेकर उसे बुलाते तो वह तीन-चार बार बुलाने से पहले हमें उत्तर न देता। अगर हम कभी उससे कुछ पूछते तो फटी हुई आंखों से वह हमें देखकर सिर हिलाता और लगता, मानो हम उससे किसी ऐसी भाषा में बोल रहे हैं, जिसका कोई शब्द जीवन-भर में उसके कानों ने नहीं सुना था। कभी-कभी वह निहायत धीमी आवाज और मामूली हलचल से भी एकदम घबड़ा उठता, जिस तरह कोई सोया हुआ आदमी बंदूक की आवाज सुनकर चौंक उठता है। अगर वह बैठा होता तो अचानक खड़ा हो जाता और अगर खड़े-खड़े आवाज उसके कान में पड़ती तो भागना शुरू कर देता। लेकिन इस तरह खोये रहने के बावजूद वह बहुत ही बुद्धिमान था और कुछ बातों में तो उसका चिंतन बहुत ही गहरा होता था। संगीत और ज्योतिषशास्त्र में उसको कमाल हासिल था।

मैंने जब भी उसे अरबी के सुरों, वजनों और अर्थों के बारे में बात-चीत करते सुना तो उसकी बारीकी को देखकर चकित हो गया। इसी तरह जब कभी मैंने उसे वर्तमान काल के तथ्यों और बीते हुए जमाने के बारे में बहस करते देखा तो मैंने यह अनुभव किया कि जैसे मैं किसी बहुत बड़े ज्योतिषी की बैठक में बैठा हूं। मैं मन में सोचता कि इस खोये हुए तन्मय की आत्मा में वे चिह्न छिपे हुए हैं, जिन तक औरों की आत्माओं की पहुंच

---

१. ज्योतिषी.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहीं, और उसकी मदहोशी में ऐसी जागृति छिपी है, जिसकी खबर दुनिया के होशियार और जागृत मनुष्यों को भी नहीं होती।

सलीम नुजूमी में एक और अजीब बात यह नजर आई कि वह घंटों तक सूरज की तरफ आंखें खोले देखता रहता है। उस समय उसे देखनेवाले को यह मालूम होता कि उसकी आंखें शीशे की बनी हुई हैं। न उसकी पलकें झपकतीं, न उसकी आंखें मुंदतीं। मैंने उसे इस आदत से रोकने की कोशिश की और उसे डराया कि ऐसा करने से तेरी आंखों की रोशनी जाती रहेगी। लेकिन उसने हमेशा यही जवाब दिया, "उल्लू दिन का वक्त अंधेरी जगहों में बिताता है और गिद्ध वही वक्त सूरज को देखते हुए गुजारता है; पर इसके बावजूद क्या तुमने कभी किसी गिद्ध को अंधा देखा है?"

: २ :

तीन साल गुजर गये। हमने सलीम को नहीं देखा। मैं और मेरे साथी कभी-कभी उसकी अजीबोगरीब हरकतों को याद करके हंसते थे और कभी उसकी मूल्यवान जानकारियों पर चर्चा करके अपनी विद्वत्ता को बढ़ाने की कोशिश करते थे। हमने लोगों से उसके बारे में बहुत पूछा, पर कोई भी ऐसा न मिला, जो उसके विषय में कुछ जानता हो।

एक सप्ताह हुआ। मैं अकेला बैठा रात की आवाजों की तरफ कान लगाकर सुनने और उनके रहस्य मालूम करने में मग्न था कि मेरे कानों में किवाड़ खटखटाने की आवाज आई। मैंने जाकर दरवाजा खोला तो सलीम को सामने खड़ा पाया। वह फटे कपड़े पहने हुए था। उसके बाल उलझे हुए थे और उसकी परेशानी उसके चेहरे से जाहिर हो रही थी। उसके अचानक आ जाने से मैं बहुत खुश हुआ और उसे अंदर ले आया। उसके चेहरे पर चिंता और भुखमरी के निशान देखकर मुझे कुछ ताज्जुब हुआ। मैंने उसे अपने सामने बिठाया और उसके हाल पूछने लगा। उसने अपने घर और रिश्तेदारों से दूर रहकर जो समय बिताया था, उसके बारे में मैंने उससे जानना चाहा। वह अपनी उसी पुरानी आदत के अनुसार कभी तो मेरी आवाज से एकदम चौंक उठता और कभी बगैर किसी जवाब के मेरी तरफ घूर-घूरकर देखता, जैसे कि वह कुछ भी न समझता हो।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैंने उसे शराब का एक प्याला पिलाया और उसको बताया कि मेरे मन में उसके प्रति कितना प्रेम है और मैं उसे कितना सुखी देखना चाहता हूं। फिर पूछा, "सलीम, यह तुझ पर क्या बीती है! तुझे अपने पिता से विरासत में कितनी दौलत मिली थी, लेकिन तूने वह सबकुछ बरबाद कर दिया।"

कुर्सी के पास रखे हुए बिजली के लट्टू की तरफ टकटकी लगाये हुए उसने मेरे सवाल का जवाब दिया, "अचरज है, तुम मुझसे इस तरह के सवाल क्यों पूछते हो? मैंने न कोई दौलत बरबाद की है और न जायदाद ही। मुझे तो पिताजी से जो कुछ मिला था वह उसी तरह बाकी है।" फिर मुस्कराते हुए कहा, "मुझे कल वकीलों और सर्राफों ने बताया कि मेरे पिताजी की मौत के बाद मेरी दौलत दुगुनी हुई है।"

मैंने उसकी पोशाक की तरफ इशारा करते हुए मजाक में कहा, "अच्छा! तो तू इस पोशाक से अपने आपको छिपाने की कोशिश कर रहा है, ताकि लोग तुझे देखें तो उन फकीरों में से समझें जो लंबी-लंबी लकड़ियों का सहारा लिये, बगल में भीख का लकड़ी का बर्तन दबाये, शहर-शहर फिरते हैं।"

उसने जवाब दिया, "लोगों में तो ऐसा कोई भी नहीं, जो भेस बदल-कर अपने आपको दुनिया की नजरों से छिपाने की कोशिश न कर रहा हो और उनमें ऐसा भी कोई नहीं, जो कोई-न-कोई चीज मांगता न फिरता हो।"

मुझे उसकी यह बात बहुत पसंद आई और मैंने कहा, "ठीक है। लेकिन तू एक बड़े घराने का है। कम-से-कम अपने खानदान की इज्जत का तो खयाल रख और ऐसे कपड़ों में लोगों के सामने आ, जो तेरे खानदान के लायक हों।"

वह धीमी आवाज में बोला, "भाई, मैं बहुत ज्यादा घिरा था और इन बातों पर ध्यान देने के लिए मुझे फुरसत नहीं थ। मैं एक ऐसे अहम काम में लगा हुआ था, जिसके सामने बढ़िया पोशाक और अच्छे खानपान का बिलकुल महत्व नहीं था।"

उस समय उसके चेहरे से गहरे सोच के निशान दिखाई देने लगे,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेकिन उसके बावजूद उसकी नजर बिजली के लट्टू पर ही लगी रही। मैंने पूछा, "सलीम, तू किस काम में इतना लगा था ? आखिर वह कौन-सा ऐसा काम है, जिसके लिए तूने बाकी सारी दुनिया को भुला दिया ?"

वह मेरी ओर मुड़कर बोला, "मैं अपनी याददाश्त के पर्दों को फाड़ने में लगा था। मैं अपने याददाश्त में गड़े हुए खजानों को खोदकर निकालने में जुटा था। मैं मौत की शक्ल में उस पुस्तक के पन्नों को एक-एक करके उलट रहा था, जिसका नाम हमने याददाश्त रखा है।"

उसके मुंह से ये वाक्य इस तरह निकले, जिस तरह खाली मैदान में दूर से काफिले की घंटियों की आवाज कान में पड़ती है। फिर उसने अपनी आंखें मेरी ओर से फेर लीं। वह फिर बिजली की बत्ती की तरफ देखने लगा और अपनी जिंदगी में, जबसे मैंने उसे देखा था, मुझे ऐसा महसूस हुआ कि उसकी आज्ञाकारी आत्मा के तार जरा ढीले पड़ गए हैं। उसकी अंदरूनी बेचैनी कुछ कम हो गई है। मैंने दुबारा उसके लिए शराब का प्याला भरा और फिर उससे पूछा, "सलीम, याददाश्त के गड़े हुए खजानों से और मौत की शक्ल में पुस्तक से, जिसे हम याददाश्त कहते हैं, तेरा क्या मतलब है ? यह नया और अनोखा विचार आखिर है क्या ?"

उसने उत्तर दिया, "मैं नहीं जानता कि तुम मुझे कहां तक समझ सकते हो या किस हद तक मुझे समझने का इरादा रखते हो। मैं फिजूल ऐसे लोगों के सामने अपने दिल की हालत को बयान करने लग जाता हूं, जो रूहानी दुनिया से मुंह फेरे बैठे हैं। मैं बेकार अपने आपको ऐसे लोगों के सामने खोलकर रखने लग जाता हूं, जो अपने आपको भी नहीं पहचानते।"

मैंने कहा, "सलीम, मैं तुझे समझने का इरादा रखता हूं और अगर मैंने देखा कि मैं तुझे समझने की काबिलियत नहीं रखता, तो अपनी बेबसी को मैं मंजूर करूंगा।"

वह थोड़ी देर चुप रहा फिर शराब का एक घूंट पीकर कहने लगा, "अच्छा, तो सुनो ! लेकिन दिल के कानों से सुनो। तुमने कभी यह भी सोचा है कि तुम अपने जन्म से पहले किस हालत में थे ?"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरी आत्मा इस सवाल से कांप उठी। मैंने उत्तर दिया, "हां, मैंने कई बार इस सवाल पर सोचा है, मगर हर बार मेरी हालत उस इंसान की तरह होती थी, जो पुराने बरगद के पेड़ को जड़ से उखाड़ने का इरादा करके उसे हाथ लगाये।"

उसने कहा, "क्या तुमने कभी दीखनेवाली चीजों की तरफ से आंखें बंद की हैं? दुनिया की आवाजें सुनने से कानों को बंद करने की कोशिश की है? जीवन की ऊपरी चीजों से अपनी इंद्रियों को दूर रखा है? ऐसा करने से उस हालत को याद किया जा सकता है, जो हमारे मनुष्य बनने से पहले थी।"

मैंने कहा, "नहीं! ऐसा मैं कभी नहीं कर सका!"

उसने कहा, "मैंने ऐसा किया है। मैं अपनी शख्सियत की गहराइयां मालूम करने के लिए लोगों से दूर जाकर बैठा हूं। मैंने ऐसी हालत में अपनी याददाश्त से अपनी निगाह के सामने उस समय के चिह्न खोलकर रखे, जब मुझे फरिश्ते जमीन पर नहीं लाये थे।"

मैंने कहा, "और क्या तू अपने इरादों में कामयाबी पा सका? क्या तूने अपनी याददाश्त में इस जिंदगी से पहले की जिंदगी को देख लिया?"

उसने कहा, "हां, मेरी इच्छा पूरी हुई। हमारी याददाश्त युगों की धरोहर रखने का स्थान है। हममें से हर इंसान यह अधिकार रखता है कि वह उस धरोहर की जगह में घुसकर उसके कोनों में और उसकी गहराइयों में युगों के गड़े हुए खजानों को देखे। याददाश्त एक पेड़ है, जिसके अनगिनत पत्ते हैं और हम हमेशा चिंतन और आत्मसमर्पण के द्वारा यह ताकत हासिल कर सकते हैं कि उन पत्तों के आसपास चक्कर लगायें और आखीर में ये पत्ते हमारी नजर के सामने इस तरह खुल जायं, जिस तरह सूरज की किरणें कली के अंदर फूल की पंखुड़ियों तक पहुंचती हैं और उनकी गरमी के कारण कली खिलकर फूल बन जाती है।"

वह थोड़ी देर के लिए चुप रहा। उसके होंठों पर मुस्कराहट खेल रही थी, जो उसकी खुशी को प्रकट कर रही थी। फिर वह कहने लगा, "तुम कई साल तक मुझे 'तन्मय' कहकर पुकारते रहे। तुम मेरी हकीकत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को ही उससे जाहिर करते थे। मेरी असली हालत को ही बयान करते थे। मैं हमेशा इस बाह्य जगत् में भटकता रहा। दुनिया में ऐसा कौन है, जिसका जीवन दो हिस्सों में बंटा हुआ हो—एक हिस्से से वह अदृश्य जगत की बातें मालूम करे और दूसरे हिस्से से भौतिक संसार के झमेलों में फंसे और फिर भी वह खोया हुआ न रहे ? कौन ऐसा मनुष्य है कि जब दो भावनाएं उसकी आत्मा को एक ही समय में अपनी-अपनी ओर खींचें—छिपी हुई भावना और प्रकट भावना—और फिर भी वह आह न करे ? कौन ऐसा इंसान है, जो अपने कानों में दो जुदा आवाजों को जगह दे, जिनमें से एक आवाज—आसमानी वायुमंडल से आई हुई आवाज—उसकी आत्मा को प्रसन्न रखने की चेष्टा करती हो और दूसरी आवाज—जमीन के अंदर से निकलती हुई आवाज—उसे नफरत दिलाती रहती हो, और फिर वह खोया हुआ न रहे ?—हां, मैं खोया हुआ था और खोया हुआ रहा। लेकिन इस वक्त मैं वह सबकुछ जानता हूं, जो मैं अपनी जवानी में नहीं जानता था। मैं तीन साल तक अपनी याददाश्त की खेती में फिरता रहा और मैंने सबकुछ जान लिया। मैंने मालूम कर लिया कि इस जिंदगी से पहले मैं क्या था। मैंने जान लिया कि इस जिंदगी से पहले मैं कैसा था। मैंने मालूम कर लिया कि मां के पेट से निकलने से पहले मेरी रूहानी हालत क्या थी। मुझ पर यह जाहिर हो गया कि मेरी आत्मा की हकीकत मौजूदा शरीर का गिलाफ ओढ़ने से पहले क्या थी। मैंने अपने उद्गम को पा लिया और अब मैं शांत हूं, निश्चिंत हूं। इसलिए कि इसी याददाश्त की जगह में वह भी मौजूद है।"

उसने अपना सिर झुकाकर आंखें बंद कर लीं। उसका कमजोर चेहरा किसी निपुण शिल्पी का बनाया हुआ हाथी दांत का मॉडल नजर आने लगा, जो ईसाई धर्म के शहीदों में से किसी शहीद के चेहरे की याद दिलाने के लिए बनाया गया हो। मैं उसकी कुर्सी के पास गया और इस डर से कि मेरी आवाज से उसके विचारों का सिलसिला न टूट जाय, मैंने बहुत धीमी आवाज में उससे कहा, "भगवान के लिए मुझे वह सब बता दे, जो तूने हासिल किया है। मैं पूरे ध्यान से तेरा एक-एक शब्द सुन रहा हूं।"

उसने सिर उठाया और आंखें खोले बिना ही जवाब दिया, "याद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रखो कि मैं वायुमंडल में उड़ रहा था। अच्छी तरह समझ लो कि मैं अवकाश या अंतरिक्ष में उड़ रहा था। मैं कभी ऊंचाई की ओर चढ़ता था और कभी नीचे उतरता था। मैं कभी हवा के साथ दौड़ता और इच्छा होने पर ठहर जाता था। मगर अपने विषय में यही समझता था कि मैं एक ही समय में हर जगह हूं और सभी समयों में एक स्थान पर हूं। मैं सूरज की किरणों में नहीं था, बल्कि मैं स्वयं उन किरणों में से एक किरण बन गया था। मैं नहीं जानता कि मैं उड़ती हुई धूल का एक कण था या धूल का समुदाय। मैं नहीं जानता कि मैं जीवन की प्रवृत्तियों का एक अंश था या जीवन की सारी प्रवृत्तियों का उद्गम। मैं अपने विषय में कहता, 'मैं 'मैं' हूं।' पर उस 'मैं' शब्द से मतलब इस 'शरीर' से नहीं था, जो केवल कुछ रेखाओं में घिरा हुआ है, जो एक खास रंग रखता है और जो कुछ विशेष लक्षणों से युक्त है। नहीं! मैं एक व्यक्ति नहीं था। मैं एक कण न था। मैं एक अंश न था। नहीं, मैं पंच महाभूतों में से कोई एक खास मूलतत्व नहीं था; बल्कि मैं तो सारे तत्वों का एक संग्रह या समुदाय था, जो मिलकर एक व्यक्ति के रूप में प्रकट हो रहे थे। मैं उसका वर्णन इसके सिवा किसी और तरह से नहीं कर सकता, "मैं ही 'मैं' था—मैं अपने भूतकाल में यही था। मैंने 'भूतकाल' का शब्द कह तो दिया, मगर मैं उसका पूरा मतलब अब भी नहीं समझता। भूतकाल कभी वर्तमान और भविष्यत् कालों का भी रूप ले लेता है और कभी तो भूत, वर्तमान और भविष्यत् कुछ भी नहीं पाया जाता। हकीकत यह है कि हम जिसे युग या काल कहते हैं, उसको मैं समझ ही न सका। इसी तरह मैं स्थान या स्थल का अर्थ भी समझने में असमर्थ हूं। जब मैं इन दोनों शब्दों—स्थल और काल—के संबंध में सोचने लगता हूं तो अपने आपको बड़ी मुश्किल में पाता हूं, यहां तक कि स्वयं अपने आपका ज्ञान मुझे नहीं होता। मेरी बुद्धि उस वक्त एक गहरे कुहरे का रूप धारण कर लेती है, जो पहाड़ों और घाटियों में भटकता फिरता है; परंतु जहां तक मैं भली-भांति समझा हूं, वह यही है कि हम एक हालत में थे और फिर दूसरी हालत में आ गये हैं। मैं प्रतिष्ठित था, तुच्छ हो गया। मेरे अंदर विशालता थी, विस्तार था, वह एक संकीर्ण घेरे में घिर गई। मेरे प्रारंभ और अंत की कोई सीमा न थी; वे सीमित हो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गये। मैं दृढ़ निश्चयी था और अपनी आत्मा को अच्छी तरह पहचानता था, पर फिर कमजोर होकर आध्यात्मिक ज्ञान की मिन्नतें करने लगा। 'मैं' आत्मा थी, जो हर स्तर पर उड़ती और हर पर्दे को फाड़कर अंदर पहुंच जाती थी; फिर 'मैं' शरीर की स्थिति में बदल गया, जो बहुत सुस्ती से उठता और अपने अंगों को भारी जंजीरों की तरह खींचने की कोशिश करता है।—'मैं था और मैं हो गया।'—'मैं था और मैं हो गया।'—मैं इन्हीं वाक्यों को दुहराता रहा, यहां तक कि मैं अपनी तल्लीनता के दोनों सिरों तक पहुंच गया।

"बीस साल से मैं अपनी बुद्धि से यही पूछ रहा हूं और चेष्टा करता हूं कि मैं इस तब्दीली की हकीकत और इस क्रांति की स्थिति को पूरी तरह मालूम कर सकूं। लेकिन मुझे पूरी कामयाबी नहीं हुई और मेरा ख्याल है कि पूरी सफलता कभी प्राप्त नहीं होगी। हां, इतना जरूर है कि मैं एक ही वक्त में स्पष्ट और प्रकट बात को और बहुत ही बारीक और सूक्ष्म बात को याद रख सकता हूं—मुझे याद है कि उस समय जब मैं वायु के रूप में था, मेरे साथ एक भयानक दुर्घटना हुई। मेरे आन्तरिक घेरे में उस हालत में, जिसे मैं 'मैं तो मैं ही हूं' पुकार रहा था, यह दुर्घटना हुई, जिसे मैं धमाका कह सकता हूं, और सारा विश्व हांडी बनकर उबलने लगा। उसमें से आग निकलनी शुरू हुई। फिर हंडिया में भूचाल आया और उससे एक जबर्दस्त आंधी पैदा हुई, जिसने अपने जोर से मेरे विश्व के हरेक अचल परमाणु को उड़ा दिया। मेरी स्वामिनी और मेरी दासी मनःशांति अचानक एक भयानक गरज में तब्दील हो गई। जो कुशल-क्षेम मुझे गले लगाता था, एक बिजली बन गया और वह असीम आध्यात्मिक ज्ञान, जो प्रत्येक वस्तु को अपनी कक्षा में लेकर उसके रहस्यों और बारीकियों को मालूम किया करता था, एकाएक अनेकानेक चिंताओं में बदल गया और बहुत ऊंचे लोक की वह शांति, जो मेरी गहराइयों में स्थायी हो चुकी थी, अनगिनत व्यथाओं की मारी हुई औरतों की चीखें, लाखों भूखे शेरों की दहाड़ें और बेशुमार घंटियों की आवाजें निकालने लगीं। यह शोरगुल मालूम नहीं, कितने समय तक जारी रहा—एक मिनट तक या पूरे युग तक! फिर हलचल खामोश हो गई। हर आवाज खामोश हो गई और हर बेचैनी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खत्म हो गई। अब मैं अचल था—उस व्यक्ति की तरह, जिसे हर तरफ से दबाया गया हो। थोड़े ही समय में दबाव और तंगी के बावजूद मैं खामोशी से छुटकारा पा गया। फिर मैंने एक बहुत ही बोझिल और प्रभावकारी नींद का अनुभव किया और गहरे अंधेरे में जाकर सो गया।"

सलीम बातें करते-करते रुक गया। उसके चेहरे पर थकावट के निशान दिखाई देने लगे। उसने अपना सिर कुर्सी की पीठ पर डाल दिया। वह ऐसे हांफ रहा था जैसे घोड़ा घुड़दौड़ के बाद सांस लिया करता है। फिर उसने मुझे ऐसी आंखों से देखा, जिनसे कोमल किरणें निकल रही थीं, और कहा, "उसके बाद—उस आंधी और शांति के बाद, उस गहरी नींद के बाद, मैं जाग तो गया, लेकिन उस मतवाले की तरह, जिसकी तल्लीनता पर गफलत के पर्दे पड़े हों। मैंने अपने आपको एक स्त्री के हाथों में एक निश्चल बच्चे के रूप में पाया, जो मेरी आंखों में आंखें डालकर प्यार से मुस्करा रही थी।"

मैं समझ गया कि उसके आकाशीय भ्रमण ने उसकी आत्मा और उसके शरीर को थका दिया है। इसलिए मैंने कहा, "भाई बस! इतना काफी है। मुझे तूने उन रहस्यों से परिचित कराया, जो तुझसे पहले किसी व्यक्ति ने मुझे नहीं बताये थे। इस समय तुझे अधिक विश्राम और शांति की आवश्यकता है, इसलिए इससे आगे इस समय कुछ न कहना।"

उसने कहा, "इसके बाद मेरे पास कहने की कोई बात है भी नहीं। मैंने वे तमाम बातें, जो मुझे याद थीं और जिन्हें मैं प्राप्त कर सका था, बता दी हैं। लेकिन मैं अबतक अपनी जानकारियों और अपनी याद की हुई बातों में खोया हुआ हूं। मैं हमेशा बरबाद रहा हूं—हमेशा तबाह रहा हूं।"

थोड़ी देर बिलकुल खामोशी रही। मुझे वह थोड़ा-सा समय और उसका असर जीवन-भर याद रहेगा। मैंने अपने प्राणों में एक बिलकुल नया अनुभव पाया। मैंने अपने दिल पर शराब के नशे का असर महसूस किया और मेरे विचारों ने सुनहरा पहनावा पहन लिया।

जब रात आधी बीत चुकी तो सलीम यह कहते हुए उठा, "हम बड़ी देर तक जागते रहे, अब मैं जाता हूं।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैंने कहा, "भाई, अभी न जाओ। आज की रात मेरे मेहमान रहो।"

उसने उत्तर दिया, "नहीं! मैं ऐसे मकान में ज्यादा नहीं ठहर सकता, जिसके वायुमंडल में आवाजें कांपती हुई नजर आती हों और जिसके कोनों में छायाएं घूमती हुई दिखाई देती हों। मेरे लिए आवश्यक है कि मैं किसी खाली और शांतिपूर्ण स्थान की खोज करता रहूं।"

यह कहकर वह लंबे-लंबे कदम उठाता हुआ दरवाजे की तरफ बढ़ा और ऐसे भागता हुआ निकला, जैसे कि जलते हुए मकान से कोई जान बचाने के लिए भागता है।

: ३ :

उस समय से लेकर अबतक मुझे जब भी सलीम की याद आती है, मेरा दिमाग समय को दिन और रात में बांटनेवाले हर माप से भर जाता है और जब कभी उसकी बातें याद आती हैं तो मैं उन सारे भेदों से दूर हट जाता हूं, जो समय को दाएं-बाएं में विभाजित कर देते हैं। मैं जब उसका चेहरा और उसकी आवाज को याद करता हूं, तो मेरी समझ अस्तित्व के बाहरी रूपों और आंतरिक शोभाओं की तुलना करने में खो जाती है।

हां, मैंने सलीम की तरह का आदमी न कभी देखा है और न कभी मिलेगा। वह लोगों में रहता है, पर उनमें उसकी गिनती नहीं। वह दुनिया में है, मगर यहां का रहनेवाला नहीं। कई बार मैं दिल में सोचता हूं कि उससे उस कमरे में घंटे-दो-घंटे के लिए मिला था या मैंने उसके साथ वायुमंडल में एक लंबा युग बिताया है? मैं अपनी याददाश्त पर जोर देकर याद करता हूं कि मैंने उसे सपने में देखा था या जागते में? इसका फैसला मैं सिर्फ इस एक दलील से कर सकता हूं कि अद्भुत तथ्य जागृति में ही प्रकट होते हैं और सलीम भी एक अनोखा तथ्य ही है।○

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

८

महाकवि

(बालबेक[1]—ई० पू० ११२)

बादशाह स्वर्ण सिंहासन पर विराजमान था। उसके चारों ओर दीपक जल रहे थे और ऊद और धूप की अंगीठियां सुगंधित धुआं फैला रही थीं। दायें-बायें दरबारी, अमीर और धर्माचार्य बैठे थे। सामने गुलाम और सिपाही इस प्रकार खड़े थे, जैसे मूरज के सामने पुतले।

थोड़ी देर के बाद, जब गायकों का संगीत समाप्त होकर रात के काले कपड़ों की तहों में गुम हो गया तो प्रधानमंत्री उठा और बादशाह के सामने हाथ बांधकर खड़ा हो गया। फिर बुढ़ापे की कमजोर आवाज में रुक-रुक-कर कहने लगा :

"जहांपनाह, हिन्दुस्तान से एक विचित्र दार्शनिक कल शहर में आया है। उसकी शिक्षाएं ऐसी अनोखी हैं कि आज तक सुनने में नहीं आईं। उसका मत है कि आत्मा एक शरीर से दूसरे शरीर में प्रवेश करती है और मनुष्य एक शताब्दी से दूसरी शताब्दी में प्रविष्ट होता है। अंत में वह पूर्णत्व को पहुंचकर देवताओं की श्रेणी में सम्मिलित हो जाता है। अपने इसी धर्म के प्रचार के लिए वह यहां आया है और चाहता है कि आज की रात आपके दर्शन करके आपके सामने अपने विश्वासों का विवरण प्रस्तुत

---

१. 'बालबेक' अथवा 'बालनगर' पुराने समय में सूर्यनगर के नाम से प्रसिद्ध था। यह नगर सूर्यदेव हीलिओ पोलिश के सम्मान में बनाया गया था। ऐतिहासिकों का मत है कि एक समय मध्यपूर्व में यह सबसे सुंदर शहर माना जाता था। इसके खंडहरों द्वारा, जो आज भी देखे जा सकते हैं, ज्ञात होता है कि यहां की शिल्पकला आदि पर रोमनों का प्रभाव रहा है, क्योंकि उस समय सीरिया देश पर उन्हीं का राज था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करे।"

बादशाह ने सिर हिलाया और मुस्कराकर कहा :

"हिंदुस्तान से ऐसी ही निराली चीज़ें आती हैं। अच्छा, उसे हाजिर करो। हम उसकी दलीलें सुनना चाहते हैं।"

उसी क्षण एक अधेड़ उम्र का आदमी दरबार में उपस्थित किया गया, जिसका रंग गेहुंआ था। उसके चेहरे पर गंभीरता थी। उसकी आंखें बड़ी-बड़ी थीं। उसका समूचा व्यक्तित्व ऐसा प्रसन्न और प्रफुल्लित था कि वह बिना कुछ बोले ही गहरे रहस्यों और अनोखे सौंदर्य का प्रतिनिधित्व करता था। बादशाह को प्रणाम करके उसने आज्ञा पाकर अपना सिर उठाया, उसकी आंखों में चमक पैदा हुई और वह अपने नये मत का प्रतिपादन करने लगा। उसने बताया कि आत्मा अपने अधिकार किये हुए माध्यमों और प्राप्त किये हुए अनुभवों के द्वारा क्रमशः उन्नति करते हुए, उच्चता और सामर्थ्य प्रदान करनेवाली महिमाओं के साथ झूमते हुए और सौभाग्य और भलाई को आलिंगन देनेवाली प्रीति के साथ विकसित होते हुए किस प्रकार एक शरीर से दूसरे शरीर में प्रवेश करती है। फिर उसने समझाया कि मनुष्य किस प्रकार सद्गुणों की आवश्यकताओं की टोह लगाते हुए वर्तमान काल में भूतकाल के पापों का प्रायश्चित करता है और किस प्रकार एक पारी में बोई हुई खेती दूसरी पारी में काटते हुए स्थानांतरण करता है।

जब प्रवचन बढ़ता गया और बादशाह के चेहरे पर बेचैनी और थकान के चिह्न दिखाई देने लगे तो प्रधानमंत्री नवागत दार्शनिक के पास पहुंचा और उसने उसके कान में चुपके-से कहा :

"बस ! अब आगे की चर्चा को किसी और फुरसत के समय के लिए उठा रखो।"

दार्शनिक उल्टे पांव लौटा और धर्माचार्यों की पंक्ति में बैठ गया। उसने अपनी आंखें बंद कर लीं, मानो अस्तित्व के रहस्यों को ध्यान से देखते-देखते वह थक गया हो।

थोड़ी देर तक शांति रही, जिसमें पैगंबर का अभिमान और आत्मविस्मृति थी। फिर बादशाह ने दायें-बायें देखकर पूछा, "हमारा कवि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहां है ? हमने उसे बहुत दिनों से नहीं देखा। उस पर क्या बीती ! वह तो हर रात हमारी सभा में उपस्थित रहता था।"

एक धर्मगुरु ने निवेदन किया :

"एक सप्ताह हुआ, मैंने उसे अश्तरूत के मंदिर की देहली पर बैठे देखा था। वह अपनी दुःखी और स्थिर नजरों से दूर क्षितिज को देख रहा था, मानो उसकी कोई कविता बादलों में गुम हो गई थी।"

एक दरबारी बोला :

"कल मैंने उसे बेंत और सरो के पेड़ों में बैठे देखा था। मैंने उसे नमस्कार किया; पर उसने कोई उत्तर न दिया। वह उसी प्रकार अपने विचारों में डूबा रहा।"

जनानखाने के रखवालों की दारोगा ने कहा :

"आज वह मुझे महल के बगीचे में नजर आया था। मैं उसके पास गई तो देखा, उसका रंग पीला पड़ गया है, चेहरा दुःख की तस्वीर बना हुआ है, पलकों पर आंसू मचल रहे हैं और सांस घुट-घुट कर आ रहा है।"

बादशाह ने विषादपूर्ण स्वर में आदेश दिया :

"जाओ ! उसे तुरंत खोज करके लाओ ! हम उससे मिलने के लिए बेचैन हैं !"

गुलाम और सिपाही कवि की खोज में चले गये और बादशाह सहित सारा दरबार स्तब्ध और चकित होकर प्रतीक्षा करता हुआ बैठा रहा। ऐसा लगता था, मानो वे सब कमरे के बीच में खड़े हुए एक अदृश्य साये का अस्तित्व अनुभव कर रहे थे।

थोड़ी देर के बाद जनानखाने के रखवालों का सरदार आया और बादशाह के कदमों पर गिर पड़ा—उस पंछी की तरह, जिसे शिकारी के तीर ने गिरा लिया हो। बादशाह उत्तेजित होकर चिल्लाया, "क्या बात है ? क्या हुआ ?"

हब्शी ने सिर उठाया और कांपती हुई आवाज में बोला :

"कवि महल के बाग में मरा पड़ा है।"

बादशाह एकदम खड़ा हो गया। उसका चेहरा शोक और दुःख से मुरझा गया। वह धीरे-धीरे बाग की ओर चला। उसके आगे-आगे हाथों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में दीये लेकर गुलाम चल रहे थे और पीछे-पीछे दरबारी और धर्माचार्य। बाग के अहाते के पास, जहां बादाम और अनार के पेड़ थे, मोमबत्तियों की पीली किरणों के प्रकाश में एक निष्प्राण शरीर दिखाई दिया, जो गुलाब की सूखी हुई टहनी की तरह घास में पड़ा था।

एक दरबारी ने कहा :

"देखो तो, सितार को किस प्रकार गले लगा रखा है, जैसे वह एक रूपवती कुमारी हो, जिससे उसे प्यार था और जो उससे प्यार करती थी। इसी प्रेम के कारण उन्होंने आपस में संकल्प कर लिया था कि हम दोनों साथ मरेंगे।"

एक सेनापति बोला :

"अपनी आदत के अनुसार वह अब भी वायुमंडल की गहराइयों को ध्यान से देख रहा है, मानो तारों में उसे अनजान भगवान की परछाईं दिखाई दे रही हो।"

प्रधानमंत्री ने बादशाह को संबोधित करते हुए कहा :

"कल हम इसे पवित्र अश्तरूत के मंदिर के साये में दफन करेंगे। शहर का हर छोटा-बड़ा आदमी इसकी मैयत के साथ होगा। नवयुवक इसके भावगीत गायेंगे और जवान लड़कियां इसके ताबूत पर फूल बरसायेंगी। चूंकि यह हमारे देश का सबसे बड़ा कवि था, इसलिए इसकी शवयात्रा का जुलूस भी शानदार होना चाहिए।"

बादशाह ने कवि के चेहरे पर से, जिस पर मृत्यु का घूंघट पड़ा हुआ था, अपनी निगाह हटाये बिना सिर हिलाया और वह धीमी आवाज से कहने लगा :

"नहीं ! जब यह जीवित था और देश के कोने-कोने को अपनी आत्मा की किरणों से प्रकाशमान और वायुमंडल के कण-कण को अपनी सांस की महक से सुगंधित कर रहा था, उस समय हमने उसे भुला दिया। इसलिए अगर हम अब उसके मरने के बाद उसका सम्मान करेंगे तो देवता हमारी हँसी उड़ायेंगे और घाटियों और हरे-भरे मैदानों की परियां हम पर हँसेंगी। अच्छा यही होगा कि इसे यहीं दफन करो, जहाँ इसकी आत्मा इसकी देह से अलग हुई है। इसके सितार को इसके शरीर से चिपटा रहने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दो। अगर तुममें से कोई इसकी इज्जत करना चाहता है तो वह घर जाकर अपने परिवारवालों को बताये कि बादशाह ने अपने कवि की ओर पूरा ध्यान नहीं दिया, इसीलिए वह अकेले में, उदास होकर मर गया।"

फिर उसने चारों ओर देखकर पूछा :

"भारतीय दार्शनिक कहां है ?"

दार्शनिक आगे बढ़ा और बोला :

"जहांपनाह ! हाजिर हूं।"

बादशाह ने पूछा :

"ऐ विद्वान्, बता ! क्या देवता मुझे एक बादशाह और उसे एक कवि के रूप में फिर इस संसार में भेजेंगे ? क्या मेरी आत्मा किसी बड़े शहंशाह के युवराज का और उसकी आत्मा एक महाकवि का रूप धारण करेगी ? क्या प्रकृति का नियम इसे दोबारा ईश्वरीय तेज के दरबार में हाजिर करेगा, ताकि यह जीवन को कविता की पोशाक पहना सके ? और क्या अमर चारित्र्य मुझे फिर इस भौतिक संसार में भेज देगा, ताकि मैं उस पर उपहार-सम्मानों की वर्षा करूं और उसके अंत:करण को अनुग्रहों से प्रसन्न बना सकूं ?"

दार्शनिक ने उत्तर दिया :

"आत्मा जो कुछ चाहती है, वह उसे मिलता है। वह शील, जो जाड़े के समाप्त होने पर वसंत ऋतु के वैभवों को लौटाता है, अवश्य ही आपको महान् सम्राट और इसे महाकवि बनाकर इस दुनिया में वापस भेजेगा।"

बादशाह का चेहरा खिल उठा। उसकी आत्मा में एक ताजगी, एक प्रफुल्लता, करवटें लेने लगी। वह अपने महल की ओर चल दिया। उसका दिमाग भारतीय दार्शनिक की बातों पर विचार कर रहा था और उसका दिल उसके इन शब्दों को दुहरा रहा था :

"आत्मा जो कुछ चाहती है, वह उसे मिलता है।"

(काहिरा-मित्र स० १९१२ ई०)

चांद ऊपर उठा और उसने अपनी रुपहली चादर शहर पर फैला दी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस समय शहंशाह अपने महल के झरोखे में बैठा साफ-सुथरे वातावरण को देख रहा था। वह उन समाजों के उदय और अस्त पर सोच रहा था, जो एक के बाद दूसरे नील नदी के किनारे से गुजरे थे; उन बादशाहों और नेताओं की करतूतों का लेखा-जोखा ले रहा था, जो अबुलहौल के दबदबे और तेज के सामने ठिठककर खड़े हो गये थे और अपनी कल्पना में उन कबीलों और वंशों के बड़े जुलूस का तमाशा देख रहा था, जिन्हें जमाने ने अहरामे मिस्र के आसपास से निकालकर कस्रे आबिदैन (मिस्र से इराक) में पहुंचाया था।

जब उसके विचारों का घेरा विशाल हुआ और उसका चिंतन गहरा हो गया तो वह अपने खिदमतगार की ओर मुड़ा, जो उसके पास बैठा था और बोला :

"आज की रात हमारी तबियत काव्य-साहित्य की तरफ झुक रही है। इसलिए कुछ सुनाओ।"

खिदमतगार ने आज्ञापालन के तौर पर सिर झुकाया और बहुत पुराने समय के किसी कवि का गीत सुरीली आवाज में सुनाना शुरू किया।

"किसी नये कवि का गीत सुनाओ!" बादशाह ने उसे रोक दिया।

खिदमतगार ने दोबारा सिर झुकाया और किसी अज्ञात कवि का गीत सुनाने लगा।

"नहीं, नये-से-नये कवि का गीत सुनाओ।" बादशाह ने फिर रोका।

खिदमतगार ने तीसरी बार फिर सिर झुकाया और मौशख अंदलुसी के शेर पढ़ने लगा।

"नहीं, इस जमाने के किसी कवि का गीत सुनाओ।" बादशाह ने हुक्म दिया।

खिदमतगार ने अपना माथा पकड़ा, मानो इस जमाने के कवियों की सारी कविताओं को वह याद कर रहा हो। अचानक उसकी आंखों में चमक पैदा हुई। चेहरे पर खुशी की एक लहर दौड़ गई और वह मौजूदा जमाने के एक बहुत बड़े कवि के शेर सुरीली आवाज में गाने लगा। शेर की उन पंक्तियों में विचारों की गहराई, संगीत का जादू, अर्थ की सूक्ष्मता और अछूतापन और ऐसे सुंदर, अप्रतिम रूपक आदि अलंकार थे, जो बुद्धि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में समाकर उसे प्रकाशमान बना देते हैं और हृदय के चारों ओर चक्कर काटकर उसे भावातिरेक से पिघला देते हैं।

बादशाह ने उसकी ओर ध्यान से देखा। गीतों के अर्थ और सुरीलेपन ने उसे आत्मविभोर कर दिया था। वह एक ऐसे अदृश्य हाथ का अस्तित्व अनुभव कर रहा था, जो उसे एक और ही दुनिया में—बहुत दूर की दुनिया में—खींचकर ले जा रहा था। बादशाह ने पूछा :

"ये शेर किसके हैं ?"

"एक बालबेकी शायर के।" खिदमतगार ने उत्तर दिया।

"बालबेकी शायर ?"

बालबेकी और कवि—दो अनोखे शब्द थे। ये शब्द बादशाह के कानों में गूंजने लगे। उसके अत्यंत निर्मल, पारदर्शी मस्तिष्क में वे उन इच्छाओं और अभिलाषाओं की परछाइयां छोड़ गये जो बहुत धुंधली, सूक्ष्म किंतु बड़ी प्राणवान् थीं।

बालबेकी कवि—एक नया-पुराना नाम, जिसने बादशाह के मस्तिष्क में भूले हुए दिनों के चित्र ताजा कर दिये। उसके अंतःकरण की गहराइयों में सोई हुई याद की परछाइयों को उसने उजागर कर दिया और उन रेखाओं में, जो बादलों के किनारों की तरह थीं, उस नवयुवक का चित्र उसकी आंखों के सामने खींच दिया, जो सितार को अपने गले से लगाये मरा पड़ा था और जिसके चारों ओर सेनापति, धर्माचार्य और दरबारी लोग खड़े थे।

यह दृश्य बादशाह की आंखों के सामने से ओझल हो गया, जिस प्रकार सवेरा होते ही सपने मिट जाते हैं। वह अपने स्थान से उठा और अपने दोनों हाथ छाती पर रखकर टहलने लगा। वह बार-बार इस्लाम के पैगंबर की यह आयत दोहरा रहा था :

"तुम मरे हुए थे, उसने तुम्हें जीवित किया। अब वह तुम्हें मारेगा और फिर जिलायेगा और अंत में तुम उसी की ओर लौटाये जाओगे।"

इसके बाद बादशाह ने खिदमतगार को संबोधित करके कहा, "हमारे देश में बालबेकी कवि का होना, हमारे लिए बड़ी प्रसन्नता की बात है। हम उसके पास जाकर उसका सम्मान करेंगे।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक मिनट के बाद धंसी हुई आवाज में उसने फिर कहा :

"कवि एक अनोखा पंछी है, जो पवित्रता के हरे-भरे मैदानों से उड़कर चहचहाता हुआ इस संसार में आता है। इसलिए अगर हमने उसका सम्मान न किया तो वह दुःखी होगा और फिर अपने वतन चला जायगा।"

रात बीत गई। प्रकृति ने अपनी वह पोशाक उतार दी, जिसमें तारे लगे हुए थे और सुबह की किरणों से बनी हुई जगमगाती पोशाक पहन ली, लेकिन बादशाह का मस्तिष्क अब भी अस्तित्व के जादुओं और जीवन के रहस्यों में डुबकियां लगा रहा था।○

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

९

□ आत्म-ज्ञान

बैरूत की एक वर्षाकालीन रात में सलीम आफंदी अपनी मेज के पास बैठा किताबों के पन्ने पलट रहा था। उस मेज पर पुरानी पुस्तकों और कागजों का ढेर लगा हुआ था। वह कभी-कभी सिर उठाकर अपने मोटे-मोटे होंठों से सिगरेट का धुआं छोड़ देता था। इस समय उसके सामने दर्शन की एक छोटी-सी किताब थी, जो सुकरात ने अपने प्रिय शिष्य अफ़लातून के लिए 'आत्मज्ञान' के विषय पर लिखी थी।

सलीम आफंदी उस बढ़िया किताब को पढ़ रहा था और प्राचीन दार्शनिकों की वे उक्तियां याद कर रहा था, जो उस विषय से संबंधित थीं, यहां तक कि पश्चिमी और पूर्वी दार्शनिकों के सारे दृष्टिकोण उसकी धारणा-शक्ति में ताजा हो गये और उसका व्यक्तित्व आत्मज्ञान की गहराइयों में डूब गया।

अचानक वह चौंका और अंगड़ाई लेकर ऊंची आवाज में कहने लगा, "हां ! आत्मज्ञान ही ब्रह्मज्ञान का उद्गम है। इसलिए मेरा यह कर्त्तव्य हो जाता है कि मैं अपने को पहचानूं, अपने व्यक्तित्व के सारे तथ्यों को जान लूं, उसके हर पहलू और कोने से परिचय प्राप्त करूं। मेरे लिए यह उचित है कि आत्मा के रहस्यों पर से परदा उठाऊं और अपने दिल के भेदों के संबंध में जो शंकाएं मुझमें हैं, उन्हें दूर कर लूं। मेरे लिए यह अनिवार्य है कि अपने आंतरिक अस्तित्व का उद्देश्य अपने बाह्य अस्तित्व को बतला दूं, और अपने बाह्य अस्तित्व के रहस्यों को अपने आंतरिक अस्तित्व पर खोल दूं।"

ये वाक्य उसने एक अजीब जोश के साथ कहे। उसकी आंखों में आत्मज्ञान की प्रतीति की लपटें भड़क रही थीं। इसके बाद वह सामने वाले कमरे में गया। वहां एक आइना था, जो कमरे के फर्श को छत से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मिला रहा था। उसके सामने वह एक मूर्ति की तरह चुपचाप खड़ा रहा। उसकी नजरें अपने प्रतिबिंब पर जमी हुई थीं। वह अपने चेहरे को बड़े ध्यान से देख रहा था। अपने सिर, अपने शरीर और अपने समूचे व्यक्तित्व का निरीक्षण कर रहा था।

आधे घंटे तक वह इसी तरह जड़वत्, निश्चल खड़ा रहा, मानो शाश्वंत के चिंतन ने उसे ऐसे विचार प्रदान किये थे, जो अपनी उच्चता के कारण भयंकर थे और जिनकी सहायता से वह अपनी आत्मा की गुत्थियां सुलझा सकता था, और अपने व्यक्तित्व की शून्यता या रिक्तता को प्रकाश से भर सकता था।

उसने अपने होंठ खोले और अपने मन को संबोधित् करके वह धीरे-धीरे कहने लगा :

"मैं नाटा हूं। इसी प्रकार नेपोलियन और विक्टर ह्यूगो भी नाटे थे। मेरा माथा कम चौड़ा है। इसी प्रकार सुकरात और स्पिनोजा के माथे भी तंग थे। मेरे सिर के अगले भाग के बाल उड़े हुए हैं। यही हाल शेक्सपियर का था।

मेरी नाक लंबी और एक तरफ झुकी हुई है। इसी प्रकार वाल्टेयर और जॉर्ज वाशिंगटन की नाक भी लंबी और एक तरफ झुकी हुई थी।

मेरी आंख में ऐब है। इसी तरह संत पॉल और नीत्शे की भी आंखों में ऐब थे।

मेरे होंठ मोटे हैं और नीचे का होंठ आगे निकला हुआ है। इसी तरह ससेरन और चौथे लुई के भी होंठ मोटे थे और उनका निचला होंठ आगे निकला हुआ था।

मेरी गरदन मोटी है। इसी प्रकार हानिबॉल और मार्कस अंटोनियो की गर्दन भी मोटी थी।

मेरे कान लम्बे और जंगली पशुओं की तरह झुके हुए हैं। पर इसी प्रकार ब्रूनो और सर वांटेनर के कान भी लंबे और जंगली जानवरों की तरह झुके हुए थे।

मेरे गालों की हड्डियां उभरी हुई और कल्ले पिचके हुए हैं। यही हालत लाफियात और लिंकन की थी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरी ठोड़ी धंसी हुई है। इसी प्रकार गोल्डस्मिथ और विलियम बट की ठोड़ी भी धंसी हुई थी।

मेरे कंधे ऊंचे-नीचे हैं। इसी प्रकार गेटे और साहित्यिक इसहा के कंधे भी ऊंचे-नीचे थे।

मेरी हथेलियां भद्दी और उंगलियां छोटी हैं। यही हालत ब्लेक और दांते की थी।

सारांश यह कि मेरा शरीर कमजोर और दुबला-पतला है, और यह उन चिंतकों एवं दार्शनिकों की विशेषता है, जिन्होंने अपनी शारीरिक शक्तियां बौद्धिक उद्देश्यों को प्राप्त करने में लगाई थीं।

आश्चर्य की बात है कि बालजाक की तरह जबतक मेरी बगल में कहवा की केतली न हो, मैं लिख-पढ़ नहीं सकता। इसके अलावा मैक्सिम गोर्की और टाल्स्टाय की तरह मुझे भी पागलों और बाजारी लोगों से मिलने का शौक है। यही नहीं, बल्कि बैंतून और वॉल्ट विटमन की तरह मुझे भी हाथ-मुंह धोये दो-दो दिन हो जाते हैं।

इन सबसे आश्चर्यजनक बात यह है कि बोकाशियो और रेबाले की तरह मुझे भी औरतों की बातें मालूम करने में मजा आता है, विशेषकर उन गतिविधियों को पूछने में, जो वे अपने पतियों की अनुपस्थिति में करती हैं।

अब केवल दो प्रश्न रह जाते हैं। एक तो यह कि मैं शराब का शौकीन क्यों हूं? और दूसरा यह कि मुझे घी में तले हुए पदार्थ और चुने हुए खाने ही क्यों पसंद हैं? इसका जवाब यह है कि मेरा पहला शौक अबू नवास, डीमूसा और मारको के शौक से मिलता-जुलता है और दूसरा शौक नहीम पितरस आजम और सुलतान बशीर शहाबी के शौक जैसा है।"

सलीम आफंदी थोड़ी देर के लिए रुक गया और फिर अपना माथा पकड़कर कहने लगा :

"यह हूं मैं और यह है मेरी वास्तविकता! दूसरे शब्दों में मुझमें वे सारी विशेषताएं हैं, जो इतिहास के प्रारंभ से लेकर वर्तमान समय तक के बड़े-बड़े लोगों की विशेषताएं रही हैं। उस नवयुवक के लिए, जिसमें ये विशेषताएं विद्यमान हों, आवश्यक है कि वह इस संसार में कोई बड़ा काम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करे।

"आत्मज्ञान तो विज्ञान और दर्शन का अंतिम उद्देश्य है, और मैंने आज की रात अपनी आत्मा से साक्षात्कार कर लिया है। इसलिए मैं आज ही की रात से वह महान् कार्य प्रारंभ करूंगा, जिसकी ओर मुझे इस संसार की वास्तविकता बुला रही है। वह वास्तविकता विभिन्न एवं अनेकानेक मूल तत्त्वों की गहराइयों में छिपी है।

"मैंने नूह से लेकर सुकरात और बोकाशियो से लेकर अहमद फारस शदयाक तक के बड़े-बड़े लोगों की संगत स्वीकार कर ली है। मैं नहीं जानता कि वह महान् कार्य क्या है, जो मेरे हाथों सम्पन्न होने वाला है। लेकिन जिसके बाहरी व्यक्तित्व और आंतरिक अस्तित्व में वे सारे गुण विद्यमान हों, जो मुझमें हैं, वह निश्चय ही संसार के चमत्कारों में से एक होना चाहिए।

"मैंने अपने को पहचान लिया। हां, देवताओं की कसम, मैंने अपने व्यक्तित्व को जान लिया। इसलिए मुझे तबतक जीवित ,रहना होगा, मेरे व्यक्तित्व को तब तक कायम रहना होगा, और इस संसार को संसार के रूप में तबतक बाकी रहना होगा, जबतक मैं अपना काम पूरा न कर लूं।"

सलीम आफंदी कमरे में टहलने लगा। उसके घिनौने चेहरे पर प्रसन्नता झलक रही थी। वह एक ऐसी आवाज में, जिसका सुरीलेपन से वही संबंध था, जो बिल्ली की 'म्याऊं-म्याऊं' का हड्डियों की खड़खड़ाहट से होता है, अबुल अला मुअर्रा का यह शेर बार-बार पढ़ रहा था :

"मैं अगरचे आखिरी जमाने में पैदा हुआ हूं।
लेकिन वह काम करूंगा, जो मेरे आगे वाले न कर सकें।"

थोड़ी देर के बाद हमारा यह दोस्त बिखरे हुए कपड़ों में अपनी खटिया पर गहरी नींद में खो गया। उसके खुर्राटे वातावरण को एक ऐसी आवाज से बोझिल बना रहे थे, जो मनुष्य के स्वर के बजाय चक्की की घरघराहट के ज्यादा नजदीक थी।○

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१०

□ पेड़ की कहानी : उसी की जबानी

मेरी कहानी बहुत लंबी है। मेरा प्रारंभ उस समय हुआ जब मैं गुठली की शकल में जमीन के नीचे दबा हुआ था और गुठली की गिरी छिलके को फाड़कर सिर निकालने की कोशिश कर रही थी। मैं खुद अपने अस्तित्व को बाहर निकालकर प्रकाश देखने की अभिलाषा कर रहा था।

उस सुबह की याद में मुझे अबतक मजा आता है, जब मैंने पहली बार अपने आपको जमीन के एक छेद से सिर निकालते हुए और इन जंगलों और खेतों की हवा खाते हुए देखा। कितनी सुहावनी घड़ी थी वह कि अनगिनत बहारें बीतने के बाद भी उसकी याद मेरे दिल में बाकी है! बावजूद इसके कि उस वक्त मैं जमीन से चिपका हुआ था, मेरी कमजोर शाखाएं दूर से एक ही टहनी की शकल में नजर आ रही थीं। उस समय भी मेरे मन में एक उमंग थी, जो हर पेड़ में स्वाभाविक रूप से पाई जाती है, लेकिन उसका वर्णन करना हमारी सामर्थ्य से बाहर है—चाहे हमारी शाखाएं, और पत्ते होंठों और जबानों का रूप क्यों न ले लें। हमारे दिल में बसनेवाली बात को बयान करना भी हमारे बस में नहीं है। हमारे हरे-भरे जीवन में, बल्कि हर उस चीज की जिंदगी में, जो धरती से प्रकट होती है या जमीन पर चलती-फिरती है, वे रहस्य छिपे हुए होते हैं, जो बाहरी लक्ष्यों से पहचाने नहीं जा सकते।

मेरी उम्र की पहली बहार बीत चुकी। गरमी आई वह भी गुजर गई। फिर पतझड़ आई। अब मेरा कद बढ़ चुका था। मेरा सिर ऊपर को उठ गया था। मैंने चारों ओर नजर डाली। दूर-दूर तक जंगल का विशाल मैदान और कहीं-कहीं उसके मोड़ नजर आने लगे। मैंने सुबह के वक्त शाखाओं की छांवों को देखकर सोचना शुरू कर दिया। समय के बीतने के साथ-साथ इन छांवों की शकलें भी बदलती थीं। शाम होते ही वे शकलें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मिट जातीं। उनका नाम-निशान तक बाकी न रहता। सायों में एक जादू-भरा रहस्य है, जो हमें खोज और चिंतन करने का आवाहन करता है। मैंने अपने मन से कई बार पूछा कि पेड़ों के रहस्य तो उनके सायों की वास्तविकता से भी अधिक अज्ञात होंगे।...कई बार तो मेरे मन में यह विचार आता है कि इस वन में जो कुछ मैं देखता हूं और जो भी आवाज मेरे कानों में पड़ती है, वह किसी ऐसी चीज का साया है, जिसे हम नहीं देख सकते—वह किसी ऐसे जीव की प्रतिध्वनि है, जो आंखों से ओझल है।

इन पिछले तीन मौसमों में मैंने अपने जीवन का सिंहावलोकन किया। मुझे यह जीवन एक अखंड, मधुर प्रार्थना की तरह मालूम हुई, जो मेरी कमजोर शाखाओं के थरथराने से पैदा होती है। वह मेरे नन्हे पत्तों की महक को साथ लेकर आकाश की ओर जाती है। मगर उस समय मुझे जो सबसे उत्कृष्ट रहस्य मालूम हुआ, वह यह था कि मेरी नाजुक शाखाएं उस चिड़िया के बोझ से भी झुक जाती थीं, जो किसी ऊंचे पेड़ से कूदकर उन पर आ बैठती थी।...मैंने जब भी उस चिड़िया के बारे में सोचा तो अपने अंदर मधुर अनुभवों का मीठा भाव पाया। इसलिए कि वही सबसे पहला पंछी था, जिसने मुझे ध्यान देने योग्य समझा और मुझे अपनी मुलाकात का गौरव प्रदान किया। अजीब बात तो यह है कि मैंने जब भी उस पंछी को याद किया, अपने अंदर झुक जाने का अनुभव पाया, हालांकि मेरी उम्र अब इस हद को पहुंच चुकी है कि मेरा तना मजबूत और मेरी शाखाएं कठोर हो चुकी हैं और मजबूत चट्टानों से टकराती हुई हवाएं मुझसे टकराती हुई निकल जाती हैं।

पतझड़ का वह मौसम भी बीत गया। सर्दी का मौसम आया। जाड़े की ठंडी हवाओं ने मेरे पीले पत्ते झाड़ दिये और फिर वे मेरे साथ खेलने लगीं। कभी वे मुझे घास की तरफ झुका देतीं, जैसे कि वे मुझसे कोई बदला ले रही हों, और कभी मेरे दिल के तारों को छोड़कर और बीते हुए दिन याद दिलाकर मुझे नाचने पर विवश करतीं। इस प्रकार वे मुझे भविष्य की सुखदायी घटनाओं की आशा दिलातीं। थोड़े दिनों के बाद बर्फ़ गिरनी शुरू हुई, और मैं चमेली के फूलों की तरह सफेद पोशाक पहने हुए नजर आने लगा। सर्दी से मैं कांप तो उठा, फिर भी उस पोशाक से मुझे प्यार-सा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हो गया, विशेषकर उस वक्त तो मैं फूला न समाता और गर्व से बार-बार अपने आपको देखता रहता। फिर जब बादल छंट जाते तो सूरज की किरणों से मेरी यह बरफानी पोशाक और अधिक चमकने लगती।

सर्दी के वे दिन भी बीत गये। मैं जोर की आंधी और लगातार बरफ के गिरने का सामना करता रहा। वह पूरा जमाना ऐसे गुजर गया, जैसे कोई आदमी एक लंबे अरसे से सो रहा हो और कभी-कभी उसकी आंख खुलती रही हो।

न तो भयंकर सर्दी मुझमें कमजोरी के लक्ष्य पैदा कर सकी और न उसकी कठोरता मेरे मन की उमंगों को दबा सकी। जब भी तेज हवाएं चलनी शुरू होतीं, मैं अपनी जड़ों को सख्ती से जमीन के अंदर दबा देता और मिट्टी के नीचे दबी हुई कंकड़ियों पर अपने पंजे मजबूती से गाड़ लेता। बहुत बार मेरे मन में यह विचार आया कि ये जोरदार हवाएं भी अनुग्रह-कर्ता अध्यापक बनकर कमजोर और नई उम्र के पेड़ों को सिखाने-पढ़ाने आती हैं कि जमीन में मजबूती से पंजे गाड़ने का ढंग क्या है। वे अपने आप को एक भयंकर शत्रु के भेस में प्रकट करती हैं, जो अपने हमलों से उन्हें जड़-मूल से उखाड़ फेंकने की चेष्टा कर रहा हो।

मैं आंधियों का भी आभारी हूं। अगर ये आंधियां न होतीं तो मुझे कभी इस बात का पता न चलता कि जिनकी जड़ें खोखली होती हैं, उनकी शाखाएं कभी आसमान को नहीं छू सकतीं, और जो अंधेरे में घुस जाने से कतराता है, वह कभी प्रकाश को पा नहीं सकता।

बहार का दूसरा मौसम आया तो मेरी नस-नस में जीवन का लहू दौड़ने लगा। मेरी शाखाओं ने हरे छोटे पत्तों की पोशाक पहन ली। मैंने सोचा कि बस अब मैं उन्नति की अंतिम सीढ़ी पर पहुंच गया। उस समय मेरे मन में यह विचार तक नहीं था कि प्रत्येक सौभाग्य के बाद एक और सौभाग्य आता है, जो पहले से कहीं अधिक होता है और हर कमाल के बाद उन्नति का एक और तल्ला होता है।

बहार के तीसरे मौसम में मेरे शरीर के एक भाग पर पहली कली दिखाई दी। मैंने अनुभव किया कि मेरा शरीर अचानक ऐसे फूलों में बदल गया है, जो आकाश और धरती को देखकर मुस्कराते हैं, हवा के कानों में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऐसे महकनेवाले वाक्य फूंकते हैं, जिनमें दो प्यार-भरे दिलों की बातें, उपासकों की प्रार्थना और कवियों की प्रतिभा नाचा करती है।

थोड़े दिनों में सबेरे की सुगंधित वायु के झोंकों से मेरे शरीर पर खिलते हुए फूलों की संख्या बढ़ने लगी। मेरी शाखाएं फूलों से लदने लगीं। साथ ही कुछ पुराने फूल झड़ने लगे। हर फूल के झड़ जाने पर मैं यह समझता कि मेरी आत्मा का एक पहलू मुझसे छीन लिया गया है। इस विचार के कारण प्रकृति की इस चंचलता से मैं उदास हो गया। मैं दिल में कहता कि आखिर यह कौन-सा तरीका है कि प्रकृति अपने ही हाथों हमें एक सुंदर पोशाक पहनाती है और फिर शीघ्र ही उसे उतरवा भी लेती है?

इस दुःख-भरे विचार में थोड़े ही दिन बीते थे कि मैंने देखा कि हर झड़े हुए फूल की जगह मेरे शरीर पर एक नाजुक सुडौल और सुंदर रंगवाला फल आ रहा है। यह देखकर खुशी के मारे मेरी हालत उस आदमी जैसी हो गई, जो डरावना सपना देखते-देखते घबराकर उठता है तो सुबह की ठंडी हवा उसके स्वागत के लिए तैयार होती है। मुझे विश्वास हो गया कि हानि के बिना लाभ और उदारता के बिना इनाम की आशा व्यर्थ है।

एक सप्ताह के अंदर-अंदर उस नाजुक फल के गूदे के चारों ओर कठोर छिलके का गिलाफ चढ़ गया। मुझे ऐसा जान पड़ा कि अब मैं 'मां' बन गया हूं—हजारों बच्चों की मां। मैंने देखा कि प्रकृति के अदृश्य हाथों ने उस एक गुठली को हजारों गुठलियों में बदल दिया है, जिसे उन्हीं हाथों ने आज से तीन बरस पहले मिट्टी के नीचे दबा दिया था। उनमें से हर गुठली में इसकी योग्यता थी कि वह किसी-न-किसी दिन ऊंचे, विशाल पेड़ का रूप धारण करे और इसी तरह यह जीवन-मरण का क्रम चलता रहेगा। यह कैसा साक्षात्कार है, जिसने भविष्यकालीन बातों को मेरे सामने रखा और मुझे विश्वास दिलाया कि मेरे फल हमेशा बने रहेंगे। यह कैसा विकास-क्रम है, जिसने मुझे जीवन के रहस्यों और उसके खुले हुए सत्यों के सामने ला खड़ा किया।

मौसमों पर मौसम और सालों पर साल गुजरते गये। मैं उसी तरह फलता, फूलता और ऊपर को ऊंचा उठता गया। मेरी छाल सख्त हो गई। मेरी टहनियां हर तरफ फूटने लगीं। मेरी शाखाएं एक-दूसरी से उलझने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लगीं। मैं एक ऐसे हरे-भरे और मजबूत वृक्ष में बदल गया, जो अपने ऐश्वर्य पर गर्व करता हो और अपने भाग्य को सराहता हो। लड़के मेरे ऊपर चढ़ कर खेलने लगे। पक्षियों ने मेरी डालों पर अपने घोंसले बनाये। पशु मेरे साये में सुस्ताने लगे और सूरज के नीचे ऐसी कोई चीज बाकी न रही, जिसको मैंने आजमाया न हो। मैंने ऐसी अनगिनत रातें खड़े-खड़े बिता दीं, जिनमें सुगंधित हवा के ठंडे झोंके चलते रहे। मैं टीलों और घाटियों को ताकता रहा। नदियों की सुरीली आवाजों को कान लगाकर सुनता रहा। मैंने सितारों पर नजरें जमा दीं और अंधेरे के सायों का हिलना-डुलना महसूस करता रहा।

बहुत-से पक्षी मेरे पत्तों में छुपकर व्याकुल स्वर से पुकारते रहे। उनकी दर्द-भरी आवाजें मेरे दिल में एक अज्ञात द्विविधा पैदा करने का कारण बनीं। मैं चाहता कि काश, ऐसी जोरदार आंधी चले, जो मुझे जड़ से उखाड़ कर दूर किसी और जंगल में डाल दे।

बहुत-से कीड़ों ने मेरी जड़ों को खोखला बना दिया। पंछियों ने मेरे फल तोड़े। न मुझे दिन के प्रकाश में आराम मिलता और न रात के अंधेरे में। मेरी स्थिति उस स्त्री की तरह थी, जो किसी पुरुष से प्यार करे, पर वह पुरुष उससे दूर भागे और उसकी जगह एक ऐसा पुरुष उसके मत्थे मढ़ा जाय, जिससे यह घृणा करती हो।

हां, मैंने जीवन के सुख और दुःख दोनों का अनुभव किया है। मैंने उसकी मुहब्बत और नफरत दोनों का तजुरबा किया है। मेरी हालत चार मौसमों में उस तराजू की तरह थी, जिसके पलड़े बारी-बारी से ऊपर को उठते और जमीन को छूते हैं।

मैंने अपनी जिंदगी के सालों में, जो सूरज के सामने खड़े होकर बिताये, मानव के ऐसे-ऐसे कष्टों और अत्याचारों को देखा, जिनकी याद मेरे दिल से न तो बहार की खुशियां मिटा सकती है और न सर्दी का मतवालापन उसे भुला सकता है। दो ऐसी दुर्घटनाएं भी मुझ पर बीतीं, जिन्हें मैं जब याद करता हूं तो मेरा दिल कांप उठता है और मुझे अपने चारों ओर अत्याचार-पीड़ित आत्माओं की एक भीड़ नजर आती है।

मुझे याद पड़ता है कि एक दिन तपती हुई गरमी के मौसम में, जब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पंछी अपने-अपने घोंसलों को वापस लौट चुके थे और कलियों की पंखुड़ियां एक-दूसरे से चिपटी हुई थीं, सामने टीले के पीछे से एक नौजवान मेरी तरफ आया। मेरे तने का सहारा लेकर वह दुःखी आंखों से रास्ते की तरफ देखने लगा। उस नवयुवक की आयु बीस बरस के लगभग थी। थोड़ी देर में एक तरुण कुमारी दुःख-दर्द का बुर्का मुंह पर ओढ़े वहां आई। वह नवयुवक के पास पहुंची, उसके सीने पर उसने अपना सिर रखा और फूट-फूट कर रोने लगी। नवयुवक ने उसे अपनी छाती से भींच लिया और धीमी आवाज में कहने लगा, "मेरी प्यारी, दिल को ढाढस दो। जुदाई की घड़ियां अधिक लंबी नहीं होंगी। मैं बरस-दो बरस के अंदर-अंदर वापस आकर तुमसे मिलूंगा और तब हम दोनों मिलकर अपना भावी जीवन सुख में बितायेंगे।" कुमारी ने कहा, "कौन जाने! जहां तुम जा रहे हो, वहां किसी और से मिलकर मेरी याद अपने दिल से निकाल न दोगे! इधर मैं उस वक्त तक अपने वायदे पर कायम हूं जबतक तुम्हारी मां मुझे दुलहिन के कपड़ों से न सजाये या मेरी मां मुझे कफन न पहना दे।" इतना कहते ही उसकी आवाज भर्रायी। वह रुक-रुककर कहने लगी, "समुंदर हमसे जो चीज छीन लेते हैं, वह कभी वापस नहीं देते। खुदा इन समुंदरों का सत्यानाश करे, और उन लोगों का भी, जिन्होंने समुंदरों में सफर का रिवाज पहले-पहल शुरू किया।"

इतना कहकर वह फूट-फूटकर रोने लगी। नौजवान ने उसे गले लगाया, उसका माथा चूमा और फिर आंखों को चूमते हुए ईमान की कसम खाकर कहने लगा, "एक बरस पूरा होने से पहले ही आकर मैं तुमसे मिलूंगा।" फिर वे दोनों एक-दूसरे से अलग हुए और मेरे चारों ओर अपने दुःख-दर्द का कुहरा छोड़कर चले गये।

दूसरे दिन शाम को वह कुमारी अकेली आकर वहीं बैठ गई, जहां पिछली रात वह अपने प्रियतम के साथ खड़ी बातें कर रही थी। उसने डूबते हुए सूरज की तरफ देखना शुरू किया। मालूम होता था कि वह क्षितिज की काली रेखाओं और सूरज के सुनहरे बालों के बीच ऐसे सनातन सत्य की खोज कर रही थी, जो प्रकाश और अंधेरे, जीवन और मरण के रूप में दिखाई दे। फिर उसने जमीन पर नजर डाली। उसे पास ही अपने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रियतम का पदचिह्न दिखाई दिया। वह थरथराती हुई उंगलियों से पांव के उन निशानों को छूने लगी और सिसक-सिसककर रोने लगी।

वह कुमारी इसी प्रकार मेरे पास आती रही और मेरी छाया में बैठती रही। कभी-कभी वह दर्द-भरी धीमी आवाज से दुःख के गीत गाती। उसकी आवाज के साथ-साथ जंगल का सारा आनंद दुःख और विषाद में बदल जाता।

अपनी आदत के अनुसार वह उस दिन भी आई, जब उनके वियोग के पूरे दो बरस बीत चुके थे। उसके हाथ में एक बंद लिफाफा था, जिसे वह बार-बार चूमती थी। उसने लिफाफा खोला। वह उस पत्र की अभी दो-चार पंक्तियां ही पढ़ पाई थी कि तड़पती हुई जमीन पर गिर पड़ी। उसकी उंगलियां जमीन में धंसने लगीं। फिर अचानक सीधी उठ खड़ी हुई, और लटें बिखेरकर जोर-जोर से हँसती हुई पेड़ों से खेलने लगी।

नहीं ! मैंने अपने जीवन में ऐसी हँसी कभी नहीं सुनी थी। आंधियों का शोर मैंने सुना था, बिजली की कड़क की आवाजें मेरे कानों में पड़ी थीं। भूखे खूंखार पशुओं की चिंघाड़ें मेरे कानों तक पहुंची थीं, लेकिन किसी कुमारी की ऐसी विचित्र और भयंकर हँसी की आवाज कभी मेरे कानों में नहीं आई थी। मैंने ऐसी आवाज कभी नहीं सुनी, जिसमें डर, दुःख, उदासी और पागलपन के भाव एक-साथ मौजूद हों। उस कुमारी की हँसी से पहले मेरी कल्पना में भी यह बात नहीं थी कि मौत की डरावनी आवाज हँसी के रूप में भी प्रकट हो सकती है।

यह पहली बड़ी दुर्घटना थी।

दूसरी दुर्घटना इससे भी दर्दनाक है। जब भी उसकी याद मेरे दिल में आती है, ऐसा महसूस होता है कि कोई मेरी जड़ों, शाखाओं और टहनियों को धारदार दरांती से काटने लगा है और अब जबकि मैं इस घटना का उल्लेख करने लगा हूं, मुझे ऐसा मालूम होता है कि मेरा दिल टुकड़े-टुकड़े होकर मेरी आवाज के साथ रो रहा है, पर शब्दों के रूप में बाहर नहीं निकलता।

सात बरस हुए, फौज की एक टुकड़ी जंजीरों में जकड़े हुए एक नौजवान को उस टीले पर लाई। नौजवान की शकल-सूरत और उसका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चाल-चलन, सज्जनता और शूरता का परिचय दे रहे थे। जब वह टुकड़ी उस टीले के पास पहुंची तो उसके मुखिया ने मेरी तरफ इशारा करते हुए कहा, "वह पेड़ बहुत ठीक है।" वे सब मेरे पास आये। एक आदमी उस नवयुवक को लेकर आगे बढ़ा। उसने उसकी गर्दन में रस्सी का फंदा डाला, फिर उन्होंने मेरी एक शाखा पर रस्सी लटकाई और कुछ आदमियों ने मिलकर रस्सी खींचनी शुरू की। नौजवान जमीन से दो गज ऊपर उठा। फिर उन्होंने रस्सी के दूसरे सिरे को मेरे तने से कसकर बांध दिया और तड़पते हुए शरीर का तमाशा देखते रहे। जब वह ठंडा पड़कर निश्चेतन हो गया तो वे सब वापस चले गये।

मैंने कई बार तेज हवाओं से प्रार्थना की कि वे आसमान में कड़कती हुई बिजली की तलवार बनाकर मेरी उस शाखा को तने से अलग कर दें, जिसे उन दुष्ट अत्याचारियों ने अपने अत्याचार में शामिल किया था। कितनी बार मैंने यह इच्छा प्रकट की कि काश, इस डाली को कीड़े खा जायं और यह जमीन पर बिछी हुई घास के ऊपर गिर पड़े और पतझड़ के पत्तों की तरह इसका नामोनिशान दुनिया में न रहे।

लेकिन मेरी सारी अभिलाषाएं असफल रहीं। उस डाली से उसी तरह कलियां फूटती हैं, फल लगते हैं और वह सूरज के प्रकाश से आनंद उठाती है, प्रातःकालीन सुगंधित वायु के झोंकों से मस्त हो जाती है और बारिश के पानी से नहाकर खुशी से फूली नहीं समाती, यह डाली दुःख की उस कहानी को बिलकुल भूल गई है। इस डाली को देखकर मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि प्रकृति मेरी इच्छाओं की परवा नहीं करती। मेरा अस्तित्व मेरी भावनाओं से कोई संबंध नहीं रखता। वह प्रकृति की इच्छाओं पर निर्भर करता है। वह ऐसे कानून का पाबंद है, जो किसीका पाबंद नहीं।

भूतकाल में और भी बहुत-सी घटनाएं छिपी हैं। उनकी संख्या ओस की उन बूंदों से भी अधिक है, जो सुबह के वक्त मेरे पत्तों पर पड़ती हैं। वे घटनाएं सूरज की किरणों और पंचभूतों के परिवर्तनों से भी अधिक आश्चर्यजनक हैं। अगर मैं उन तमाम घटनाओं को दोहराने लग जाऊं तो मुझे अपने पुराने जमाने की तरफ दोबारा लौट जाना पड़ेगा। मगर वैसा करने की क्षमता मुझमें नहीं है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेकिन जीवन के सारे सुख के क्षणों और दुख की घड़ियों, कृपाओं और संकटों से मुझे जो अनुभव प्राप्त हुए, उन सबसे प्यारी उस चिड़िया की याद है, जो पहली बार मेरी टहनी पर आकर बैठी, जब मैं बिलकुल नाजुक था। उसके नन्हें-मुन्ने शरीर का बोझ मैं न उठा सका। उसके कारण मुझमें इतना स्वाभिमान पैदा हुआ कि मैं भी पेड़ों की पंक्ति में शामिल किया जाने लगा। उस घड़ी की स्मृति में ऐसे गीत छिपे हैं, जिनको मैं सूर्यास्त के समय सुनता हूं। उस वक्त की याद में आग की ऐसी लपटें छिपी हुई हैं, जो शांति-पूर्ण रात के सन्नाटे में मुझे दिखाई देती हैं। उस क्षण की याद में प्यार, दुःख, तड़प है, और उसी में है सब्र और संतोष !○

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

११
रंगे हुए गीदड़

१. सल्मान आफंदी

पैंतीस बरस का मर्द—सुडौल शरीर, सुंदर पोशाक, चढ़ी हुई मूंछें, पांवों में चमकदार जूते और रेशमी मोजे, मुंह में कीमती सिगरेट और हाथ में सुंदर, नाजुक छड़ी, जिसकी सुनहरी मूठ में मूल्यवान् हीरे-मोती जड़े हुए हैं। आलीशान होटलों में खाना खाता है, जहां शहर के बड़े-बड़े लोग इकट्ठे होते हैं। शानदार गाड़ी में मन-बहलाव के मशहूर स्थानों की सैर को जाता है, जिसे दो अत्यंत आकर्षक घोड़े खींचते हैं।

सल्मान आफंदी को अपने बाप से एक फूटी कौड़ी भी विरासत में नहीं मिली। उसका बाप एक गरीब और निर्धन आदमी था, जिसने कभी न व्यापार किया, न पैसा कमाया। वह बेहद सुस्त और आलसी था। काम से वह घृणा करता था। काम करना अपनी शान के खिलाफ समझता था। हमने एक बार खुद उसके मुंह से यह सुना था :

"मेरा शरीर और मेरा स्वभाव काम से मेल नहीं खाता। काम उन लोगों के लिए पैदा किया गया है, जिनका स्वभाव रूखा और शरीर खुरदरे हैं।"

तो फिर सल्मान आफंदी ने इतनी संपत्ति कहां से प्राप्त की? वह कौन-सा जादूगर था, जिसने मिट्टी को उसकी मुट्ठियों में सोने-चांदी में बदल दिया?

यह रंगे हुए गीदड़ों के अनगिनत रहस्यों में से एक रहस्य है, जो इज़-राईल ने हमें बताया और अब हम तुम्हें बताते हैं।

पांच बरस हुए कि सल्मान आफंदी ने सैयदा फहीमा से शादी की।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सैयदा फहीमा स्वर्गीय पितरस नौमान नामक व्यापारी की विधवा है, जो अपने परिश्रम, दृढ़ता और ईमानदारी के लिए अपने जमाने के लोगों में मशहूर था। इस समय सैयदा फहीमा की उम्र पैंतालीस बरस की है, पर उसका दिल सोलह बरस का है। वह हमेशा अपने बालों में खिजाब और आंखों में सुरमा लगाती है। वह अपने चेहरे को क्रीम और पाउडर से चमकाती है। मगर सल्मान आफंदी आधी रात से पहले कभी घर में नहीं आता। शायद ही कोई घड़ी होती हो जब वह अपने पति की अंगारे बरसाने वाली नजरों और जली-कटी बातों से बची रहती हो। इसका कारण यह है कि सल्मान आफंदी ने उसकी ओर से आंखें बंद कर लीं और उस दौलत को यह दोनों हाथों से लुटा रहा है, जो सैयदा फहीमा के पहले पति ने खून-पसीना एक करके जमा की थी।

२. अदीब आफंदी

सत्ताईस बरस का नवयुवक—लंबी नाक, छोटी-छोटी आंखें, घिनौना चेहरा, हाथ स्याही से भरे हुए, नाखून मैल से अटे हुए, शरीर पर फटे-पुराने कपड़े, उन कपड़ों पर जगह-जगह तेल, चिकनाई और कहवे (कॉफी) के दाग।

इस घिनौनी स्थिति का कारण अदीब आफंदी की गरीबी और विवशता नहीं, बल्कि गफलत और बेपरवाई है। दीन और दुनिया की सूक्ष्म तथा जटिल समस्याएं, सत्य की खोज आदि बातों ने उसके मस्तिष्क को घेर रखा है। खुद उसने अमीन जंदी से कहा था, "तबीयत दो चीजों की तरफ ध्यान नहीं दे सकती।"

यानी अदीब (साहित्यिक) लेखन और साफ-सुथरापन दोनों की ओर एक-साथ ध्यान नहीं दे सकता।

अदीब आफंदी बहुत बोलता है और हर समय बोलता है। उसकी दृष्टि में बोलना संसार की सबसे ज्यादा अच्छी बात है। हमें मालूम है कि उसने बैरूत के किसी मदरसे में दो साल तक एक नामी अध्यापक से साहित्य-शास्त्र का अध्ययन किया है। हम यह भी जानते हैं कि उसने बहुत-से गीत लिखे हैं, लेख लिखे हैं और किताबें भी तैयार की हैं, जो अनेक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कारणों से अभी तक प्रकाशित नहीं हो पाई हैं। इनमें सबसे बड़ा कारण अरबी पत्रकारिता का ह्रास और पढ़नेवालों का अनाड़ीपन है।

कुछ दिनों से अदीब आफंदी अपना ध्यान पुराने और नये दर्शन-शास्त्र की बारीकियों पर लगाये हुए है। वह एक ही समय में सुकरात का भी भक्त है और नीत्शे का भी। वह वाल्टेर के साथ रूसो की भी किताबें दिलचस्पी से पढ़ता है।

हम पहली बार उससे एक शादी में मिले थे। लोग उसके चारों तरफ बैठे गाने और पीने में मस्त थे और वह अपने मशहूर वक्तृतापूर्ण ढंग से शेक्सपीयर के नाटक 'हैम्लेट' पर टीका टिप्पणी कर रहा था।

दूसरी बार हमने उसे एक रईस के जनाजे में देखा। लोग उसके साथ-साथ दुःखी चेहरे बनाये, सिर झुकाये, धीरे-धीरे चल रहे थे, और वह अपनी खास वक्तृतापूर्ण शैली में फारस की गजलों और अबू नवास की रुबाइयों पर चर्चा कर रहा था।

अदीब आफंदी इस प्रकार का जीवन क्यों बिता रहा है? पुरानी किताबों के सड़े-फटे पन्नों में अपने दिन-रात बरबाद करने से उसे क्या मिलता होगा? वह एक गधा क्यों नहीं खरीद लेता और उसे किराये पर देकर भाड़े पर धनी बने हुए अमीरों में क्यों शामिल नहीं हो जाता?

यह रंगे हुए गीदड़ों के अनेक रहस्यों में से एक रहस्य है, जो बाल्स-बोल ने हमें बताया और हम अब तुम्हें बताते हैं।

तीन बरस हुए कि अदीब आफंदी ने पादरी योहन्ना शमऊन की तारीफ में एक कसीदा लिखा और हबीब बुक सल्वान के घर में उसके सामने पढ़ा। कसीदा समाप्त हो जाने के बाद पादरी ने उसे बुलाया, और उसके कंधे पर हाथ रखकर मुस्कराते हुए कहा :

"बेटा, भगवान तुझे चिरंजीवी बनाये! तू बड़ा प्रतिभाशाली कवि और श्रेष्ठ साहित्यिक है। मैं तुझ जैसे गुणी आदमी पर गर्व करता हूं। मुझे पूरा विश्वास है कि तू एक दिन पूरब के महान् साहित्यकारों में गिना जायेगा।"

उस दिन से लेकर आजतक अदीब आफंदी अपने बाप, मामूं और चचा की स्तुति का केंद्र बना हुआ है। वे गर्व के साथ उसका उल्लेख करते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हैं और कहते हैं :

"क्या पादरी योहन्ना शमऊन ने यह भविष्यवाणी नहीं की है कि यह एक दिन पूरब के बड़े लोगों में गिना जायेगा ?"

३. फरीद वईबस

चालीस बरस का प्रौढ़ पुरुष—लंबा शरीर, छोटा-सा सिर, बड़ा मुंह, संकरा माथा। अकड़ी हुई गर्दन के साथ छाती निकालकर धीरे-धीरे चलता है। उसकी चाल उस ऊंट की चाल से मिलती-जुलती है, जिसकी पीठ पर महमिल[1] हो। जब वह ऊंची आवाज और शान के साथ बात करता है तो अनजान आदमी यह समझता है कि यह सरकार का कोई मंत्री है, जो लोगों की स्थिति सुधारने और प्रजा के कष्टों को दूर करने में व्यस्त है।

फरीद को इसके सिवाय कोई काम नहीं कि सभाओं में सभापति के आसन पर बैठे और अपने बुजुर्ग खानदान के गुण गवाये या अपने श्रेष्ठ स्थान की विशेषताएं बताये। वह नेपोलियन और उसके जैसे बहादुरों और बड़े लोगों की करतूतों और जीवनियों के बारे में बहुत दिलचस्पी से बातें करता है। बढ़िया अस्त्र-शस्त्र जमा करने का उसे खास शौक है। वे उसके घर की दीवारों पर अच्छे ढंग से लगाये हुए भी हैं,लेकिन वह उनका प्रयोग करना नहीं जानता।

उसकी एक उक्ति यह है :

"भगवान ने मनुष्यों को दो समूहों में बांटा है। एक समूह सेवा करने के लिए है और दूसरा सेवा लेने के लिए।"

उसकी दूसरी उक्ति यह है :

"खानदान एक अड़ियल टट्टू है, जो उस समय तक नहीं चलता, जब तक कोई उसकी पीठ पर सवार न हो जाय।"

यह तीसरी उक्ति भी उसीकी समझी जाती है :

"कलम कमजोरों के लिए है और तलवार बलवानों के लिए !"

अच्छा, तो वे कारण कौन-से हैं, जिनके आधार पर फरीद अपनी

१, परदेदार हौदा.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बड़ाई की डींगें मारता है, अपने ऊंचे खानदान से होने का ढिंढोरा पीटता है और अपनी तारीफ का प्रदर्शन करके लोगों पर रौब गांठता है ?

यह रंगे हुए गीदड़ों के अनेक रहस्यों में से एक रहस्य है, जो सतनाईल ने हमें बताया और हम तुम्हें बताते हैं :

उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में सुल्तान बशीर शहाबी अपने अमीरों के साथ लेबनान की घाटियों में सैर और मन-बहलाव के लिए आया था। संयोग की बात है कि जब वह उस गांव के पास से गुजरा, जिसमें फरीद बक वईबस का दादा मंसूर बक वईबस रहता था, धूप तेज हो गई और सूरज की बारीक किरणें धरती की छाती छेदने लगीं। सुल्तान गरमी को बर्दाश्त न कर सकने के कारण घोड़े से उतर पड़ा और उसने साथियों से कहा :

"आओ, थोड़ी देर इस बलूत[1] के साये में आराम करें।"

जब मंसूर वईबस को इस बात का पता चला तो उसने अपने पड़ोसी किसानों को बुलाया और उन्हें बताया कि सुल्तान का उनके गांव के पास शुभागमन हुआ है। यह सुनकर वे सब-के-सब अंजीर और अंगूर की डालियां और दूध तथा शहद की मटकियां लेकर मंसूर के पीछे-पीछे उस बलूत के पेड़ की ओर चले, जहां सुल्तान बशीर शहाबी आराम कर रहा था। वहां पहुंचने पर मंसूर वईबस आगे बढ़ा और उसने सुल्तान के चोगे को चूम लिया। फिर उसके कदमों में एक बकरा काट दिया और ऊंची आवाज में बोला :

"यह सब जहांपनाह की दया और मेहरबानी का फल है।"

सुल्तान ने अपनी प्रसन्नता प्रकट करने के लिए उसे खिलअत[2] से सम्मानित किया और कहा :

"तुम आज से इस गांव के सरदार हो, जिस पर हमारी विशेष कृपा बनी रहेगी। जाओ मावदौलत ने तुम्हारे गांववालों का इस साल शाही लगान माफ कर दिया है।"

---

१. ठण्डे देशों में होनेवाला एक पेड़ है, जिसे यूरोपवाले पवित्र मानते हैं।

२. वह पहनावा, जो राजा, बादशाह किसीको सम्मानार्थ प्रदान करे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अमीर के चले जाने के बाद उस रात गांव के सारे लोग सरदार मंसूर वईवस की खिदमत में हाजिर हुए। उन्होंने उसे अपने सुख-दुःख का स्वामी मान लिया। अल्लाह उन सब पर रहम करे !

... ...

रंगे हुए गीदड़ों के और भी बहुत-से रहस्य हैं, जिनसे शैतान हमें दिन-रात परिचित कराता रहता है, और इससे पहले कि जमाना हमें संसार के उस पार पहुंचा दे, हम तुम्हें उन रहस्यों को बता देंगे। लेकिन इस समय रात आधी हो चुकी है और हमारी पलकें थक गई हैं। इसलिए हमें सोने की आज्ञा दो। बहुत मुमकिन है कि सपनों की परी हमारी आत्मा को उस जगत में ले जाय, जो इस जगत से कहीं अधिक पवित्र और अच्छा है। ○

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१२

वह स्त्री

इस उजड़े हुए और सुनसान कमरे में कल वह स्त्री बैठी थी, जिसे मेरा दिल प्यार करता है। इन गुलाबी, नरम और नाजुक गावतकियों पर उसका सिर रखा था और उस स्फटिक के प्याले में उसने इत्र की सुगंधवाली मदिरा की एक बूंद पी थी।

यह जो कुछ था कल था, और 'कल' एक सपना है, जो कभी वापस नहीं आ सकता।

लेकिन आज ? आज वह स्त्री, जो मेरी अभिलाषाओं की दुनिया थी, एक सर्द, वीरान और बहुत दूर की दुनिया में चली गई है, जिसे अकेलेपन और विस्मरण का देश कहते हैं।

यह स्त्री मेरे हृदय की स्वामिनी है। उसकी उंगलियों के निशान अबतक मेरे आईने पर साफ दिखाई देते हैं। उसकी सांस की सुगंध से मेरे कपड़े अबतक महक रहे हैं। उसकी मीठी आवाज से अबतक मेरे मकान का कोना-कोना गूंज रहा है। परंतु स्वयं वह स्त्री—वह स्त्री, जो मेरे प्यार का केंद्र है—एक दूर के स्थान को चली गई है, जिसे वियोग और विरह की बस्ती कहते हैं। मगर उसकी उंगलियों के निशान, उसके मुंह की सुगंध, उसकी आत्मा की परछाइयां इस कमरे में कल सुबह तक बाकी रहेंगी। जब हवा के लिए मैं अपने मकान के किवाड़ खोल दूंगा तो उसके झोंके हर उस चीज को उड़ा ले जायेंगे, जो उस सुंदर जादूगरनी ने मेरे लिए छोड़ी है।

यह स्त्री मेरी आकांक्षाओं का मूलस्रोत है। उसका चित्र अबतक मेरे बिस्तर के पास लटक रहा है। उसने जो प्रेमपत्र मुझे लिखे थे, वे अबतक हीरे-मोती जड़े हुए चांदी के बक्से में सुरक्षित हैं। उसके माथे पर लहराने वाले सुनहरे बाल, जो उसने अपनी निशानी के तौर पर मुझे दिये थे, अब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तक कस्तूरी और अंबर से सुगंधित गिलाफ में रखे हैं। ये सारी चीजें सुबह तक अपने स्थानों पर रहेंगी। परंतु जब तक सुबह होगी और हवा के लिए मैं अपने दरवाजे खोलूंगा, उसकी लहरें इन सब वस्तुओं को अनस्तित्व या अभाव के अंधेरे में ले जायेंगी, जहां शांति और एकांत का राज है।

नवयुवको ! वह स्त्री, जिससे मैं प्यार करता हूं, उन्हीं स्त्रियों जैसी है, जिनसे तुम प्यार करते हो। यह एक विचित्र जीव है, जिसे देवताओं ने कबूतर की संधि-प्रियता, सांप के दांवपेच, मोर का गर्व और अभिमान, भेड़िये की कपटनीति, गुलाब के फूल का सौंदर्य और अंधेरी रातों के डर को मुट्ठी भर राख और चुल्लूभर समुंदर के झाग में मिलाकर बनाया है।

मैं इस स्त्री को, जिससे मुझे प्यार है, बचपन से जानता हूं। जबकि मैं खेतों में उसके पीछे-पीछे दौड़ता था और बाजारों में उसका आंचल पकड़ लेता था।

मैं उसे अपनी जवानी के दिनों में भी जानता था, जबकि मैं किताबों में उसके चेहरे का प्रतिबिंब देखता था। शाम के बादलों में मुझे उसका रूप दिखाई देता था और नहरों की जलधारा के कलकल में मैं उसकी आवाज का संगीत सुनता था।

मैं उसे अपनी प्रौढ़ वय में भी जानता था, जबकि मैं उसके पहलू में बैठकर उससे बातचीत करता था। विभिन्न विषयों पर उससे प्रश्न पूछता था, अपने दिल के दर्द की शिकायतें लेकर उसके पास जाता था और अपनी आत्मा के रहस्य उसे बताता था।

यह जो कुछ था, कल था, और 'कल' एक सपना है, जो अब कभी वापस नहीं आ सकता। लेकिन आज—आज वह स्त्री, जिसे मेरा दिल प्यार करता है, एक सर्द, वीरान और बहुत दूर की दुनिया में चली गई है, जिसे एकांत और विस्मृति का देश कहते हैं।

... ...

पर इस स्त्री का नाम क्या है, जिसे मेरा दिल प्यार करता है? उसका नाम है जिंदगी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जिंदगी एक रूपवती और जादूगरनी है, जो हमारे दिलों को लुभाती है, हमारी आत्माओं को बहकाती है और अपनी अनुभूतियों को अपने वायदों से बोझिल बनाती हैं। अगर ये वायदे बढ़ते चले जाते हैं तो हममें से बहुतों की ताकत जाती रहती है, और अगर वे पूरे हो जाते हैं तो हमारे अंतःकरण में दुःख की चिनगारियां भड़क उठती हैं।

जिंदगी एक नारी है, जो अपने प्रियतमों के आंसुओं से नहाती है और अपने शहीदों के खून का इत्र मलती है।

जिंदगी एक औरत है, जो उन सफेद दिनों की पोशाक पहनती है, जिनमें काली रातों के अस्तर लगे होते हैं।

जिंदगी एक स्त्री है, जो मनुष्य-हृदय को अपना मित्र तो बना सकती है, पर पति नहीं बना सकती।

जिंदगी एक दुश्चरित्र किंतु सुंदर औरत है। जो कोई उसका दुराचार देखता है, उसके सौंदर्य से घृणा करने लगता है।○

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१३

रोग

मेरी एक दाढ़ में कीड़ा लग गया था, जो मुझे बहुत तकलीफ देता था। वह दिन की चहल-पहल में चैन से बैठ जाता और रात की खामोशियों में, जब दांत के चिकित्सक आराम से सो जाते और दवाखाने बंद होते, तब वह बेचैन हो उठता।

एक दिन, जबकि मेरा धीरज पूरी तरह समाप्त हो गया, तो मैं एक दंत-चिकित्सक के पास चला गया और उससे मैंने कहा, "इस दाढ़ को निकाल दीजिए। इसने मुझसे नींद का सुख छीन लिया है। मेरी रातें आहें भरते हुए कटती हैं।"

वैद्य ने अपना सिर हिलाया और कहा, "जब दाढ़ का इलाज हो सकता है, तब उसे निकालना निरी मूर्खता होगी।"

उसने दाढ़ को इधर-उधर से खुरचना शुरू किया, और उसकी जड़ों को साफ कर दिया। अजीब-अजीब तरीकों से रोग को दूर करने के बाद; जब उसे विश्वास हो गया कि दाढ़ में एक भी कीड़ा बाकी नहीं रहा है तो उसके छेदों को उसने एक विशेष प्रकार के सोने से भर दिया और गर्व के साथ कहा, "अब तुम्हारी यह दाढ़ नीरोग दाढ़ों से अधिक मजबूत हो गई है।"

मैंने उसकी पुष्टि की और उसकी जेब अशर्फियों से भरकर खुशी-खुशी चला आया। लेकिन अभी एक सप्ताह भी न बीतने पाया था कि कम्बख्त दाढ़ में फिर तकलीफ शुरू हुई। उसने मेरी रूह को फिर नारकीय यातनाएं देनी शुरू कीं।

अब मैं दूसरे डाक्टर के पास गया और बड़ी सावधानी से उससे कहा, "इस खतरनाक सुनहरी दाढ़ को निकाल फेंकिये। बिलकुल संकोच न कीजिए, क्योंकि कंकड़ियां चबानेवाला उन्हें गिननेवालों से अलग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होता है।

डाक्टर ने दाढ़ निकाल दी। वह घड़ी यद्यपि यातनाओं और कष्टों की दृष्टि से बड़ी भयंकर थी, फिर भी वास्तव में वह बहुत ही शुभ थी।

दाढ़ को निकाल देने और उसकी अच्छी तरह देखभाल कर लेने के बाद डाक्टर ने कहा, "आपने बहुत अच्छा किया। कीड़ों ने इस दाढ़ में मजबूती से जड़ पकड़ ली थी और उसके अच्छे होने की कोई आशा न थी।"

उस रात मैं बड़े आराम से सोया। अब भी आराम से हूं और दाढ़ निकल जाने पर भगवान को धन्यवाद देता हूं।

... ...

मनुष्य-समाज के मुंह में बहुत-सी दाढ़ें ऐसी हैं, जिनमें कीड़ा लगा हुआ है और यह रोग इतना बढ़ गया है कि शरीर की हड्डी तक पहुंच गया है। परंतु मानव-समाज उसकी तकलीफ से बचने के लिए दाढ़ें नहीं निकलवाता, बल्कि महज लीपापोती पर संतोष मानता है। वह उन्हें बाहर से साफ कराके उसके छेदों को चमकदार सोने से भर देता है, और बस!

बहुत से ऐसे वैद्य हैं, जो मानवता की दाढ़ों का इलाज आंखों को लुभाने वाले सोने के पानी और चमकदार वस्तुओं से करते हैं, और बहुत-से रोगी ऐसे हैं, जो अपने को इन सुधार-प्रिय चिकित्सकों के हवाले कर देते हैं और रोग के कष्टों को सहते-सहते अपने को धोखा देकर मर जाते हैं।

वह समाज, जो एक बार बीमार होकर मर जाता है, दोबारा जीवित नहीं होता। वह संसार के सामने अपने आत्मिक रोगों के कारणों और सामूहिक दवाओं की वास्तविकता नहीं बता सकता, जिनको प्रयोग करने से समाज पतन और विनाश की खाई में गिर जाते हैं।

... ...

सीरियाई समाज के मुंह में भी जीर्ण-शीर्ण, काली, गंदी और बदबूदार दाढ़ें हैं। हमारे चिकित्सकों ने चाहा भी कि उन्हें साफ करके उनके छेदों को चमकदार चीजों से भर दें और ऊपर सोने का पानी चढ़ायें। पर रोग दूर नहीं हुआ और तबतक दूर नहीं हो सकता जबतक इन दाढ़ों को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उखाड़कर फेंक न दिया जाय। फिर जिस समाज की दाढ़ में कोई रोग हो तो उसका पेट भी कमजोर हो जाता है। और बहुत-से समाज ऐसे हैं, जो पाचन-शक्ति के खराब हो जाने से मौत के मुंह में जा पहुंचे हैं।

अगर कोई कीड़ा लगी सीरियाई दाढ़ें देखना चाहता है तो उसे पाठशाला में जाना चाहिए, जहां भविष्य का मानव उन समस्याओं को याद कर रहा है, जो अख़फ़श ने सेबूया से नकल की हैं और सेबूया ने सायक इजआन से, अर्थात् पुरानी घिसी-पिटी बातों को ही हमारे बच्चों को सिखाया जा रहा है, जिनका उन्हें उनके जीवन में आगे चलकर कोई उपयोग होनेवाला नहीं है।

या फिर उसे अदालत में जाना चाहिए, जहां मार्गभ्रष्ट बुद्धि कानून के आदेशों से इस प्रकार खेलती है, जिस प्रकार बिल्ली अपने शिकार से।

या फिर उसे धनिकों के महलों में जाना चाहिए, जहां बनावट, झूठ और मक्कारी का बोलबाला है।

या फिर उसे गरीबों के झोंपड़ों में जाना चाहिए, जहां डर, डरपोकपन और अज्ञान फैला हुआ है।

और उसके बाद उन नरम और नाजुक उंगलियों वाले दांतों के वैद्यों के पास जाना चाहिए, जिनके पास सूक्ष्म उपकरण और बेहोश करनेवाली दवाएं हैं और जो कीड़ा लगी दाढ़ों के छेदों को भरने और उनकी सड़ी-गली जड़ों को साफ करने में अपना समय बिताते हैं। जब कोई उनसे बातें करता है, या उनके विशेष गुणों से फायदा उठाना चाहता है तो उन्हें उन बूढ़े खतीबों[1] में से पाता है, जिनके मुंह से फूल झड़ते हैं, जो धाराबाहिक भाषण देते हैं, जो संस्थाएं बनाते हैं, सभा-सम्मेलन आयोजित करते हैं, और ऐसे जोरदार लेख लिखते हैं, जिनसे आग की चिनगारियां निकलती हैं। उनके भाषणों में एक गीत होता है, जो चक्की के पाटों के गीत से ऊंचा और बरसात की रातों में मेंढक की टर्राहट से अधिक आकर्षक होता है।

पर जब कोई उनसे कहता है कि, "सीरियाई समाज अपने जीवन का

---

१. धर्मोपदेशकों.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भोजन कीड़ा लगी दाढ़ों से चबाता है; इसलिए उसके हर निवाले में जहरीली लार मिली होती है, उस विषैली लार ने उसकी आंतें लगभग बेकार कर दी हैं।" तो वह उत्तर में यह कहता है, "जी हां। उसके लिए हम एक नई दवा की खोज कर रहे हैं, जिससे बहुत अधिक नशा आयेगा।"

और जब कहनेवाला यह कहता है, "इन दाढ़ो को निकलवाने के बारे में आपका क्या विचार है ?" तो वे खिलखिलाकर हँसते हैं। इसलिए कि उन्होंने दांतों का अच्छा इलाज नहीं सीखा है।

प्रश्न के दुहराये जाने पर वे उठ खड़े होते हैं और नाराजगी के स्वर में अपने मन में कहते हैं :

"कैसे हैं दुनिया में ये विचार के बंदे और कितने बेबुनियाद हैं इनके विचार !"○

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१४

□ अपना-अपना देश

तुम्हारा लेबनान और है और मेरा लेबनान और।

तुम्हारा लेबनान कुरूपताओं का ढेर है, मेरा लेबनान सुंदरता का भंडार।

तुम्हारा लेबनान स्वार्थ और संघर्ष से भरा हुआ लेबनान है; और मेरे लिए सुनहरे सपनों और मोहक आकांक्षाओं से भरा लेबनान है।

तुम्हारा लेबनान एक राजनैतिक गुत्थी है, जिसको खोलने में सारा संसार लगा हुआ है; लेकिन मेरा लेबनान वे पहाड़ियां हैं, जो अपनी भव्यता और सुंदरता के कारण आसमान की ऊंचाइयों तक पहुंचने की कोशिश में हैं।

तुम्हारा लेबनान अंतर्राष्ट्रीय समस्या है, जिसे कालचक्र इधर-उछाल रहा है, लेकिन मेरा लेबनान सुबह की शांत घाटियां हैं जिनके पहलू में बैलों की घंटियां बजती हैं और रहंट की मीठी आवाज कानों में पड़ती हैं।

तुम्हारा लेबनान पश्चिम और दक्षिण से आनेवालों की एक बस्ती है; लेकिन मेरा लेबनान एक ईश्वरीय आशीर्वाद है, जो हर सुबह के वक्त, जबकि चरवाहे खेतों की तरफ जाते हैं और हर शाम को, जबकि काश्तकार खेतों से वापस लौटते हैं, तो आसमान की ऊंचाइयों तक पहुंचता है।

तुम्हारा लेबनान ऐसी हुकूमत है, जिसके अमीरों की कोई गिनती नहीं, लेकिन मेरा लेबनान एक बड़ा ही भव्य पहाड़ है, जो समुंदर और पहाड़ी के बीच अपनी जगह पर उस कवि की तरह डटा हुआ है, जो इहलोक और परलोक के बीच बैठा है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुम्हारा लेबनान एक धोखा है, जिससे लोमड़ी और बिल्लियों के झगड़े में और बिज्जू तथा भेड़िये के झगड़े में काम लिया जाता है; लेकिन मेरा लेबनान वे आध्यात्मिक विचार हैं, जिनसे मेरे कानों में चांदनी रातों में रूपवती कुंवारियों की रागिनियां और खेतों-खलियानों में छोटी बच्चियों के गीत गूंज रहे हों।

तुम्हारा लेबनान धर्म के ठेकेदारों और सेना के अधिकारियों के बीच शतरंज की बाजी है; लेकिन मेरा लेबनान एक पवित्र उपासना-गृह है। जब मेरी निगाह इन पहियों पर चलने वाली शहरी दुनिया से उकता जाती है तो मैं अपनी आत्मा को लेकर उस उपासना-गृह में दाखिल होता हूं।

तुम्हारा लेबनान दो इंसानों की दुनिया है। एक वह इंसान, जो टैक्स देता है और दूसरा वह जो टैक्स लेता है। लेकिन मेरा लेबनान एक अकेला इंसान है, जो बादलों के साये में अपनी बांह के सहारे तकिया लगाये बैठा है वह अल्लाह की जात और सूरज की रोशनी के सिवाय हर चीज से बेपरवा है।

तुम्हारा लेबनान बंदरगाह है, डाक है और तिजारत है; लेकिन मेरा लेबनान नाम है एक दूरदर्शी चिंतन का, भड़कती हुई भावनाओं का और आसमान में पहुंच जानेवाले एक वाक्य का, जिसे धरती हवा के कान में आहिस्ता से कहती है।

तुम्हारा लेबनान नाम है नौकरी पेशा लोगों, गवर्नरों और विभिन्न अधिकारियों की भीड़ का; लेकिन मेरा लेबनान नाम है जवानी की तेजी, प्रौढ़ आयु के इरादे और बुढ़ापे के दर्शन का।

तुम्हारा लेबनान निष्क्रिय संस्थाओं और बेकार सम्मेलनों का नाम है, लेकिन मेरा लेबनान रोशन आग के चारों ओर जमी महफिल का नाम है, जो ऐसी रातों में जमी होती है, जब ठंडी हवाएं चलती हैं और सफेद बरफ पड़ती हुई नजर आती है।

तुम्हारा लेबनान अलग-अलग गुटबंदियां और दलबंदियां हैं, लेकिन मेरा लेबनान उन अबोध और मासूम बच्चों की जमात का नाम है, जो टीलों पर चढ़ते हैं, पानी के प्रवाहों से खेलते हैं और मैदानों में गेंद लुढ़काते फिरते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुम्हारा लेबनान भाषणों, वक्तव्यों और उपदेशों का नाम है, लेकिन मेरा लेबनान कबूतरों की गुटरगूं, पेड़ के पत्तों की सरसराहट और जंगलों तथा पहाड़ों में सुनाई देनेवाली बांसुरियों की गूंज है।

तुम्हारा लेबनान उधार ली हुई प्रतिभा के परदे में छुपे हुए झूठ का और अनुकरण तथा दिखावे की चादर में लपेटे हुए पाखंड का नाम है, लेकिन मेरा लेबनान एक खुली हुई साफ असलियत है, जो पानी के तालाब में देखती है तो उसे अपने तेजस्वी चेहरे और सुडौल अंगों के सिवा कोई चीज नजर नहीं आती।

तुम्हारा लेबनान कागज के पन्नों पर लिखे हुए कानून, दफ्तरों में बंद वायदों और इकरारनामों का नाम है; लेकिन मेरा लेबनान उस प्रकृति का नाम है, जो जीवन के रहस्यों से परिचित है, पर इस परिचय का उसे भान नहीं है। मेरा लेबनान उस शौक का नाम है, जो जाग्रत अवस्था में आध्यात्मिकता के दामन से चिपटा रहता है और सपने में उसे अपना ही रूप दिखाई देता है।

तुम्हारा लेबनान नाम है उस बूढ़े का, जो अपनी दाढ़ी को पकड़े हुए है। उसके माथे पर त्यौरियों के बल हैं। उसे अपने सिवा किसी की फिकर नहीं; लेकिन मेरा लेबनान नाम है उस जवान का, जो पहाड़ की तरह सीना ताने खड़ा है, सुबह की तरह मुस्कराता है, और दूसरों को उसी नजर से देखता है, जिससे वह खुद अपने आपको देखता है।

तुम्हारा लेबनान कभी शाम[1] से कट जाता है और कभी उससे मिल जाता है। वह हर वक्त सीमाओं के जोड़-तोड़ में लगा रहता है; लेकिन मेरा लेबनान न कभी कटता है, न कभी मिलता है; न अपने दर्जे से बढ़ता है, न घटता है।

... ...

तुम्हारा लेबनान और है, मेरा लेबनान और।

तुम्हारा अपना लेबनान और अपनी लेबनानी संतान है। मेरे लिए मेरा लेबनान और मेरी लेबनानी संतान है।

---

१. सीरिया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आओ, बताओ, तुम्हारी लेबनानी संतान कौन है ? थोड़ी देर के लिए सोचो। मैं उनकी सचाई तुम्हारे सामने पेश करता हूं।

तुम्हारी लेबनानी संतान वे हैं, जिनकी आत्माएं पश्चिमी अस्पतालों में पैदा हुईं और जिन्होंने उन लालची दाइयों की गोद में होश संभाला, जो लोभी होकर निर्लोभ होने का दम भरती हैं।

तुम्हारे लेबनान की संतान उन नरम, लचीली शाखाओं की तरह हैं, जो बगैर अपने इरादे के दायें-बायें झुकती रहती हैं और जो सुबह-शाम कंपित होती रहती हैं, पर उन्हें कंपित होने का भान नहीं होता।

वे उस किश्ती की तरह हैं, जो लहरों के थपेड़ों से पतवार और पाल के बिना टकराती है, लेकिन उसका कोई मार्ग निश्चित नहीं होता।

तुम बड़े कठोर हो, प्रतिभाशाली हो आपस में एक-दूसरे के प्रति, मगर फिरंगियों के सामने कमजोर और गूंगे हो।

तुम स्वाधीनता-प्रेमी और बहादुर हो, लेकिन सिर्फ अपने रंगमंचों और अखबारों में। मगर पश्चिम के लोगों के सामने आज्ञाकारी और प्रतिक्रियावादी हो। वही हो तुम, जो मेंढकों की तरह इधर-उधर टर्राते फिरते हो और कहते हो कि हमने अपने पुराने विद्रोही शत्रु से मुक्ति पाई, हालांकि तुम्हारा वह विद्रोही शत्रु अभी तक तुम्हारे शरीरों में छिपे तौर पर मौजूद है।

तुम वही हो, जो जनाजे के आगे-आगे नाचते और गाते चलते हो, लेकिन जब तुम्हें सामने से कोई बारात आती दिखाई देती है, तो तुम्हारा गाना-बजाना शोक में और तुम्हारा नाचना, छाती पीटने और कपड़े फाड़ने में बदल जाता।

तुम वही हो, जो भूख से उसी समय परिचित होते हो, जब खुद तुम्हारी जेबें खाली हों, मगर जब तुम ऐसे लोगों से मिलते हो, जिनके प्राण भूख से निकले जा रहे हों तो तुम उन पर हँसते हो और मुंह फेरकर कहते हो, "यह सिर्फ बनावट है।"

तुम ऐसे गुलाम हो कि जब जमाना तुम्हारी जंग लगी हुई बेड़ियां उतारकर तुम्हें चमकदार बेड़ियां पहना देता है तो तुम अपने को आजाद समझते हो।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यही तुम्हारे लेबनान की संतान हैं तो मुझे बताओ कि क्या उनमें ऐसा भी कोई है, जो लेबनान की घाटियों में मूर्तिमान निश्चय बनकर उठे, उसके नाम को चमकाये और उसके पानी में मिठास पैदा कर दे या उसकी हवा में सुगंध फैलाये ? क्या उनमें ऐसा कोई है, जो यह कहने की हिम्मत कर सके कि जब मैं मरूंगा तो लेबनान उस दिन से बेहतर हालत में होगा, जिस दिन मेरा जन्म हुआ था ? जो यह कहने की सामर्थ्य रखता हो कि मेरा जीवन लेबनान की रगों में लहू की एक बूंद बनकर दौड़ा, या उसकी पलकों में एक आंसू की बूंद बनकर चमका, या उसके होंठों पर मुस्कराहट बनकर खेला ?

यही तुम्हारे लेबनान की संतान हैं, जो तुम्हारी आंखों में बड़े प्रतिष्ठित लोग हैं, मगर मेरी निगाह में बड़े ही तुच्छ।

जरा ठहरो ! मैं अब अपने लेबनान की संतानों की तस्वीर तुम्हारे सामने पेश करता हूं।

मेरे लेबनान के बेटे वे किसान हैं, जो वीरान जमीनों को खेतों और बागों में बदल देते हैं।

मेरे लेबनान के बेटे वे चरवाहे हैं, जो अपने मवेशियों के रेवड़ को एक घाटी से दूसरी घाटी में लिये फिरते हैं, जो बढ़ते, फलते-फूलते हैं। यही चरवाहे उनका गोश्त तुम्हारे खाने के लिए और उनका ऊन तुम्हारे कपड़ों के लिए दे देते हैं।

मेरे लेबनान के बेटे वे बागबान हैं, जो अंगूर से शराब खींचते हैं और शराब से सिरका बनाते हैं।

मेरे लेबनान के सुपुत्र आदम के वे बेटे हैं, जो शहतूत के कीड़े पालते हैं, और मेरे लेबनान की कन्याएं हौआ की वे बेटियां हैं, जो रेशम कातती हैं।

मेरे लेबनान की संतान वे पति हैं, जो खेतीबाड़ी करते हैं और वे पत्नियां हैं, जो केसर इकट्ठा करती हैं।

मेरे लेबनान के बेटे मेमार, कुम्हार, जुलाहे और घंटा बनानेवाले लुहार हैं।

मेरे लेबनान के बेटे वे ग्रामीण कवि हैं, जो ठुमरियां और गीत बनाते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हैं और जो हर रोज अपने दिल का खून नये-नये प्यालों में डालकर प्रस्तुत करते रहते हैं।

मेरे लेबनान के बेटे जब मातृभूमि से जुदा होते हैं तो उनके दिलों में वीरता और भुजाओं में ताकत के सिवा कुछ नहीं होता, फिर सारे संसार की नेकियां अपने हाथ में और दूसरों से छीने हुए ताज सिरपर लेकर वापस लौटते हैं।

मेरे लेबनान के बेटे वही हैं, जो अपने आसपास के वायुमंडल में हर जगह छा जाते हैं। वे जहां भी देखने में आयें, लोगों के दिल उनकी तरफ खिचे चले आते हैं। वे वही हैं, जिनका जन्म झोंपड़ों में हुआ है और जो ज्ञान के भव्य प्रासादों को अपना अंतिम विश्राम-स्थान बनाते हैं।

यही वे दीपक हैं, जिन्हें जमाने की तेज हवाएं बुझा नहीं सकतीं। यही वह जायका है, जिसे जमाना खराब नहीं कर सकता।

यही हैं वे, जो पूरी दृढ़ता के साथ वास्तविकता, सौंदर्य और उन्नति की ओर बढ़ते हैं।

... ...

अब बताओ कि तुम्हारे लेबनान की संतानों में से एक शताब्दी के बाद क्या बाकी रहेगा?

कल के लिए तुम झूठे दावों और कायरपन के सिवाय क्या छोड़ोगे?

क्या तुम यह समझते हो कि जमाना धोखे, छलकपट, और सुस्ती के प्रकट होने के स्थान को याद रखेगा?

क्या तुम यह समझते हो कि धूल के दामन में मौत की तस्वीरें और कब्रों के निशान बाकी रहते हैं?

क्या तुम्हारा यह विश्वास है कि जिंदगी अपने नंगे शरीर को फटे कपड़ों से ढांपने की बेकार कोशिश करती है?

मैं सचाई को साक्षी बनाकर कहता हूं कि जैतून का छोटा-सा पौधा, जिसकी खेती एक देहाती लेबनान की घाटियों में करता है, तुम्हारे तमाम कामों और उनके परिणामों से अधिक टिकाऊ है, और लकड़ी से बना हुआ हल का वह पुरजा, जिसे काश्तकार लेबनान की घाटियों में घसीटता है, तुम्हारी सारी मधुर आशाओं और झूठी इच्छाओं से अधिक अच्छा है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सच बात यह है कि खेतों में बहनेवाली नहर की आवाज तुम्हारे गला फाड़-फाड़कर बोलनेवाले वक्ता की आवाज से अधिक चिरस्थायी होती है। मैं कहता हूं कि तुम किसी काम के नहीं हो, और अगर तुम समझते कि तुम्हारा अस्तित्व बेकार है तो मेरी घृणा की भावना दया की भावना में बदल जाती। काश, मेरी आवाज तुम्हारी आत्माओं को झंझोड़कर जगा दे!

तुम्हारा लेबनान और है, मेरा लेबनान और!

तुम्हारे लिए तुम्हारा लेबनान और उसकी संतान हैं, बशर्ते कि तुम पानी के बुलबुलों को टिकाऊ समझकर उनपर संतोष कर सको!

लेकिन मैं अपने लेबनान और उसकी संतानों पर संतोष किये बैठा हूं, और मेरे इस संतोष में मिठास, शांति और विश्वास है।○

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१५

मैं और तुम

"अपने उग्रपंथी विचारों में वह पागलपन की हद तक पहुँच चुका है। मेरा खयाल है, वह लिखता रहता है कि लोगों का शील और चरित्र भ्रष्ट हो।"

"अगर विवाहित और अविवाहित स्त्री-पुरुष विवाह के विषय में जिब्रान के विचारों का अनुसरण करने लगें तो उसके परिणामस्वरूप परिवार-व्यवस्था टूट जायेगी, मानव-समाज की बुनियादें हिल जायेंगी और यह दुनिया ऐसे नरक का रूप धारण करेगी, जिसमें शैतान बसते हैं। मनुष्य की सारी शोभा धूल में मिल जायेगी। वह तो इंसानियत का दुश्मन है।"

"वह साम्यवादी, नास्तिक और काफिर है। हम इस पवित्र धरती के निवासियों को परामर्श के तौर पर कहते हैं कि वे जिब्रान की शिक्षाओं से दूर रहें और उसकी किताबों को जला डालें ताकि उनका कोई प्रभाव उनके दिलों पर बाकी न रहे।"

"हमने उसकी किताबें पढ़ डालीं और देखा कि वह सरासर मीठा जहर है।"

... ...

मेरे बारे में यह कुछ लोगों के मत हैं। वे ठीक भी हैं; क्योंकि मेरे चरमपंथी विचार पागलपन की हद तक पहुंच चुके हैं। मैं निर्माण की अपेक्षा विनाश का अधिक इच्छुक हूं। मेरा मन उन बातों से घृणा करता है, जिनका लोग सम्मान करते हैं, और मेरे दिल में उन चीजों की मुहब्बत कूट-कूटकर भरी हुई है, जिनसे तमाम लोग नफरत करते हैं। अगर मेरे बस में होता तो मैं मनुष्य-समाज के विचारों, विश्वासों और अंधानुकरणों को जड़ से उखाड़ फेंकने में कोई कसर न उठा रखता।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुछ लोगों का यह कहना है कि मेरी पुस्तकें मीठे जहर की तरह हैं। यह एक तथ्य है, जो मजबूत परदे की आड़ से उन्हें दिखाई देता है। असल बात यह है कि मैं जहर को किसी और चीज में मिलाकर नहीं देता, बल्कि खालिस जहर पिलाता हूं। अंतर इतना है कि जहर के प्याले साफ और चमकदार हुआ करते हैं। वे लोग जो अपने दिलों को मेरी तरफ से आपत्ति पेश करके यह विश्वास दिलाते हैं कि, "वह एक कल्पना-लोक में रहनेवाला आदमी है, जो बादलों की दुनिया में उड़ना चाहता है," वे वही लोग हैं, जिनकी नजर सिर्फ उन साफ-सुथरे प्यालों पर पड़ती है और उनके अंदर भरी हुई शराब या जहर तक उनकी दृष्टि नहीं पहुंच सकती, क्योंकि उनके कमजोर पेट उसे हजम नहीं कर सकते।

यह भूमि का एक कठोर निर्लज्जता प्रकट करती है; पर क्या यह सही नहीं है कि दिल को छेदनेवाली निर्लज्जता मीठे शब्दों से प्रकट होनेवाली नीचता या ओछेपन से अधिक अच्छी होती है? निर्लज्जता अपने असली रंग में अपने आपको पेश करती है, पर ओछापन और बेईमानी ऐसी पोशाक में प्रकट होने की चेष्टा करती हैं, जो उनके लिए सिलाई नहीं गई होतीं।

पूरब के निवासी हर लेख ऐसा चाहते हैं, जो शहद की तरह बागों में फिर-फिरकर कलियों का रस चूसे, उसे जमा करे और उससे शहद के छत्ते तैयार करे।

पूरब के निवासी शहद को ही पसंद करते हैं, और उसके अलावा और कोई भोजन उनको अच्छा नहीं लगता। वे शहद खाने में इस हद तक बढ़ गये हैं कि उनका अस्तित्व सरासर ऐसा शहद बन गया है, जो आग की गरमी से बह जाता है, और बरफ के ढेरों पर रखे बिना गाढ़ा नहीं बन सकता।

पूरब के निवासी प्रत्येक कवि से यह आशा रखते हैं कि वह अपने जिगर के टुकड़ों को उनके बादशाहों, अफसरों और पादरियों के सामने धूनी की तरह जलाये। पूरब का वायु-मंडल उसके धुएं से, जो शाही महलों, बलि-स्थानों और मकबरों से उठता है, पवित्र हो चुका है, मगर वे उसे और पवित्र बनाना चाहते हैं। हमारे ही जमाने में ऐसे भाट कवि मौजूद हैं, जो मुतनब्बी से कम नहीं। ऐसे मर्सिया पढ़नेवाले भी पाये जाते हैं, जो खंसा से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आगे बढ़े हुए हैं, और ऐसे बधाई के गीत लिखनेवाले भी कम नहीं; जो सफीउद्दीन अली[1] को मात करते हैं।

पूरब के निवासी प्रत्येक चिंतक से यह आशा रखते हैं कि वह उनके पूर्वजों के इतिहास की छानबीन करे और वह उन्हीं के किये हुए कामों में श्रद्धा रखने की शिक्षा दे। वह अपने बहुमूल्य समय की हर घड़ी केवल उन्हीं के शब्द-कोशों से शब्दों के हेरफेर और उनके अर्थ बताने में खर्च करे।

पूरब के रहनेवाले प्रत्येक विचारक से यह सुनने के इच्छुक होते हैं कि बेदना, इब्नरुशद, अफ़ाम सरयानी और यौहन्ना और मुश्की ने क्या कहा था। वे चाहते हैं कि वह अपने लेखों में निरर्थक उपदेशों, उन उच्च तत्त्वों और उन सिद्धांतों के अलावा कुछ न लिखे, जिन पर आचरण करनेवाले मनुष्य का जीवन घास के उस कमजोर तिनके की तरह हो जाता है, जो छांव में उगा हो, और उसकी आत्मा उस पानी की तरह हो जाती है, जिसमें थोड़ी-सी अफीम घोल दी गई हो।

सारांश यह कि पूरब के निवासी बीते हुए जमाने के विचारों में जीवन व्यतीत करना चाहते हैं। वे मन को लुभानेवाली और हर प्रकार की चिंता और दुःख से मुक्त कर देनेवाली निरर्थक बातों को पसंद करते हैं। उन्हें ऐसे विचार पसंद नहीं आते, जो रचनात्मक हों, जो उन्हें झंझोड़ कर उस गहरी नींद के नशे से जगा दें, जिसमें गाफिल पड़े हुए मीठे और शांतिपूर्ण सपने देखने में वे मस्त रहते हैं।

... ...

पूरब का समाज वह बीमार पुरुष है, जिस पर बारी-बारी से प्रत्येक रोग ने हमला किया हो और संक्रामक रोग जिससे चिपटे रहे हों, यहां तक कि वह उस बीमारी का आदी बन गया है। अपनी विपत्तियों से उसे प्यार हो गया है। वह अपने संकटों और कष्टों को अपनी स्वाभाविक स्थिति समझने लगा है। इतना ही नहीं, बल्कि उसने उन्हें ऐसे अच्छे सदाचारों और शिष्टताओं में शामिल कर लिया है, जो अच्छी आत्माओं और नीरोग शरीरों में पाये जाते हैं। इसलिए जब वह देखता है कि कोई व्यक्ति इन रोगों का शिकार नहीं हुआ है तो उसे ऐसा लगता है कि यह

१. अरबी भाषा का श्रेष्ठ कवि.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

व्यक्ति ईश्वर के दिये हुए कौशलों और भाव-भावनाओं से वंचित है।

पूरब के अनेकानेक डाक्टर इस रोगी के बिस्तर के चारों ओर फिरते हैं। उसकी चिकित्सा के लिए आपस में परामर्श करते हैं। मगर खेद की बात है कि उनमें से कोई भी उसका सही इलाज नहीं करता। वे उसे तात्कालिक आराम देनेवाली दवाएं पिलाकर रोग को मिटाने के बजाय लंबे अरसे तक बनाये रखने की ही चेष्टा करते हैं।

नशे में रखनेवाली ये दवाएं विभिन्न प्रकार की, विभिन्न स्वरूप की और तरह-तरह के रंगोंवाली हैं। वे एक-दूसरी की मिलावट ही से बनती हैं, जिस प्रकार एक रोग से दूसरा रोग उत्पन्न होता है। पूरब में जब भी कोई नया रोग पैदा होता है तो पूरब का चिकित्सक उसके लिए बेहोशी की एक नई दवा निश्चित कर देता है।

इसी प्रकार वे कारण भी अनेक हैं, जिनकी वजह से रोगी इस प्रकार की दवाओं की आड़ लेता है। उनमें सबसे महत्व के दो कारण हैं : एक तो यह कि रोगी अपने-आपको दैव के भरोसे छोड़ देता है और दूसरा यह कि चिकित्सक डरपोक हैं। वे डरते हैं कि कड़वी दवा देने से रोगी का रोग बढ़न जाय।

पूरब के ये आत्मिक चिकित्सक हमारे इस बीमार समाज की निजी, राष्ट्रीय और धार्मिक बीमारियों के लिए उसे किस प्रकार की बेहोशी लानेवाली दवाएं पिलाते हैं, उसके कुछ उदाहरण सुन लीजिए :

पति अपनी पत्नी से और पत्नी अपने पति से कुछ स्वाभाविक कारणों से तंग आकर एक-दूसरे से लड़ते हैं। मारपीट होती है और एक-दूसरे को छोड़ जाते हैं; लेकिन अभी पूरा एक दिन भी बीतने नहीं पाता कि पति के परिवारवाले पत्नी के घरवालों से मिलते हैं, मुलम्मे के कारण चमकने-वाले कुछ विचार एक-दूसरे के सामने रखते हैं और वे एकमत हो जाते हैं कि मियां-बीवी में सुलह कराई जाय। स्त्री को बुलाया जाता है। उसे मीठी-मीठी बातों और दिल को नरम करनेवाले उपदेशों से चुप कराया जाता है। वैसे उसके मन को संतोष नहीं होता, फिर भी शरम के मारे वह उनकी बात के आगे सिर झुका देती है। फिर पति को बुलाया जाता है। उसके मस्तिष्क को सुनहरी मिसालों और सुवचनों से राजी करा लिया जाता है, जिनके कारण उसके विचार नरम तो हो जाते हैं, पर बदलते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहीं। इस प्रकार थोड़ी देर के लिए उन दोनों में समझौता हो जाता है। उन दोनों की आत्माएं एक-दूसरे से घृणा करती हैं, फिर भी एक ही घर में, एक ही छत के नीचे, अपनी इच्छा के बिल्कुल विरुद्ध जीवन बिताने पर वे विवश होती हैं। जब नाते-रिश्तेदारों की पिलाई हुई नशा लानेवाली दवा की मदहोशी का असर समाप्त होता है—जिसका समाप्त होना अवश्यंभावी होता है—तो पुरुष फिर स्त्री से अपनी घृणा प्रकट करने लग जाता है। इसी प्रकार पत्नी भी अपनी नाराजगी को जाहिर करने लग जाती है। तब वही लोग, जिन्होंने पहले उन दोनों को बेहोशी की नींद सुलाया था, फिर उनको बेहोश करने की कोशिश करते हैं, और इसी प्रकार जिन्होंने पहले उस शराब के प्याले का एक घूंट पिया था, वे उसका और एक घूंट पीने को तैयार हो जाते हैं।

कोई समाज किसी अत्याचारी शासन या जीर्ण-शीर्ण व्यवस्था के विरुद्ध विद्रोह करता है, आजाद होने और स्वाधीनता प्राप्त करने के उच्च उद्देश्य लेकर सुधार-संस्था की नींव डालता है, बड़ी वीरता और बहादुरी से भाषण दिये जाते हैं, वक्तव्य प्रकाशित होते हैं, समाचार-पत्र और पत्रिकाएं निकाली जाती हैं और देश के कोने-कोने में प्रतिनिधि-मंडल भेजे जाते हैं। लेकिन महीना-दो-महीने बीतने नहीं पाते कि लोग सुनते हैं कि संस्था के सभापति को या तो गिरफ्तार कर लिया गया है या उसे सरकार की ओर से पैसा मिलना शुरू हो गया है। फिर उस सुधार-संस्था का नाम सुनने में नहीं आता। यह क्यों ? इसलिए कि उसके सदस्य अपनी आदत के अनुसार नशीली दवा पीकर आराम से बेहोश हो जाते हैं।

ऐसा ही एक दल उठ खड़ा होता है। वह अपने धार्मिक नेता के विरोध में विद्रोह का झंडा उठाता है। उस पर टीका-टिप्पणी करता है, उसके आचरण का छिन्द्रान्वेषण करता है, उसके कामों को बुरी निगाह से देखता है, फिर उसे डराता है कि "हम ऐसे धर्म को स्वीकार करेंगे, जो तुम्हारे वहमों और दोषों से बिल्कुल पाक और बुद्धि-निष्ठ हो।" लेकिन बहुत थोड़े दिनों के बाद हम सुनते हैं कि उस देश के हितचिंतकों ने कोशिश करके समाज और उसके धार्मिक नेता के बीच पैदा होनेवाले मतभेदों को समाप्त कर दिया है और जादू का असर रखनेवाली नशीली बातों के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रभाव से उसी नेता की समाप्त हुई प्रतिष्ठा नये सिरे से फिर लोगों के दिलों में पैदा कर दी गई है और जनता फिर उसी नेता का अंधानुकरण करने लगी है।

कमजोर और बेवस इंसान किसी जालिम के जुल्म की शिकायत करने लगता है तो उसका पड़ोसी उससे कहता है, "चुप रहो, क्योंकि जो आंख तीरें का सामना करने की कोशिश करती है, वह फोड़ दी जाती है।"

देहाती किसान एकांतवासी वैरागियों के चालचलन और संयम को शंका की दृष्टि से देखता है तो उसका साथी उसे संबोधित करके कहता है, "मुंह से एक शब्द मत निकालना। ग्रंथ में लिखा है कि उनकी बातें तो सुन लिया करो, मगर उनके आचरणों से दूर रहो।"

जब एक छात्र बसरा और कूफा के व्याकरणाचार्यों की बातों को निरर्थक समझकर उनमें समय नष्ट करने से बच जाना चाहता है तो उसका अध्यापक उसे डांटकर कहता है, "तेरी तरह सुस्त और आलसी लोग कुछ-न-कुछ बहाना ढूंढ़ा करते हैं।"

जब कोई लड़की बूढ़ी स्त्रियों की पुरानी आदतों का अनुकरण नहीं करती तो उसकी मां उससे कहती है, "तू मुझसे बेहतर नहीं हो सकती। तेरे लिए यह अनिवार्य है कि तू उसी मार्ग पर चलती रहे, जिसपर मैं चलती हूं।"

जब कोई नवयुवक आगे बढ़कर धर्म में मनुष्य द्वारा बढ़ाई गई बातों की खोज करना चाहता है तो धर्माचार्य उसे यह कहकर चुप कराता है, "जो व्यक्ति प्रत्येक धर्माज्ञा को विश्वास और श्रद्धा की दृष्टि से नहीं देखता, उसे इस दुनिया में धुंध और धूल के सिवाय कुछ नजर नहीं आता।"

इसी प्रकार जमाने के दिन-रात बीतते हैं और पूरब का निवासी अपने नरम बिस्तर पर गफलत में पड़ा करवटें बदलता रहता है। जब उसे मच्छर काटते हैं तो वह थोड़ी देर के लिए आंखें खोल तो देता है; लेकिन फिर वही गफलत उस पर छा जाती है और उन्हीं नशीली दवाओं के प्रभाव से, जो उसके नस-नस में समा चुकी हैं, उसी तरह मदहोश पड़ा रहता है। जब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कभी कोई मनुष्य जाग उठता है और उन सोनेवालों को पुकारता है, उनके घरों, उपासनागृहों और दफ्तरों को अपनी चीख-पुकार से भर देता है तो वे हमेशा नशे से बंद रहनेवाली पलकों को खोलकर जम्हाइयां ले-लेकर कहते हैं, "यह कैसा आदमी है, जो न खुद सोता है, न औरों को सोने देता है।" इतना कहकर वे फिर अपनी आंखें बंद करके अपनी आत्मा से कहते हैं, "यह आदमी काफिर है, नास्तिक है। यह नवयुवकों को शील-भ्रष्ट करने पर तुला हुआ है। यह समाज की बुनियादों को गिरा देना और मानवता को विषैले बाणों से छलनी कर देना चाहता है।"

... ...

मैंने कई बार अपनी अंतरात्मा से पूछा है कि क्या वह उन विद्रोही, जाग्रत लोगों में से तो नहीं है, जो शांतिदायक और नशा लानेवाली दवाओं के पीने पर राजी नहीं होते? पर मेरी अंतरात्मा मुझे हमेशा गोलमोल जवाब देती है। मगर जब मैंने देखा कि लोग मेरा नाम ले-लेकर मुझे कोसते हैं और मेरे विचारों को सुन-सुनकर कराहते हैं, तब मुझे अपने जाग्रत होने का विश्वास हो गया और जान गया कि मैं उन लोगों में से नहीं हूं, जो अपने-आपको मीठे और प्यारे सपनों और सांत्वनादायक विचारों के हवाले कर देते हैं, बल्कि मैं उन एकांतप्रिय लोगों में से एक हूं, जिनको जीवन उन तंग और कांटों से भरी घाटियों में घसीटे लिये जाता है, जो झपटनेवाले भेड़ियों और मीठी बोली बोलनेवाली बुलबुलों से भरी होती हैं।

अगर यह जागृति कोई प्रतिष्ठा की बात होती तो मेरा ओछापन उसे निश्चय ही रोकता, परंतु यह कोई प्रतिष्ठा की बात है ही नहीं; बल्कि एक ऐसा तथ्य है, जो एकांतप्रिय व्यक्तियों पर उनकी बेखबरी में प्रकट होता है और उनके आगे-आगे चलता है। वे लोग अपनी इच्छा के विरुद्ध उनके पीछे-पीछे चलते हैं। उसके अज्ञान आकर्षण से वे खिंचे चले जाते हैं और उसके रौद्र अर्थ की ओर फटी हुई आंखों से देखते हैं।

मेरा तो यह विचार है कि व्यक्तिगत तथ्यों के प्रकट करने में एक प्रकार का पाखंड होता है, जिसे पूरब के निवासियों की भाषा में संस्कृति कहा जाता है।

... ...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चिंतक और साहित्यिक कल मेरे इन पुराने विचारों को पढ़कर क्रोध से कहेंगे, "यह हद से आगे बढ़ गया है। यह जीवन के अंधेरे पहलू को ही देखता है और इसीलिए इसे अंधेरे के सिवाय कोई चीज दिखाई नहीं देती। यह तो इससे पहले भी बहुत बार हमारे बीच में खड़ा होकर पुकारता रहा है, हमारी हालत पर रोता और अफ़सोस करता रहा है।"

इन चिंतकों से मैं कहता हूं, मैं पूरब का शोकगीत इसीलिए गाता हूं कि मुर्दा लाश के सामने नाचना पागलपन है।

मैं पूरब के भाग्य पर इसलिए रोता हूं कि रोगों पर हँसना अनाड़ीपन है।

मैं अपने प्यारे वतन का शोक इसलिए मानता हूं कि मुसीबत के वक्त गाना मूर्खता है।

मैं इसलिए हद से आगे बढ़ रहा हूं कि जो व्यक्ति सत्य को प्रकट करने में संतुलन से काम लेता है, वह सत्य की आधी बात को प्रकट कर देता है, पर बाकी आधी बात लोगों की बुरी धारणाओं और उनकी टीका-टिप्पणी के डर से छिपी रह जाती है।

मैं सड़ी हुई लाश देखता हूं तो मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। मेरा दिल बेचैन हो जाता है। मेरे लिए यह असंभव हो जाता है कि मैं दायें हाथ में शराब का प्याला और बायें में मिठाई की डली लेकर उसके सामने बैठ जाऊं।

अगर वहां कोई ऐसा है, जो मेरे रोने को हँसी में, मेरे डर को करुणा में और मेरे अतिवाद को संतुलन में बदलना चाहता हो, तो उसे चाहिए कि वह मुझे सारे पूरब के लोगों में कोई एक न्यायप्रिय, कर्त्तव्यनिष्ठ और नेक सत्ताधारी बताये। वह मुझे कोई एक ऐसा धर्माचार्य बताये, जो अपने ज्ञान के साथ उस पर आचरण भी करता हो। मुझे किसी ऐसे पति का पता वह बता दे, जो अपनी पत्नी को उसी आँख से देखता हो, जिससे वह अपने आपको देखता है।

अगर कोई ऐसा है, जो मुझे खुशी से नाचता और गाता-बजाता देखना चाहता हो तो उसे चाहिए कि वह मुझे उस घर में बुलाये, जहां आनंदोत्सव चल रहा हो, न कि कब्रिस्तान में खड़ा कर दे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैंने जब कभी कोई कड़वा प्याला पिया तो उसकी तलछट शहद की तरह मीठी निकली।

मैं जब कभी किसी कठिन घाटी पर चढ़ा तो अंत में एक हरे-भरे मैदान में जा पहुंचा।

मैं जब भी शाम के धुंधलके में किसी दोस्त को खो बैठा तो सुबह की रोशनी में उसे दोबारा पा लिया।

कई बार पुण्य और उसके फल की इच्छा से मैंने अपने सुख-दुःखों को बहादुरी के दिखावे के परदे में छिपाया, मगर परदा उठते ही मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि सारे कष्ट सुखों में और सारी विपदाएं संपदाओं में बदल गई हैं।

इसी प्रकार कई बार मैंने अपने मित्र के बाहरी स्वभाव और आदतों को देखकर उसे अव्वल दर्जे का मूर्ख और बुद्धू समझा, लेकिन जब सचाई सामने आई तो मैंने अपने-आपको क्रूर, अत्याचारी और उसे दयालु हकीम पाया।

इसी तरह कई बार अहंकार के नशे में मस्त होकर मैं यह समझता रहा कि मैं भेड़ का कमजोर बच्चा हूं और मेरा साथी हिंस्र भेड़िया है, लेकिन जब वह नशा उतर गया तो मैंने देखा कि हम दोनों मनुष्य ही हैं।

लोगो, मैं और तुम महज अपनी बाहरी स्थिति पर नजर रखते हैं और सचाई से आंखें बंद करने के आदी हैं। अगर किसी के पांव तनिक लड़खड़ाते हैं तो हम चिल्ला उठते हैं कि बस, यह तो गिर गया। अगर कोई सावधानी से फूंक-फूंककर कदम रखता है तो हम यह कहना शुरू कर देते हैं कि यह डरपोक है और जल्द मर जानेवाला है। अगर कोई सोच-विचार से काम लेता है तो हम कहते हैं कि यह गूंगा मूरख है और अगर कोई रोने-धोने लगता है तो हम समझते हैं कि ये अंतिम घड़ी की हिचकियां हैं और यह जिन्दा नहीं बच सकता।

हम सब 'मैं और तू' के दिखाऊ छिलके में छुपे हुए हैं। यही कारण है कि आत्मा ने जो रहस्य 'मैं और तू' के शब्दों में छिपाकर रख दिये हैं, हम उन्हें देख नहीं सकते।

अहंकार और दर्प ने हमें उन सचाइयों की खोज से रोक रखा है,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जो हमारे अंदर छिपी हुई हैं।

मैं तुमसे कहता हूं और हो सकता है कि मेरी बात भी मेरी सचाई को छुपानेवाली हो, लेकिन मैं तुमसे और खुद अपनी आत्मा से कहता हूं कि हम अपनी बाह्य आंखों से जो कुछ देखते हैं, उसका तथ्य उस बादल से अधिक नहीं, जो सामने आकर उन चीजों को छुपा लेता है, जिन्हें अंत-र्दृष्टि से देखना मेरे लिए आवश्यक होता है। जो आवाज हमारे कानों में आती है उसकी सचाई उस गूंज से अधिक नहीं, जो उस आवाज के आड़े आती है, जिसको दिल से याद रखना हमारा कर्त्तव्य होता है। अगर हम किसी सिपाही को देखें, जो किसी आदमी को जेल की तरफ घसीट रहा है तो हमारा यह कर्त्तव्य हो जाता है कि हम तुरंत उन दोनों में से केवल एक को अपराधी न समझें, अगर हम देखें कि एक व्यक्ति खून में लिथड़ा पड़ा है और दूसरे के हाथ खून से रंगे हुए हैं तो बुद्धिमानी यह है कि हम तुरंत एक को हत्यारा और दूसरे को कत्ल किया हुआ न समझें। अगर हम देखें कि एक आदमी गा रहा है और दूसरा दहाड़ें मार-मारकर रो रहा है तो हमें चाहिए कि कुछ देर प्रतीक्षा करें ताकि हमें मालूम हो जाय कि कौन खुश है।

भाई, हमेशा किसी की बाह्य स्थिति से उसकी वास्तविक स्थिति का अनुमान न लगाया करो और किसी की बात या किसी के बाह्य आचरण को उसके छिपे हुए रहस्यों का शीर्षक न ठहराओ, इसलिए कि दुनिया में ऐसे बहुत-से इंसान हैं, जिनको जबान की तुतलाहट और लहजे की खराबी के कारण तुम गंवार समझते हो। लेकिन उसकी आत्म-विस्मृति प्रतिभा का एक उजागर पंहलू हो सकता है और उसका अंतःकरण ईश्वरी साक्षात्कार का स्थान। बहुत-से ऐसे भी होंगे, जिनके चेहरे की असुंदरता और उनकी गरीबी के कारण तुम उन्हें तुच्छ समझते हो; लेकिन वास्तव में वे धरती पर आकाश की कृपाओं में से एक अनुग्रह और लोगों में ईश्वर निर्मित शुभ आत्माओं में से एक हो सकते हैं।

तुम एक ही दिन में आलीशान महल से प्रभावित हो जाते हो और एक गरीब के तंग और अंधेरे झोंपड़े को करुणा और प्यार की भावनाओं से देखते हो, लेकिन बाहरी स्थितियों से अपने को प्रभावित होने से रोकने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की सामर्थ्य तुममें होती तो महल के देखने से रौब पैदा होने के बजाय तुम्हें अफसोस होता और करुणा के स्थान पर उस झोंपड़े का तेज तुम्हें प्रभावित कर देता।

कभी ऐसा भी होता है कि तुम अपने जीवन की सुबह और शाम में दो अलग-अलग व्यक्तियों से मिलते हो। एक तुमसे इस तरह बातें करता है कि उसकी आवाज में आंधी की गूंज और उसकी गतिविधियों में एक शूर सेनापति का रौब प्रतीत होता है, लेकिन दूसरा आदमी तुमसे डरते-डरते हिचकिचाती हुई आवाज में प्रभावहीन बातचीत करता है। तुम पहले आदमी को बहादुर और दृढ़ निश्चयी समझते हो और दूसरे को कायर और डरपोक, लेकिन अगर तुम इन दोनों को उस समय देखते, जब जमाना उन्हें कष्ट झेलने और किसी उद्देश्य के लिए प्राण निछावर करने के लिए बुला रहा था, तो तुम्हें मालूम हो जाता कि खुली निर्लज्जता का नाम वीरता और मौन लज्जा का नाम कायरता नहीं है।

घर की खिड़की से झांकने पर तुम्हारी नजर सड़क के एक तरफ सिमट-सिमटकर चलनेवाली सती-साध्वी पर और दूसरी तरफ अकड़कर चलनेवाली दुश्चरित्र स्त्री पर पड़ती है। तुम झट अपने मन में कहने लग जाते हो कि यह पहली कितनी शरीफ और वह दूसरी कितनी जलील है। लेकिन अगर थोड़ी देर के लिए आंखों को बंद करके दिल की आवाज सुनने की कोशिश करो तो वायुमंडल के कण-कण से कानों में आवाज आयेगी, "यह पहली मेरी स्तुति नमाज के द्वारा करती है, पर वह दूसरी तकलीफ में रहकर भी मुझीसे आशा लगाये बैठी है, और उन दोनों की आत्माओं में मेरी आत्मा की झलक नजर आ रही है।"

तुम सभ्यता और उन्नति या प्रगति की खोज में चक्कर लगाते-लगाते कभी ऐसे शहर में जा पहुंचते हो, जिसके महल आसमान से बातें करते हैं। बड़ी शानदार इमारतें वहां होती हैं। चौड़ी-चौड़ी साफ सड़कों पर लोग इधर-उधर भागते फिरते हैं। उनकी अकड़ को देखकर ऐसा लगता है कि वे धरती को फाड़ देने, हवा में उड़ने, बिजली को उचक लेने और पवन से बातें करने के इच्छुक हैं। उनके कपड़ों की तड़क-भड़क देखकर ऐसा मालूम होता है कि उनके लिए हर दिन ईद का दिन है और हर रात

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बरात की रात है।

इसी सभ्यता की खोज में थोड़े ही दिन बाद तुम किसी और ऐसे शहर में पहुंच जाते हो, जिसके मकान टूटे-फूटे, और जिसकी गलियां संकरी और अंधेरी हैं। बारिश के दिनों में ये मकान कीचड़ के समुंदर में मिट्टी के टापू मालूम होते हैं। उनपर कड़ाके की धूप पड़ती है तो वे धूल के बादल जैसे दीख पड़ते हैं। उनमें रहनेवाले लोग अभी तक निःसंकोचता और सादगी के कारण ऐसे लगते हैं, जैसे धनुष के दोनों सिरों के बीच ढीला तनाव। वे धीमे-धीमे चलते-फिरते हैं और बहुत सुस्ती से अपने काम में लगे रहते हैं। वे तुम्हारी तरफ इस तरह देखते हैं, मानो उनकी आंखों के पीछे और ऐसी आंखें हैं, जो तुमसे दूर किसी चीज को घूरकर देख रही हों। तुम उनके गंदे शहर से घृणा और खेद के भाव लेकर बाहर निकलते हो और मन में कहते हो, "जीवन और मरण में वही अंतर है, जो मैंने इस गंदे नगर और उस साफ-सुथरे शहर में देखा। वहां हर चीज में सामर्थ्य के लक्षण स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं और यहां प्रत्येक वस्तु पर बुढ़ापा और कायरपन छाया हुआ है। उधर वसंत ऋतु की चहल-पहल नजर आती है और इधर पतझड़ और सर्दी की-सी कुंहलाहट छायी हुई है। वहां दृढ़-निश्चय एवं तरुणाई है, जो बागों में नाचती फिरती है और यहां कमजोरी और बुढ़ापा है, जो रेत में लिथड़ा पड़ा है।

परंतु यदि तुम अल्ला ताला के दिये हुए दिव्य चक्षु से उन दोनों शहरों की ओर देखने की क्षमता रखते तो उन दोनों को एक बाग के, एक ही प्रकार के दो वृक्षों के रूप में पाते। और अगर तुम्हारी दृष्टि और आगे बढ़कर तुम्हें उनकी सचाई तक पहुंचाती तो तुम देखते कि सभ्य नगर की ऊंची इमारतें जल्द मिट जानेवाले पानी के चमकदार बुलबुले हैं और असभ्य शहर के उजड़े हुए झोंपड़े छिपे और टिकाऊ रत्न हैं।

नहीं! जीवन सहज दिखाई देनेवाली ऊपरी चीजों का नाम नहीं; बल्कि उन छिपे हुए तथ्यों का नाम है, जो बाहरी छिलके से नजर आने-वाली चीज नहीं, किंतु छिलके के अंदर सुरक्षित गूदे का नाम है। मनुष्य चेहरों से नहीं, बल्कि दिलों से पहचाने जाते हैं।

इसी प्रकार धर्म प्रार्थना-स्थानों का और अनुकरणात्मक व्यवस्था का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नाम नहीं, बल्कि वे श्रद्धा के वचन हैं, जो अंतःकरणों में छिपे होते हैं और संकल्पों में बसते हैं।

इसी तरह कला उस आवाज का नाम नहीं, जिसे गायक सुरों के चढ़ाव-उतार के रूप में कानों तक पहुंचाता है, या जो भटई की लहरों के रूप में सुनी जाती है। वह रंग-बिरंगी लकीरों का नाम भी नहीं, जो तुम अपनी आंखों से देखते हो। कला वे लरजते हुए खामोश फासले हैं, जो गाने के उतार-चढ़ाव के बीच पैदा होते हैं। कविता की आत्मा में बसने-वाली अप्रिय नीरवता और मिट्टी से पोता हुआ हीरा है, जो प्रशंसा-काव्य के रूप में कानों तक पहुंचता है। उस सौंदर्य का नाम है, जो सुंदर रूप की ओर देखने पर तुम्हें दूर रहते हुए भी अपनी ओर खींचता है।

भाई, जमाने के रात-दिन बाहरी रात-दिन का नाम नहीं हैं और मैं रात-दिन के अंतर के साथ चलनेवाला इंसान हूं। मेरी वास्तविकता केवल उतनी ही बातों में निहित नहीं है, जो मैं तुम्हारी समझ को ध्यान में रख कर बताता हूं।

इसलिए मेरी वास्तविकता को आजमाने से पहले तुम मुझे मूर्ख न समझो। मुझे मेरे व्यक्तित्व के वर्तमान स्वरूप से अलग करने से पहले पूर्णत्व से अधिक अच्छा मत समझो। मेरी अंतरात्मा को देखने से पहले मुझे कंजूस कहकर न पुकारो, और मेरी दानशीलता के कारण जान लेने से पहले मुझे दानशील और उदार मत समझ लो। मेरे स्नेह के तेज और उसकी आग को भली-भांति परखने से पहले मुझे अपना मित्र कहकर न पुकारो और मेरे रिसते हुए घाव को अच्छी तरह छुए बिना मुझपर यह आरोप भी न लगाओ कि मेरा दिल प्रेम से खाली है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१६

विद्रोही आत्माएं

उस इंसान की तबाही का अंदाजा करो जो किसी कुमारी के प्रेम में फंस जाए और उसे अपने जीवन की साथिन बना ले, अपने गाढ़े पसीने की कमाई और अपने कलेजे का खून उसके पांवों पर निछावर कर दे और अपनी मेहनत का नतीजा और अपनी कोशिशों का ईनाम अपने हाथ से निकल जाने दे। फिर उसे अचानक यह मालूम हो जाय कि उस औरत ने, जिसे उसने दिनों की मेहनत तथा रातों के जागरण से पाया था, अपना दिल किसी दूसरे आदमी को दे दिया है, ताकि वह उसके पैसे और जायदाद से फायदा उठाये और उसके प्रेम की दुनिया को आबाद करे।

फिर उस औरत की बर्बादी को भी देखो, जिसने जवानी के नशे से अचानक होश में आकर अपने आपको एक मर्द के हवाले कर दिया हो। उसके माल और दौलत से गुलछर्रे उड़ाये हों। उसकी मुहब्बत तथा खातिर-दारी से फायदा उठाया हो; लेकिन उसके अपने दिल को मुहब्बत की चिंगारी ने छुआ तक न हो और वह अपनी आत्मा को उस रूहानी मदिरा से तृप्त न कर सकती हो, जो आदमी की आंखों से निकलकर औरत के दिल में टपकती है।

मैं रशीद बेग नामान को एक अर्से से जानता था। वह लेबनान का निवासी था और उसका जन्म बैरुत में हुआ था। वह एक बहुत पुराने अमीर घराने से संबंध रखता था, जिसमें रहन-सहन का पुराना तरीका अब तक मौजूद था। वह पुरखों की उन बातों को बयान करने में गर्व का अनुभव करता था, जिनसे खानदान की सज्जनता तथा गौरव दिखाई दे। वह रहने के ढंग और पुराने विश्वासों में अपने पुरखों के पीछे चला करता था। हां, आदतों और पोशाक में उसने तब्दीली की थी और वह पच्छिमी ढंग की पोशाक का शौकीन था। उसके खानदान की औरतें पच्छिमी पोशाक में ऐसी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मालूम होती थीं; जैसे हवा में उड़नेवाले पंछियों के झुंड।

रशीद बेग बड़ा नेक दिल और सुशील आदमी था। ज्यादातर शामी लोग चीजों को सिर्फ ऊपरी निगाह से देखते हैं और उनके भीतरी तत्वों का विचार बिलकुल नहीं करते। वे गीत के तत्वों को पहचानने की कोशिश नहीं करते, बल्कि उन आवाजों से आनंद हासिल करके रह जाते हैं, जो गीत को घेरे रहती हैं। वह अपना ध्यान उन बाहरी बातों पर जमाया करते हैं, जो जीवन के भेदों से दिव्य चक्षुओं को भी अंधा कर देती हैं; और चीजों के गुप्त रहस्यों को जानने के बजाय अपने आपको अस्थायी सुखों के लिये निछावर कर देते हैं। रशीद बेग उन आदमियों में से था, जो प्रेम को प्रकट करने या चीजों और इंसानों के संबंध में अंदाजा लगाने में जल्दबाजी कर बैठते हैं और उसके बाद अपनी जल्दबाजी पर शर्माते और पछताते हैं। लेकिन यह अनुभव उन्हें तब होता है जबकि समय हाथ से निकल जाता है और लज्जा एक वरदान के बजाय उपहास और तिरस्कार का कारण बन जाती है।

ये वे गुण और आदतें थीं, जिन्होंने रशीद बेग को गुलबदन के प्रेम में फंसा दिया। उसने गुलबदन से उस वक्त से पहले शादी कर ली, जबकि दोनों के दिल मिल जाते और उस वास्तविक प्रेम का प्रारंभ हो जाता, जो घर-गृहस्थी के जीवन को स्वर्ग बना देता है।

मैं कुछ साल बेरूत से बाहर रहा और जब वापस आया तो रशीद बेग से मिलने गया। मैंने देखा कि रशीद का शरीर दुबला हो गया है, रंग बदल गया है और उसके चेहरे से दुःख और शोक के चिह्न दिखाई देते हैं, उसकी चिंता से भरी आंखें और उदास निगाह उसके दिल की बर्बादी और हृदय के अंधेरे का हाल खामोश जबान में बयान कर रही है। चूंकि बाहर से मुझे उसकी तकलीफ के कोई कारण दिखाई न देते थे, इसलिए मैंने सवाल किया:

"ऐ भले आदमी, तुम्हें क्या तकलीफ है? और उस खुशी का क्या हुआ, जो तुम्हारे चेहरे से किरणों की तरह निकलती थी? और वह आनंद कहां गया, जो तुम्हारी जवानी के साथ जुड़ा हुआ था? क्या मौत ने तुम्हारे किसी प्यारे दोस्त के और तुम्हारे बीच फासला पैदा कर दिया है या अंधेरी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रातों ने तुम्हारी संपत्ति छीन ली, जो तुमने खुशहाली के दिनों में जमा की थी ? अपनी दोस्ती के खातिर बताओ तो सही कि कौन-सी मुसीबत तुम पर आ पड़ी है ?"

रशीद ने दर्द-भरी निगाहों से मेरी तरफ देखा और वह उन शब्दों पर विचार करने लगा, जो मैंने उसके अच्छे दिनों के बारे में कहे थे। फिर उसने आंखें बंद कर लीं और निराशा तथा क्लेश से भरी हुई आवाज में बोला :

"अगर तुम्हारा कोई मुरब्बी मर जाय और तुम अपने आसपास देखो कि कई दूसरे दोस्त मौजूद हैं तो तुम सब्र करोगे और तुम्हारा माली नुकसान हो जाय और तुम ऐसा विचार करो कि जिस तरह यह दौलत आई थी, उसी तरह और भी आ जायेगी तो तुम उस अमीर के आनंद में नुकसान को भूल जाओगे। लेकिन अगर इंसान के दिल की शांति नष्ट हो जाय तो वह उसे कहां पा सकता है ? और उसका बदला उसे कहां मिल सकता है ? मौत अपना हाथ बढ़ायेगी और तुम्हें अपने बेरहम पंजों से दबायेगी, लेकिन तुम मर नहीं सकोगे, यहां तक कि हँसती जिंदगी की अंगुलियां तुम्हें छू कर तुम्हारे चेहरे पर खुशी और मुस्कराहट के चिह्न पैदा कर देंगी। फिर बेसुधी के क्षणों में काल अपनी भयावनी आंखें तुम्हारी आंखों में डालकर तुम्हें गर्दन से पकड़ेगा और बड़ी बेरहमी से तुम्हें जमीन पर पछाड़कर अपने फौलादी पांवों से तुम्हें कुचल डालेगा और तुम पर हंसता हुआ चला जायेगा। कुछ अर्से के बाद वह शर्मिंदा होकर वापस आयेगा, अपने मुलायम हाथों से तुम्हें उठायेगा और आशा के गीत गाकर तुम्हें व्याकुल कर देगा। रात की कल्पनाओं के साथ अनगिनत विपदाएं और तकलीफें तुम्हारे सामने आवेंगी और सुबह होने तक तुम्हें उदास रखेंगी। तुम अपने विश्वास और दृढ़-निश्चय से परिचित हो और आशाओं में उलझे रहोगे।

"लेकिन अगर तुम्हारे नसीब में यह लिखा हो कि तुम्हारे अस्तित्व के कारण वह चीज उड़ जाय, जिसे तुम प्यार करते रहे हो और जिसे खाने के लिए अपने दिल का टुकड़ा और पीने के लिए आंखों का नूर देते रहे हो, जिसे तुमने अपने दिल में बिठा रखा हो और जिसकी खुराक तुम्हारा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कलेजा हो तो तुम्हारा क्या हाल होगा ? जब तुम यह देखो कि तुम्हारी चिड़िया तुम्हारे हाथ से निकलकर उड़ गई है और बादलों तक जा पहुंची है, फिर नीचे उतरी है, और किसी दूसरे पिंजड़े में जा ठहरी है और उसकी वापसी की कोई उम्मीद नहीं, तो फिर तुम क्या करोगे ? भगवान के लिए बताओ कि फिर तुम क्या कर सकोगे ? तुम्हें धीरज और चैन कैसे मिलेगा? और तुम्हारी उम्मीदें कैसे जिंदा रह सकेंगी ?"

रशीद वेग ने आखिरी वाक्य इस तरह कहा मानो उसका दम घुट रहा हो। वह अचानक अपने पैरों पर खड़ा हो गया और इस तरह कांपने लगा, जिस तरह हवा के झोंके से घास की सूखी पत्ती थरथराती है। उसने अपने हाथ सामने की ओर इस तरह फैलाये, मानो वह अपनी टेढ़ी उंगलियों से किसी चीज को पकड़कर उसे टुकड़े-टुकड़े कर देना चाहता हो। उसकी आंखों में खून उतर रहा था और उसके चेहरे का रंग गुस्से से लाल हो रहा था। उसकी आंखें बाहर निकली जा रही थीं और होंठ फड़क रहे थे। उसने एक चक्कर लगाया; जैसे वह अपने सामने एक अजगर को देख रहा हो, जो उसे निगल जाना चाहता हो। इसके बाद उसने मेरी तरफ देखा और उसके चेहरे का रंग पहले की तरह हो गया। उसका जोश और गुस्सा दर्द तथा दुःख में बदल गया और उसने रोते हुए कहा :

"वह औरत है ! हां, वह औरत है, जिसे मैंने गरीबी और गुलामी के गड्ढे से निकालकर उसके सामने खजाने डाल दिये और उसे इस लायक बनाया कि उसके शानदार कपड़े, सुंदर रूप और नौकर-चाकर देखकर दूसरी औरतें उससे ईर्ष्या करें। वह औरत जिसे मेरा दिल प्यार करता था और जिसके कदमों पर मैंने अपनी मुहब्बत और मेहरबानी निछावर कर दी और जिसे अपनी उदारता और कृपा से मैंने ऊपर उठाया, वह औरत, जिसका मैं सच्चा साथी, सच्चा दोस्त और ईमानदार पति था, वह बेईमान और बदमाश साबित हुई। अब वह गरीबी की बेइज्जत जिंदगी बसर करने के लिए एक-दूसरे आदमी के पास चली गई है। वह औरत, जिसका मैं आशिक था; वह खूबसूरत चिड़िया, जिसे मैंने अपने हृदय की धड़कनें दी, आंखों की पुतलियों का तेज पिलाया, अपनी छाती को उसका पिंजड़ा बनाया और अपने जिगर का टुकड़ा खाने को दिया, वह चिड़िया मेरे हाथों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स निकल गई है। इतना ही नहीं, बल्कि वह मुड़कर एक ऐसे पिंजड़े में चली गई है, जो झड़बेरी की तीलियों का बना हुआ है, जिसमें खाने के लिये कांटे और कीड़े-मकोड़े तथा पीने के लिये जहर और कड़ुवा पानी है। उस पवित्र देवता ने, जिसने मेरे प्रेम का बागीचा आबाद किया था, भयंकर शैतान का रूप बनाया और अंधेरे में जा फंसा, ताकि उसके पाप और उसकी काली करतूतें मुझे क्लेश दें।"

मैं अपनी जगह से उठा। मेरी आंखें भरी हुई थीं और हमदर्दी की भावना से मेरा हृदय भर गया था। फिर भी मैं चुपचाप इस तरह विदा हुआ मानो उसकी बातें बेसूद थीं। उसका घायल हृदय शोक में डूबा हुआ था और प्रकृति को मंजूर न था कि कोई चिंगारी उसके हृदय के अंधेरे को प्रकाशित करे।

कुछ दिनों बाद मैं एक छोटे-से मकान में गुलबदन से मिला, जो पेड़ों और फूलों से घिरा हुआ था। जब गुलबदन रशीद बेग नामान के घर थी तब उसने मेरा नाम सुन रखा था।

जब मैंने गुलबदन की सुंदर आंखें देखीं और उसकी मीठी आवाज का गीत सुना तो मैंने अपने दिल में कहा, "क्या ऐसा हो सकता है कि यह औरत बदमाश हो? और क्या यह मुमकिन है कि यह साफ-सुथरा चेहरा एक पापी दिल पर पर्दा डाल रहा हो?"

लेकिन मैंने इन विचारों को छोड़कर अपने हृदय से कहा, "जिस चीज ने उस बदनसीब आदमी को तबाह किया है, क्या वह यही खूबसूरत चेहरा नहीं हो सकता? और क्या हमने देखा-सुना नहीं कि बाहरी सुंदरता भीतरी विनाशों और गहरे दुःखों का कारण बन जाती है? क्या वही चांद जो कवियों की सूक्ष्म कल्पनाओं में प्रकट होता है, समुद्र में ज्वार-भाटा पैदा करके तूफान का कारण नहीं बन जाता?"

हम दोनों बैठ गये और गुलबदन ने इस तरह कि मानो उसे मेरी चिंता का ज्ञान हो, यह नहीं चाहा कि मेरी हैरानियों और मेरी शंकाओं के बीच जो कशमकश जारी थी, वह ज्यादा देर तक चलती रहे। इसलिये उसने अपने सुंदर सिर को अपने गोरे हाथ से सहारा दे दिया और संगीत के-से मधुर स्वर में बोलीं :

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"ऐ भले आदमी ! मैं अब से पहले कभी तुमसे नहीं मिली हूं, लेकिन तुम्हारे विचार लोगों के मुंह से सुन चुकी हूं। मैं जानती हूं कि तुम मुसीबत-जदा जमात की औरतों पर कृपा की निगाह रखते हो, उनकी कमजोरियों से तुम्हारी हमदर्दी है और उनके दुःख का तुम्हें ठीक-ठीक ज्ञान है। इसलिए मैं चाहती हूं कि अपने दिल का हाल तुम्हें सुनाऊं और अपना दिल खोलकर तुम्हारे सामने रख दूं ताकि तुम मेरी मुसीबतों को देख सको और लोगों को बता सको कि गुलबदन बेईमान और बदमाश औरत नहीं है।

"मेरी उम्र अठारह साल की थी कि वक्त और कुदरत ने मेरी किस्मत को रशीद बेग नामान से बांध दिया। उसकी उम्र उस समय कोई चालीस साल की थी। उसने मोहब्बत की पैंगें बढ़ायीं और आखीर में मुझे अपनी बीवी और अपने शानदार घर की मालकिन बनाया। मेरे आसपास नौकरों-चाकरों की बहुत बड़ी तादाद थी। रशीद बेग ने मुझे कीमती रेशमी कपड़े पहनाये। मेरे सिर, बांहों और गर्दन को जवाहरात से सजाया और मुझे एक तोहफे के तौर पर अपने यार-दोस्तों के मकानों पर लिये फिरा। उसके होंठों पर बहादुरी तथा जीत की मुस्कराहट नाच रही थी। वह कुतूहल और ललचाई निगाह से मेरी तरफ देखता था और जब औरतें मेरी खूबसूरती और फैशन की तारीफ करतीं तो उसका सिर गर्व से ऊंचा हो जाता। लेकिन शायद वह औरतों की उन कानाफूंसियों को नहीं सुनता था, जो वे अक्सर करती थीं। एक कहती कि "यह रशीद बेग की औरत है या बेटी?" दूसरी कहती, "अगर रशीद बेग अपनी जवानी के दिनों में शादी करता तो उसकी बेटी की उम्र गुलबदन से ज्यादा होती।"

"यह सब कुछ उस वक्त हुआ जबकि मैं जिंदगी के रहस्य से परिचित नहीं हुई थी। मेरे हृदय में मुहब्बत की पवित्र चिंगारी नहीं चमकी थी और मेरे भीतर सुख-दुःख का बीज नहीं बोया गया था। हां, यह सब कुछ उस वक्त हुआ जबकि मैं सुंदर कपड़ों और कीमती गहनों को ही, जिन्हें मैं पहने रहती थी, सच्चा शील समझती थी और जबकि मैं नींद से नहीं जागी थी। लेकिन जब मैं जाग गई और रोशनी ने मेरे दिल के सूनेपन को भर दिया और पाक आग ने मेरे दिल में एक जलन-सी पैदा कर दी तो मेरी आत्मा तकलीफों को महसूस करने लगी। जब मैं जागी तो मैंने देखा कि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरे पर दाएं-बाएं हिल रहे हैं और मुझे उड़ाकर मुहब्बत के आकाश की ओर ले जाना चाहते हैं। लेकिन जब मैंने अपने आपको धर्म-शास्त्र की उन कड़ियों में जकड़ा पाया, जिन्होंने मेरे जिस्म को उन बंधनों तथा उस धर्म-शास्त्र को समझने से पहले ही जकड़ दिया था तो मैं कांप उठी। जब मैं जागी और इन बातों से परिचित हुई तो मुझे मालूम हुआ कि स्त्री का शील आदमी की कुलीनता, श्रेष्ठता, सहनशीलता और कृपा पर आधार नहीं रखता, बल्कि वह उस प्रेम में है, जो उसकी आत्मा को पुरुष की आत्मा में मिला देता है और उसकी प्रीति को पुरुष के हृदय से बांधकर दोनों को 'दो शरीर और एक प्राण' कर देता है। जब यह दुःखदाई चीज मेरे सामने उजागर हुई तो मैंने देखा कि मैं रशीद नामान के घर में एक चोर की तरह हूं। मैं उसकी रोटी खाती हूं और रात के अंधेरे में छिप जाती हूं। मैंने समझ लिया कि मैं जो हर दिन उसके सहवास में बिताती हूं वह ऐसा झूठ है, जो मेरे माथे पर धोखेबाजी के जलते हुए अक्षरों में लिखा जा रहा है और आकाश और धरती उसे देख रहे हैं और यह कि मैं उसकी नेकी और कृपा के बदले में उससे दिली-मुहब्बत नहीं कर सकती और न उसकी भलाई तथा प्रेम के बदले में अपना प्रेम दे सकती हूं। मेरे मन में विचार आया—और वह था—कि मैं उससे प्रेम करना सीखूं। लेकिन मैं उससे प्रेम करना न सीख सकी, क्योंकि प्रेम एक ताकत है, जिसे हृदय पा नहीं सकते, बल्कि जो हृदयों को जीत लेती है। मैंने भगवान से प्रार्थना की और उसके सामने मैं बहुत रोई-धोई और रात की खामोशी में आसमान के आगे बेकार गिड़गिड़ाई कि 'हे आसमान, मेरी आत्मा को उस पुरुष की आत्मा से मिला दे, जिसे मैंने अपनी जिंदगी का साथी बनाया है।' लेकिन आसमान ने ऐसा न किया, क्योंकि प्रेम हमारी आत्माओं में भगवान की ओर से जन्म लेता है, मांगने से नहीं मिलता।'

"इस तरह मैं उस आदमी के घर पूरे दो साल तक रोती-बिलखती रही। मैं परिंदों की आजादी से ईर्ष्या करती थी और मुझे देखनेवाली औरतें मेरे कैदखाने पर ईर्ष्या करती थीं। मैं रात-दिन विलाप करती रहती थी और हर रोज की भूख और प्यास से मरी जाती थी। आखिर उन अंधेरे दिनों में एक रोज मुझे अंधेरे के पीछे रोशनी की मनोहर किरण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिखाई दी, जो मेरी आंख से निकल रही थी। मैंने देखा कि एक नौजवान जिंदगी के बहाव में अकेला बहा जा रहा है और उस मकान में किताबों और कागजों के ढेर में तनहा जिंदगी बिता रहा है। मैंने अपनी आंखें बंद कर लीं ताकि मैं उस किरण को न देख सकूं। मैंने अपने आपसे कहा, 'तुम्हारी किस्मत में कब्र का अंधेरा लिखा है, तो तुम रोशनी का लालच किसलिये करती हो?' उसके बाद मैंने स्वर्ग के देवदूतों का एक गीत सुना, जिसकी लय ने मुझे तड़पा दिया। मैंने अपने कान बंद कर लिये और अपने आपसे कहा, 'तुम्हारे नसीब में रोना-पीटना ही लिखा हुआ है तो तुम गीत की उम्मीद किसलिए करती हो?' मैंने अपने कानों को बंद कर लिया ताकि मैं उस गीत को न सुन सकूं। लेकिन मेरी आंखें उस किरण को देखती रहीं, हालांकि वे बंद थीं। मैं डर से घबड़ा उठी। एक फकीर एक अमीर के महल के पास एक हीरे की तरह पड़ा था, लेकिन मुझमें न यह हिम्मत थी कि उसे उठा लूं और न उसे छोड़ ही सकती थी। मैंने रोना शुरू किया। मैं मुसीबतों से घिरी हुई थी। आखिर मैं इंतजार और बेचैनी की चोट से जमीन पर गिर पड़ी।"

यहां गुलबदन एक क्षण के लिए रुक गई और उसने अपनी बड़ी-बड़ी आंखें बंद कर लीं, मानो भूतकाल का वह नजारा उसकी आंखों के सामने फिर रहा था। वह मेरी आंखों से आंखें मिलाने की हिम्मत नहीं कर सकती थी। उसके बाद उसने आंखें खोलीं और कहा :

"वह इंसान जो कभी न मिटनेवाले जगत से आते हैं और असली जीवन से परिचित होने के पहले ही वापस चले जाते हैं, वे उस औरत के दुःख से परिचित नहीं हो सकते, जिसके एक तरफ वह आदमी हो, जिसका प्रेम उसे भगवान की ओर से दिया गया हो और दूसरी तरफ वह आदमी हो, जिसके साथ वह दुनिया के धर्म-बंधनों से बंधी हुई है। यह एक दुःख-भरी कहानी है, जो औरत, खून और आंसुओं से लिखी जाती है और जिसे पढ़कर आदमी हंसते हैं, क्योंकि वे उसे समझ नहीं सकते और अगर समझ भी जाते हैं तो उनकी हंसी, निर्दयता और व्यभिचार में बदल जाती है और वह क्रोध की आग के जोश में औरत के सिर पर बरस पड़ते हैं और उसके कानों को धिक्कार और भर्त्सना से भर देते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"यह एक दर्दनाक दास्तान है, जिसका नाटक रात के अंधेरे में उस हर औरत के दिल में चलता है, जिसका शरीर इससे पहले कि वह विवाह की असलियत को समझकर किसी आदमी की गृहस्थी के अहाते में बंद हो जाय, वह अपनी आत्मा को किसी दूसरे आदमी के लिए तड़पती हुई पाती है, जिससे वह सच्चे अर्थों में प्रेम करती है। यह एक भयंकर लड़ाई है, जिसकी शुरुआत औरत की कमजोरी जाहिर होने से होती है और आखीर उस समय तक नहीं होता जबतक कि कमजोरी को मजबूती की गुलामी से छुटकारा न मिल जाय। मनुष्यों के सड़ियल धर्मशास्त्र और हृदय की पवित्र भावनाओं के बीच यह एक प्राणघातक युद्ध है—हां, उन्हीं पवित्र भावनाओं के बीच, जिनके कारण मैं कल तक जमीन पर पड़ी मौत की इच्छा कर रही थी और खून के आंसू रो रही थी।

"लेकिन मैं उठी और मैंने अपने आपको दूसरी औरतों की मूर्खता से छुड़ा लिया, अपने पैरों को कमजोरी और गुलामी के फंदों से अलग कर लिया और प्रेम और स्वतंत्रता के वायुमंडल में उड़ने लगी। अब मैं भाग्यवान हूं, क्योंकि मुझे उस पुरुष का सहवास हासिल है, जिसके हृदय से प्रेम की लपट मेरी तरफ लपकी। अब इस दुनिया में कोई शक्ति इतनी प्रबल नहीं है, जो मेरे इस सौभाग्य को मुझसे छीन सके, क्योंकि हमारी आत्माएं समझदारी और प्रीति के धागे में गुंथ चुकी हैं।"

गुलबदन ने मेरी ओर अर्थपूर्ण दृष्टि से देखा, मानो वह यह चाहती थी कि अपनी आंखों से मेरे हृदय के अंदर की स्थिति को देखकर यह मालूम कर ले कि मेरे मन पर उसकी बातों का क्या असर हुआ है। फिर वह मेरे भीतर से कोई आवाज सुनना चाहती थी। लेकिन मैं चुप रहा। इसलिए कि शायद मेरे बोलने से उसकी बातों के सिलसिले में कहीं रुकावट न पैदा हो जाय। गुलबदन ने अपनी बातों को जारी रखा। उसका स्वर बड़ा लुभावना था और उसमें पवित्रता और स्वतंत्रता की मिठास थी। उसने कहा :

"लोग आपसे कहेंगे कि गुलबदन बेईमान और बेवफा औरत है, जिसने अपने मन की काम-वासना की गुलामी स्वीकार की और जो उस आदमी को छोड़कर चली गई, जिसने उसकी इज्जत को बढ़ाकर उसे अपने घर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की स्वामिनी बनाया। लोग आपसे कहेंगे कि गुलबदन बदचलन है, जो विवाह के पवित्र और धार्मिक विधान को तोड़कर एक ऐसे पिंजरे में चली गई, जो नरक के कांटों से बना हुआ है। उसने अपने शरीर की पोशाक उतार फेंकी है और पाप और बेहयाई के कपड़े पहनकर वह धर्महीन बन गई है। वे आपसे कहेंगे कि गुलबदन ने लज्जा का बुरका तार-तार कर दिया है। लेकिन ये लोग उन खाली गुफाओं की तरह हैं, जो आवाजों को लौटा तो देते हैं, मगर उनके मानी नहीं समझते। वे न तो दुनिया के जीवों के ईश्वरी धर्मशास्त्र से परिचित हैं और न धर्म के वास्तविक लाभ को ही समझते हैं। वे नहीं जानते कि अपराधी कौन है और निरपराध कौन है। वे अपनी अदूरदर्शिता से सिर्फ बाहरी आचरणों को देखते हैं और उनके भीतरी भेदों पर निगाह नहीं डालते। वे मूर्खता के साथ फैसले करते हैं और सबके लिए एक-सा ही फतवा देते हैं। उनके सामने अपराधी, सदाचारी और बदमाश सब बराबर हैं।

"मैं अगर बदचलन और बेईमान थी तो रशीद नामान के घर में थी, जिसने इससे पहले कि कुदरत मुझे आत्मा तथा प्रेम के संबंध में कोई ढंग सिखाती, रीति-रिवाजों तथा अंधानुकरणों के दबाव से मुझे अपनी स्त्री बनाया। वहां मैं अपनी और भगवान की भी निगाह में नीच और पापिन थी, क्योंकि मैं भीख का टुकड़ा खाती थी और अपने शरीर से उसकी कामवासना को पूरा करती थी। लेकिन अब मैं पवित्र हूं, क्योंकि प्रीति के शील ने मुझे स्वतंत्र कर दिया है। अब मैं पवित्र और ईमानदार हूं क्योंकि अपने शरीर को रोटी के बदले और जीवन को कपड़ों के बदले बेच डालना मैंने छोड़ दिया है। लेकिन मैं उस वक्त बदचलन और पापी थी, किंतु लोग मुझे इज्जतदार औरत समझते थे। और आज मैं शीलवती और पवित्र हूं, लेकिन लोग मुझे तुच्छ और नीच समझते हैं, क्योंकि वे लोगों के व्यक्तित्व के विषय में उनके शरीरों पर से मत बनाते हैं और आत्मा का अनुमान जड़ वस्तुओं के पैमाने से करते हैं।"

गुलबदन खिड़की के करीब हो गई और उसने अपनी दाईं ओर शहर की तरफ इशारा किया। उसकी आवाज पहले से ज्यादा ऊंची हो गई और उसने ऐसी नफरत और हिकारत की आवाज में बोलना शुरू

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किया मानो उसे रास्तों में, छतों पर और खिड़कियों में पतन और विकृति के निशान दिखाई दे रहे थे। उसने कहा :

"देखो ! उस शानदार और बड़े महल की दीवारों पर के कसीदाकारी के रेशमी पर्दे बेईमानी तथा झूठ का सबूत दे रहे हैं उनकी छतें सुनहले बेलबूटों से सजी हुई हैं, लेकिन उनके नीचे बनावटीपन के पहलू में झूठ भरा हुआ है। उन लड़कियों को देखो, जिनसे ऊपरी तौर पर सज्जनता और सुशीलता टपकती है, लेकिन दरअसल उनके अंदर पाप, बदमाशी, और विनाश छिपा हुआ है। ये कलसदार कन्नें हैं, जिनमें आंखों के सुरमे और होंठों की लाली की तह में औरतों का कपट और फरेब छिपा हुआ है, और उनके कानों में आदमियों का गरूर और पशुता, सोने और चांदी की चमक-दमक बनकर जगमगाती है। उस आलीशान महल की दीवारें गर्व तथा बड़प्पन से आकाश तक पहुंच रही हैं, लेकिन अगर उन्हें उस धोखे-बाजी और झूठ का पता चल जाय, जो उन पर छाये हुए हैं, तो वे फट जायं और टुकड़े-टुकड़े होकर जमीन पर ढह पड़ें। ये वे मकान हैं, जिनकी ओर एक देहाती ललचाई आंखों से देखता है, लेकिन अगर उसे मालूम हो जाय कि इन मकानों में रहनेवालों में उस असली मुहब्बत का एक कतरा भी मौजूद नहीं, जिससे उसकी घरवाली का दिल भरा हुआ है तो उसे उनकी हालत पर तरस आ जाय।"

गुलबदन मेरा हाथ पकड़कर मुझे खिड़की के पास ले गई, जहां से महल नजर आ रहे थे और बोली, "आओ, मैं तुम्हें उन लोगों के राज बताऊं, जिनका नमूना बनना तुम हरगिज पसंद न करोगे। उस महल की तरफ देखो, जिसके खंभे संगमरमर के बने हुए हैं, जिसके छज्जे पीतल के हैं और जिसकी खिड़कियां बिल्लौरी हैं। उस महल में एक अमीर आदमी रहता है, जिसने धन-दौलत को अपने कंजूस बाप से विरासत में पाया है। दो साल हुए, उसने एक ऐसी औरत से शादी की थी, जिसके बारे में इससे ज्यादा कुछ मालूम न था कि उसका बाप ऊंचे खानदान का था और उसका रुतबा शहर के नामी-गिरामी लोगों में बहुत ऊंचा था। शादी के बाद अभी एक महीना भी पूरा न हुआ था कि उसने अपनी औरत को तड़पने के लिए छोड़ दिया और खुद वासनाओं से भरी लड़कियों के साथ मौज उड़ाने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लगा। उसने उस बेचारी को इस महल में इस तरह छोड़ दिया जैसे कोई शराबी शराब की खाली सुराही को छोड़कर चला जाता है। औरत रोती-पीटती रही और गम और गुस्से के दम घोंटनेवाले दुःख में फंसी रही। लेकिन जब उसे अपनी गलती का अहसास हुआ तो उसने सब्र किया। वह जान गई कि उसके आंसू उन आंसुओं से ज्यादा कीमती हैं, जो उसके शौहर जैसे आदमी के लिए बहाये जायं। अब वह औरत एक सुंदर नव-युवक के प्रेम में पड़ी है। उसकी प्रीति से उसका हृदय सुखी है और वह अपने पति की जायदाद से, जो उसके चारों तरफ बिखरी पड़ी है, अपने प्रेमी की जेबें भरती रहती है।

"अब उस मकान की तरफ देखो, जिसके आसपास बगीचा है। उसमें एक ऐसा आदमी रहता है, जिसका खानदान पुराने जमाने में राज करता था, लेकिन आजकल पैसे और दौलत की कमी और घराने के लोगों की मूर्खता के कारण यह घराना अपनी ऊंची जगह से गिर गया है। कुछ साल हुए, इस आदमी ने एक बदसूरत, लेकिन अमीर औरत से शादी की और उसकी संपत्ति खींच लेने के बाद उसे भुला दिया और एक सुंदरी के साथ संबंध स्थापित करके अपनी औरत को शर्म से अपनी उंगलियां काटने के लिए छोड़ दिया। अब वह अपने बालों को संवारने, आंखों में सुरमा लगाने, होंठों और गालों पर लाली और पाउडर लगाने और अपने शरीर को रेशमी कपड़ों से सजाने पर घंटों खर्च कर देती है, ताकि कोई आदमी उस पर मोहित हो जाय, लेकिन बेचारी को उसमें कामयाबी नहीं मिलती।

"अब उस बड़े मकान की तरफ देखो, जो बेलबूटों और तस्वीरों से सजा हुआ है। यह एक सुंदर लेकिन बदचलन औरत का घर है। उसका पहला खाविंद मर चुका है, जो बेहिसाब दौलत छोड़ गया है। इस औरत ने लोगों के उंगली उठाने से बचने के लिए एक मरियल जिस्म और कमजोर दिमाग वाले आदमी से शादी कर ली और अब वह शहद की मक्खी की तरह रहती है, जो फूलों से रस खींचती फिरती है।

"और उस मकान की तरफ देखो, जिसके कमरे बड़े-बड़े और मेहराबें सुंदर हैं। यह एक ऐसे आदमी का घर है, जो बड़ा लंपट और लालची है। उसकी औरत के शरीर में सुंदरता के सारे गुण और दिल में मिठास का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हर पहलू मौजूद है। उसके व्यक्तित्व में शारीरिक और आत्मिक गुणों का संयोग इस तरह है, जैसे अच्छी कविता में छंद के संगीत और अर्थ की विशेषता का संयोग होता है। वह ऐसी स्त्री थी, जो प्रेम में ही जीवन बिताती थी और प्रेम में ही मरती थी, लेकिन ज्यादातर लोगों की तरह उसके पिता ने भी उसके सयाने होने से पहले ही उसकी गर्दन में अनुचित और भद्दे ब्याह का फंदा डाल दिया। अब उसका शरीर दुबला-पतला है और कैद की गर्मी से वह मोमबत्ती की तरह पिघल रही है। वह धीरे-धीरे इस तरह उदास हो रही है जैसे तूफान के सामने भीनी खुशबू। वह किसी ऐसी चीज से प्रेम करने की इच्छा रखती है, जिसे वह अच्छी तरह जानती हो, लेकिन उसे कोई नजर नहीं आता। अपने इस रूखे जीवन से वह छुटकारा पाने और ऐसे आदमी की गुलामी से आजाद होने के लिए, जिसके दिन और रातें रुपया जमा करने में खर्च होती हैं, मौत को गले लगाने की इच्छा रखती है, और उसका पति उस घड़ी पर दांत पीसता है, जबकि उसने एक ऐसी औरत से ब्याह किया, जिससे कोई लड़का नहीं होता जो उसके पैसों और जायदाद का वारिस बने।

"अब उस अकेले मकान की ओर देखो, जो बागों के अंदर बसा हुआ है। यह मकान एक प्रतिभावान कवि का है, जिसका धर्म आध्यात्मिकता है। उसकी पत्नी मूर्ख एवं कठोर है। वह उसकी कविताओं पर हँसती है, क्योंकि वह उन्हें नहीं समझ सकती। वह उसकी रचनाओं की खिल्ली उड़ाती है और कहती है कि ये बड़ी अजीब हैं। इसलिए वह कवि अब एक विवाहिता औरत के प्रेम में फंसा है। उसको कवि का बहुत ध्यान रहता है और वह अपनी मुस्कराहट और नजर से अपने विचारों को कवि के हृदय तक पहुंचाती है।"

गुलबदन कुछ देर तक चुप रही और खिड़की के पास पड़ी हुई कुर्सी पर बैठ गई, मानो वह उन राजभरे घरों के झूठ और कपट को देख-देखकर थक गई थी। इसके बाद वह फिर बोली :

"यही वे महल हैं, जिनमें रहने पर मैं कभी राजी नहीं हो सकती। यही वे कब्रें हैं, जिनमें मैं अपनी जिंदगी को दफनाना नहीं चाहती। यही वे लोग हैं, जिनके पंजे से मैंने छुटकारा पाया है और उनके समाज से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निजात हासिल कर ली है। यही वे लोग हैं, जो औरतों के शरीर से विवाह करते हैं, लेकिन उनकी आत्माओं से नफरत करते रहते हैं। मैं उन पर कोई दोष नहीं लगाती, बल्कि उनसे माफी मांगती हुई उनकी इस बात से घृणा करती हूं कि वे झूठ, धोखेबाजी और गंदगी के गुलाम बन जाते हैं। मैं तुम्हारे सामने उनके दिलों के भेद और उनकी समाज की व्यवस्था के भेद इसलिए नहीं खोल रही हूं कि छिपाव और लुका-छिपी पसंद नहीं करती हूं, बल्कि मैंने यह सब इसलिए कहा है कि मैं तुम्हें उस जाति की असली हालत बताऊं, जिसकी तरह कल तक मैं स्वयं थी और तुम पर उन लोगों की स्थिति को प्रकट करूं, जो मेरे संबंध में हर किस्म की बुरी बातें किया करते हैं और कहते हैं कि मैंने अपने जिस्म की प्यास बुझाने के लिए उनका साथ छोड़ दिया। मैं उनके कपटजाल से निकल गई और मेरी आंखें इन्साफ, सचाई और शील की रोशनी देखने लगीं। उन्होंने अब मुझे अपनी बिरादरी से निकाल बाहर कर दिया है और मैं खुश हूं, क्योंकि घृणा उसी से की जाती है, जिसकी आत्मा जुल्म और अत्याचार के खिलाफ विद्रोह करती है। मैं कल तक एक शिष्टाचारयुक्त दस्तरख्वान[1] की तरह थी और रशीद बेग उसी वक्त मेरे पास आता था जब उसको भूख लगती थी। लेकिन हम दोनों की आत्माएं तुच्छ नौकरों की तरह एक-दूसरे से दूर थीं। जब मुझ पर सचाई उजागर हुई तो मैंने गुलामी से इंकार कर दिया। मैंने अनुभव किया कि मैं अपनी सारी उम्र एक भयानक मूर्ति के सामने सिर झुकाकर नहीं बिता सकती। इसलिए मैंने धर्मशास्त्र को छोड़ दिया और अपने बंधन तोड़ डाले। लेकिन मैंने यह उस समय तक नहीं किया, जबतक कि प्रीति की पुकार मेरे कानों में न पहुंची। मैं रशीद बेग के मकान से इस तरह निकली, जिस तरह एक कैदी कैदखाने से भाग निकलता है। मैंने शान-शौकत, नौकर-चाकर, दौलत और इज्जत को छोड़ दिया और अपने प्रीतम के उस घर आ गई, जिसमें कोई दिखावटी शिष्टाचार नहीं है। मैं जानती थी कि मैं जो कुछ कर रही हूं वह सच और मुनासिब है, क्योंकि भगवान की इच्छा यह नहीं हो सकती कि मैं अपने हाथों से अपने पंख काट दूं और घुटनों पर सिर

---

१. वह चादर, जिस पर खाना रखा जाता है.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रखकर धूल में तड़पती रहूं, और यह कहती रहूं कि मेरा नसीब ऐसा ही था। भगवान की यह इच्छा नहीं हो सकती कि मैं रोने-धोने में सारी उम्र गुजारूं और रात भर दुःख से छटपटाकर यह कहती रहूं कि सुबह कब होगी और जब सुबह हो जाय तो यह कहूं कि दिन कब बीतेगा? कुदरत की यह इच्छा कभी नहीं हो सकती कि इंसान की बरबादी हो जाय, क्योंकि कुदरत ने इंसान के दिल की गहराइयों में नेकी की इच्छा छिपाकर रखी है और इंसान की भलाई में भगवान की रोशनी छिपी हुई है।

"यही है मेरी कहानी, ओ भले आदमी! और आसमान तथा जमीन के सामने मेरी यही फरियाद है। मैं पुकार-पुकार कर कहती हूं, लेकिन लोग अपने कान बंद कर लेते हैं और मेरी बात नहीं सुनते। वे अपनी आत्मा की पुकार की भी परवा नहीं करते, क्योंकि वे इस बात से डरते हैं कि कहीं समाज की बुनियादें न हिल जायं। मैं इन्हीं मुसीबतों में फंसी रही। आखिरकार मुझे नेकी की झलक नजर आई। अब अगर मुझे इसी वक्त मौत आ जाय तो मेरी आत्मा आकाश के सामने बिना किसी डर और आशंका के जा खड़ी होगी और वह खुशी और उम्मीद से भरी हुई होगी। मैंने अपने विवेक के परदों को बड़े-बड़े धर्मज्ञों के सामने खोलकर रखा है और कठोरता से यह कह दिया है कि मैं कोई काम ऐसा नहीं करूंगी, जिसे मेरा दिल न चाहे। इंसान का मन भगवान के व्यक्तित्व का एक जादू है। मैं अपने दिल की आवाज और देवदूतों की पुकार के सिवाय किसी दूसरी आवाज की ताबेदारी नहीं करूंगी।

"यह है मेरी कहानी, जिसे बेरुत के लोग जीवन के लिए एक अभिशाप और समाजरूपी शरीर के लिए एक गंदा फोड़ा समझते हैं। लेकिन वे उस समय लज्जित होंगे, जबकि वे मुहब्बत की असलियत को जानेंगे—उस प्रेम की जो उनकी अंधेरी रूह में मौजूद है। उनके दिलों में यह सचाई उसी तरह उगेगी, जिस तरह मरे हुए इंसानों से भरी हुई जमीन से सूरज फूलों को पैदा करता है। उस समय वे मेरी कब्र के पास से गुजरेंगे तो वहां ठहर जायंगे और कहेंगे कि यहीं वह गुलबदन सोती है, जिसने इंसानी जरूरत के सड़े-गले बंधनों से अपने आपको आजाद किया और यह इसलिए किया कि वह असली मुहब्बत की इज्जत को बनाये रखे।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गुलबदन की बातें अभी खत्म नहीं हुई थीं कि इतने में दरवाजा खुला और एक सुंदर और सुडौल शरीर का नौजवान अंदर आया। उसकी आंखों से जादू की किरणें निकल रही थीं और उसके होठों पर मुस्कराहट थी। गुलबदन खड़ी हो गई और बड़े प्रेम से उसका हाथ पकड़कर उसे मेरे पास ले आई। उसने उस नौजवान को मेरा नाम बड़े आदर से और उसका नाम मुझे बड़ी सादगी से बताया। मैं तुरंत समझ गया कि यह वही नौजवान है, जिसके लिए गुलबदन ने दुनिया को झुठलाया और उसके विधानों तथा रूढ़ियों का विरोध किया।

हम तीनों बैठ गये। वहां इतनी खामोशी छा गई कि ऐसा मालूम होता था, मानो हमारी आत्माएं देवदूतों की ओर उड़ी जा रही हैं। मैंने उन पर निगाह डाली। वे दोनों एक-दूसरे के पहलू में बैठे थे और ऐसा मालूम होता था, जैसे दोनों के बीच में कोई फासला नहीं है। मैं गुलबदन की कहानी का मतलब फौरन समझ गया और जान गया कि उस समाज के खिलाफ, जो विद्रोही आत्माओं से नफरत करता है—उसकी शिकायत का क्या मतलब है। मैंने देखा कि मेरे सामने दो शरीर हैं, लेकिन उनमें एक ही स्वर्गीय आत्मा बस रही है। दोनों यौवन और एकता की मूर्तियां हैं। उनके हृदयों में सच्चा प्रेम निवास करता है और वे लोगों के भले-बुरे कहने की परवा नहीं करते। दोनों में दिली एकता मौजूद है और दोनों के साफ और पाक चेहरों में भलमनसाहत और पवित्रता की झलक दिखाई देती है। मैंने अपने जीवन में पहली बार यह दृश्य देखा कि ऐसे स्त्री-पुरुषों के चारों ओर नेकी चक्कर लगाती है, जिन्हें धर्म ने नीच ठहराया है और जिन्हें समाज ने अपने में से निकाल बाहर कर दिया है।

थोड़ी देर तक मैं बैठा रहा, लेकिन इसके बाद किसी तरह की बातचीत किये बिना वहां से विदा हुआ और उस छोटे-से मकान से, जो प्रेम और नीति का मंदिर था, बाहर निकला। मैं उन गलियों और महलों के बीच से गया, जिनके रहस्य गुलबदन ने मुझे बताये थे। मैं उसकी बातों और उनके आरंभ और अंत पर विचार करता जा रहा था, लेकिन अभी मैं उस बस्ती से निकला न था कि मुझे रशीद बेग नामान की याद आई। मैंने अपने मन में कहा, "वह मुसीबतजदा आदमी बरबाद हो गया है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेकिन क्या आसमान उसकी बात को सुनेगा, जबकि उसके सामने गुलबदन भी अपने ऊपर किए गये अत्याचारों की शिकायत पेश करेगी? क्या वह स्त्री अपराधी है, जिसने उसे छोड दिया और अपनी स्वतंत्र इच्छा का हुक्म माना? या वह आदमी दोषी है, जिसने उसके साथ उस समय गृहस्थी का संबंध जोड़ा, जबकि उसकी आत्मा मुहब्बत को चीन्हती न थी? दोनों में अत्याचारी कौन है और अत्याचार-पीड़ित कौन? दोनों में अपराधी कौन है और निरपराध कौन है?

इसके बाद मैं अपने मन में सोचने लगा कि दुनिया में ऐसी स्त्रियां बहुत हैं, जो अपने निर्धन पतियों को छोड़कर धनवान लोगों से संबंध कायम कर लेती हैं; क्योंकि उनकी अंदरूनी इच्छा यह होती है कि 'हम कीमती कपड़े पहनें और भोग-विलास की जिंदगी बितायें।' यह इच्छा उन्हें अंधा कर देती है और वे अपमानित तथा लांछित जीवन बिताने को तैयार हो जाती हैं। लेकिन क्या गुलबदन को भी यही लालसा थी, जो एक धनी आदमी के शानदार महल से निकलकर एक गरीब आदमी की झोंपड़ी में चली गई है, और ऐसी झोंपड़ी में पहुंच गई है, जहां पुरानी किताबों के ढेर के सिवाय और कुछ नहीं? बहुत-सी स्त्रियां ऐसी हैं, जो नारी के स्वाभाविक शील तथा लज्जा को मार देती हैं और कामवासना को जीवित रखती हैं। वे अपने पतियों को अपनी शारीरिक वासनाओं की तृप्ति के लिए रोते-चिल्लाते छोड़ देती हैं और दूसरे लोगों के पास चली जाती हैं। क्या गुलबदन ने भी अपनी वासनाओं की तृप्ति के लिए ही ऐसा किया है और अपने आपको अपने दिलपसंद नौजवान के हवाले कर दिया है? और क्या वह ऐसा नहीं कर सकती थी कि अपनी कामवासनाओं को अपने पति के घर पर रहकर ही पूरा कर लेती और उन लोगों से छिपे तौर संबंध रखती, जो उसकी सुंदरता के उपासक और उसकी प्रीति पर मर मिटनेवाले थे? गुलबदन एक पामाल औरत थी। वह नेकी की इच्छुक थी और नेकी उसे मिल गई। यही वह सचाई है, जिसके कारण समाज उसे हिकारत की निगाह से देखता है और धर्मशास्त्र कहता है कि उसकी गर्दन उड़ा देनी चाहिए।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसके बाद मुझे विचार आया कि क्या स्त्री के लिए यह मुनासिब है कि वह अपनी नेकी को अपने पति के विनाश की कीमत देकर खरीदे ? इसका उत्तर मेरे विवेक ने यह दिया कि क्या पुरुष के लिए यह उचित है कि वह अपनी नेकी के लिए अपनी औरत की इच्छाओं को गुलाम बना ले ?

मैं चलता जा रहा था और गुलबदन की आवाज मेरे कानों में गूंज रही थी। अंत में मैं शहर के पास पहुंच गया। सूरज डूब रहा था। बाग-बगीचे शांति तथा तनहाई की चादर में छिप जाना चाहते थे और पक्षी शाम के गीत गा रहे थे। मैं ठहर गया। मैंने अपने आपसे कहा, आजादी के स्वर्ग के सामने ये पेड़ सुगंधित हवा के झोंकों का आनंद ले रहे हैं और सूरज और चांद की किरणों से आनंदित हो रहे हैं। ये पक्षी आजादी की हवा में विहार कर रहे हैं। ये फूल आजादी के वातावरण में महक फैला रहे हैं। उनकी आंखों के सामने आनेवाले प्रभात का सौंदर्य प्रकाश फैलाता है। इस धरती पर जो भी चीज है, वह अपनी इच्छा के अनुसार जिंदगी बसर करती है और अपनी आजादी पर फख करती है। लेकिन इंसान इस वैभव से वंचित हैं, क्योंकि उनकी पाक रूहें दुनिया के तंग विधानों की गुलाम हैं। उनकी रूहों और जिस्मों के लिए एक ही ढांचे में ढला हुआ कानून बनाया गया है और उनकी इच्छाओं और ख्वाहिशों को एक छिपे हुए और तंग कैदखाने में बंद कर दिया गया है। उनके दिमाग के लिए एक गहरी और अंधेरी कब्र खोदी गई है और अगर कोई उसमें से उठे और उनके समाज और उसके कानूनों से अलग हो जाय तो वे कहते हैं कि यह आदमी विद्रोही और बदमाश है। यह बिरादरी से खारिज है और मार डालने लायक है! लेकिन क्या इंसान को कयामत तक इस सड़ियल समाज की गुलामी में जिंदगी बिताते रहना चाहिए या उसे अपनी आत्मा को इन बंधनों से मुक्त करा लेना चाहिए ? क्या आदमी को मिट्टी में पड़े रहना चाहिए, या अपनी आंखों को सूर्य बना लेना चाहिए ताकि उसके शरीर की छाया कूड़े-करकट पर पड़ती हुई नजर न आये ? ○

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परिशिष्ट

जिब्रान का सर्वांगीण क्रांतिवाद

'विद्रोही आत्माएं'[1] को जिब्रान के जीवन में तथा अरबी साहित्य में सभी दृष्टियों से महत्त्व प्राप्त हुआ है। जिब्रान ने अपनी उम्र के अठारह बरस से लेकर बीस बरस तक के अरसे में (सन् १९०१ से १९०३ तक) यह पुस्तक लिखकर प्रकाशित की। इस दो बरस के जमाने में वह पेरिस में चित्रकला का अध्ययन कर रहे थे। इन कथाओं में जीवन का सर्वांगीण क्रांतिवाद व्यक्त हुआ है। जिब्रान की उम्र, उनकी कौटुंबिक परम्परा और उनके देश की सामाजिक, आर्थिक तथा राजनैतिक परिस्थिति आदि सबका विचार करने पर मालूम होगा कि इस क्रांतिवाद की प्रेरणा उन्हें होने में ही उसकी अलौकिकता का दर्शन होता है। उम्र के ग्यारह बरस तक उनसे अरबी, फ्रांसीसी एवं अंग्रेजी भाषाओं का अध्ययन घरेलू तौर पर कराया गया था। ग्यारह बरस की अवस्था में (सन् १८७४) वह अपनी माता और अन्य कुटुंबियों के साथ बोस्टन (अमरीका) गए। लेकिन दो-तीन साल में ही वह अपनी जन्म-भाषा का अध्ययन करने के लिए जिद पकड़कर अपनी मातृभूमि को वापस गए। बैरूत के मदसतुल हिकमत (ज्ञानशाला) से उन्होंने मैट्रिक्युलेशन की परीक्षा पास की और उस वक्त पाठ्यक्रम के अलावा वैद्यक, अंतर्राष्ट्रीय कानून, धर्म का इतिहास, संगीत आदि विविध विषयों का उन्होंने अध्ययन किया। सन् १९०७ ईसवी में उन्होंने अपनी उच्च शिक्षा पूर्ण की। पन्द्रह बरस की उम्र में उन्होंने 'प्रोफेट'[2] की अरबी भाषा में पहली प्रति तैयार की। सोलह साल

---

१. जिब्रान का कहानी-संग्रह है.

२. इसका अनुवाद 'सस्ता साहित्य मंडल' से 'मीठा संदेश' के नाम से निकला है.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की उम्र में 'अल् हकीकत' (सत्य) नामक साहित्य तथा दर्शन की चर्चा करनेवाली मासिक पत्रिका चलाई। सत्रह साल की उम्र में उनका एक गद्यगीत अखबारों में छपा और इसी अरसे में उन्होंने इस्लाम के उदयपूर्व अरबी कवियों के चित्र बनाए। इन कवियों के रेखाचित्र कहीं भी नहीं पाये जाते थे। सबसे पहले जिब्रान ने ही अपनी प्रतिभा से उनकी आकृतियों की कल्पना करके उन्हें आकार प्रदान किया। उपाधि प्राप्त कर चुकने के बाद पेरिस जाते समय उन्होंने यूनान, इटली तथा स्पेन का दौरा किया।

जिब्रान का जन्म मैरोनाइट चर्च के सम्प्रदाय में हुआ था। उनके नाना उस चर्च के एक पुरोहित थे और उनके दादा उत्तर लेबनान के एक बड़े अमीर थे। वे अपने बड़प्पन का एहसास रखनेवाले थे। जिब्रान की मां का नाम कामिला और पिता का नाम खलील था। खलील-कामिला के प्रथम पुत्र का नाम खलील ही रखा गया। खलील के मानी है 'चुना हुआ प्रिय मित्र', कामिला का अर्थ है 'परिपूर्ण' और जिब्रान शब्द से 'आत्माओं को रोगमुक्त करनेवाला या संतोष देनेवाला' ऐसा अर्थ सूचित होता है। अरबी भाषा में प्रत्येक नाम का कुछ-न-कुछ निश्चित अर्थ हुआ करता है। अरबी में 'ग' वर्ण न होने से 'जिब्रान' उच्चारण नहीं हो सकता। मूल अरबी का उच्चारण 'जिब्रान' ही है। अरबी में महाकवि जिब्रान का नाम 'जिब्रान खलील जिब्रान' लिखा जाता है। अंग्रेजी में खलील के हिज्जे Khalil के बदले Kahlil लिखे जाते हैं, जो कि खुद जिब्रान ने ही किये हैं।

कवि जिब्रान के जीवन पर उनकी मां कामिला और बहन मरियाना का खास असर हुआ है। कामिला कई भाषा जानती थी। वह बहुत ही रूपवती थी और उसकी आवाज बड़ी मीठी थी। उसने इस मीठी आवाज का प्रसाद अपने पुरोहित पिता से पाया था। वह छोटे खलील को हर रोज शाम को घंटों गीत सुनाया करती। हारून-उल-रशीद की कहानियां और अरबी जीवन की लोककथाएं जिब्रान ने कामिला के मुंह से अपने बचपन में सुनी थीं। कामिला को पूरा यकीन हो गया था कि उसका लड़का कोई अलौकिक पुरुष है। जिब्रान अपनी बहन के बारे में बड़े गर्व से कहा करता था, "अगर इस धरती पर कोई संत जीवित है तो वह मरियाना जिब्रान मेरी मां की बेटी है।" जिब्रान का व्यक्तित्व जिस कौटुंबिक वायुमंडल में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विकसित हो रहा था; उसका स्वरूप इस प्रकार का था।

जिब्रान के देश का नाम था लेबनान। इस देश की सांस्कृतिक परंपरा हजारों बरस की पुरानी है। मिसर, असुर (असीरिया) और खाल्डिया देशों की संस्कृति की सारी परंपराएं लेबनान के अति प्राचीन इतिहास में पूंजीभूत हुई हैं। मौंट लेबनान और उसके आसपास का इलाका यहूदी पैगम्बरों की पुण्यभूमि है। ईसाई धर्म के संस्थापक ईसामसीह ने इसी इलाके में जन्म लिया था। ईसा की जन्मभाषा अरबी आज भी वहां चलती है। यूनानी तथा रोमन संस्कृतियों के सारे अच्छे-बुरे अवशेष यहां की संस्कृति में समाये हुए हैं। यहूदी और ईसाई धर्मों के बाद उसी सेमेटिक वंश में उदय पाया हुआ इस्लाम धर्म भी इस प्रदेश पर अपनी गहरी छाप डाल गया है। लेबनान की प्रमुख भाषा आज भी अरबी ही है और वहां के लोग यहूदी, ईसाई, इस्लामी आदि भिन्न-भिन्न धर्म-संप्रदायों के होते हुए भी उन सबकी संस्कृति एक ही है। आज उनका एक अलग राष्ट्र भी बन गया है। आधुनिक पश्चिमी सभ्यता का भी इस देश की संस्कृति पर बहुत गहरा असर हुआ है। इस तरह का यह संस्कृति-समृद्ध देश कई शताब्दियों तक तुर्की साम्राज्य के नीचे दबा पड़ा था। राजनैतिक परतंत्रता, धार्मिक अंधश्रद्धा और सामाजिक रूढ़ियों की गुलामी आदि के शिकंजे में फंसकर साधारण जनता का जीवन पूरी तरह जड़ और चेतना-हीन बन गया था। जिब्रान ने जिस सामाजिक और राजनैतिक परिस्थिति के खिलाफ अपने व्यक्तित्व को खड़ा किया, उसका स्वरूप इस प्रकार था।

सामाजिक परिस्थिति तथा व्यक्तिगत मनःस्थिति के संघर्ष में जीवन के नानाविधि ध्येयवाद जन्म लेते हैं। सामाजिक परिस्थिति अगर बहुत ही जड़ एवं चेतनाहीन बन गई हो तो उस परिस्थिति से लोहा लेनेवाला मन विद्रोह का रूप धारण करता है। यह विद्रोह प्रथम आध्यात्मिक वेश में प्रकट होता है और उस आध्यात्मिक स्वरूप में से ही आगे यथासमय भौतिक तथा व्यावहारिक आंदोलन जन्म लेते हैं। इस प्रकार आध्यात्मिक विद्रोह का प्रथम स्वरूप स्वभावतः साहित्य-सृष्टि में आकर प्राप्त करता है। जिब्रान की प्रारंभिक साहित्य-सृष्टि का स्वरूप भी ऐसा ही है। 'विद्रोही आत्माएं' में यह आध्यात्मिक विद्रोह उत्कट सामर्थ्य के साथ प्रकट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हुआ है। जीर्ण तथा जड़ बने हुए समाज में सत्ताधारी संस्थाएं बुद्धि-द्रोही और चैतन्य विरोधी होती हैं। वे इतनी स्थिति-प्रिय बनी हुई होती हैं कि किसी भी प्रकार की गति को बर्दाश्त करने की शक्ति उनमें नहीं रहती। इसलिए ऐसे समाज की विद्रोही आत्मा को सब तरफ से दबाने और मिटाने के प्रयत्न किये जाते हैं। यही अनुभव खलील जिब्रान को भी हुआ। 'विद्रोही आत्माएं' के प्रकाशन के थोड़े ही दिनों बाद पुरोहितों द्वारा बैरूत के बाजारों में इस किताब को खुलेआम जलाया गया। यह जाहिर किया गया, "यह किताब खतरनाक, क्रांतिकारी और युवकों के दिमाग में जहर पैदा करने-वाली है।" उन दिनों जिब्रान पेरिस में रोडिन के मित्र एवं शिष्य की हैसियत से शांति के साथ चित्रकला के अध्ययन में मग्न थे। जब उन्हें इस अग्निकांड की खबर मिली तो उन्होंने केवल इतना ही कहा, "इस किताब का दूसरा संस्करण तुरंत निकालने के लिए यह एक अच्छा कारण हो गया।" लेकिन इस किताब को जलाने पर ही यह बात नहीं रुकी, उन्हें पेरिस में यह कहलवाया गया कि उन्हें चर्च से बहिष्कृत किया गया है। फिर तुर्की साम्राज्य के जालिम हुक्मरानों की तरफ से उन्हें इस बात की इत्तला मिली कि उन्हें उनके देश से निष्कासित किया गया है।

सन् १७०८ ईसवी में तुर्किस्तान में जब नई सरकार आई तो जिब्रान के देश निकाले की आज्ञा को दोबारा जारी किया गया। लेकिन उससे उसकी कीर्ति घटने के बजाय बढ़ती ही गई। लेबनान के जवानों के दिलों पर उनकी पकड़ ज्यादा मजबूत होती गई और उसकी सुलगाई हुई क्रांति की ज्वाला भड़कती ही गई, जिसने लेबनान की सारी जीर्णता एवं जड़ता को भस्म कर दिया।

सन् १९१० ईसवी में जिब्रान ने न्यूयार्क में अपना स्थायी निवास बनाया और जीवन के अंत तक (१९३७) अमरीका ही उनकी कर्मभूमि रही। लगभग दो तपों के इस कालखंड में उन्होंने चित्रकार एवं साहित्य-कार की हैसियत से अपने कारनामे दिखाये। अरबी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में उन्होंने विविध प्रकार के साहित्य का निर्माण किया और दोनों साहित्यों में अपना नाम अजरामर किया। उनके देश के हजारों युवक अमरीका में जा बसे थे। उनके वह मार्गदर्शक और अमरीका में रहनेवाले

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अरबी साहित्यिकों में से प्रतिभाशाली युवकों के वह स्फूर्तिदाता बने।

तुर्की साम्राज्य के विनाश में से मध्यपूर्व में जिन नये राष्ट्रों ने जन्म लिया उनमें लेबनान के जनतंत्र राज्य का प्रमुख स्थान है। इस नवराष्ट्र के निर्माताओं में खलील जिब्रान का स्थान विशेष रूप से उच्च है। 'विद्रोही आत्माएं' के इस जन्मदाता को उसके स्वतंत्र राष्ट्र ने बहुत गौरवान्वित किया। जिब्रान के जीवित-काल में उसका गौरव करने का सौभाग्य उसके देश-बंधुओं को नहीं मिल सका था, इसलिए उन्होंने उसकी मृत्यु के बाद उसकी मृत देह को अमरीका से शाही शान के साथ अपनी मातृभूमि में ले जाकर अत्यन्त अभूतपूर्व जयनाद में उसके बिशेरी नामक जन्म-ग्राम में वहां के ईसाई मठ के पास ही उसकी स्थापना की। जीवितकाल में देश-भक्ति के अपराध में बहिष्कृत हुए इस विद्रोही के सम्मान में, उस वक्त सारे सरकार अफसरों, चर्च के प्रमुख धर्म गुरुओं और सब धर्मों तथा पंथों के नागरिकों ने जोश-खरोश के साथ हिस्सा लिया और जिब्रान के प्रति अपना प्रेम जाहिर किया। महाकवि खलील जिब्रान के माहात्म्य को साबित करने के लिए इससे अधिक और कौन-से सबूत की जरूरत है।

'विद्रोही आत्माएं' में जीवन का जो सर्वांगीण क्रांतिवाद व्यक्त हुआ है, उसके संबंध में यहां कुछ विचार करना उचित होगा। मानवी जीवन के संबंध में सोचते समय प्रारम्भ में ही यह सवाल पैदा हो जाता है कि व्यक्ति को प्रधानता दी जाय या समाज की श्रेष्ठता को स्वीकार किया जाय? इस प्रश्न के अलग-अलग उत्तरों के अनुसार अलग-अलग जीवन-दर्शनों का निर्माण हुआ है। मेरे मन में व्यक्ति विरुद्ध समाज जैसा आत्यंतिक विरोध हो ही नहीं सकता। व्यक्ति का जन्म समाज में ही होता है और व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के लिए समाज के सहयोग की सदैव अपेक्षा रहती है। इसलिए समाज के विघात पर किसी भी व्यक्ति का विकास किसी भी हालत में आधार नहीं रख सकता। साथ ही यह बात भी ध्यान में रखने लायक है कि समाज का विकास कोई अमूर्त अव्यक्त घटना नहीं है। समाज के विकास का मतलब ही है उसकी इकाइयों, व्यक्तियों का विकास। जिस समाज में व्यक्ति का विकास नहीं हो सकता वह समाज जड़ ही समझा जाना चाहिए।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस संबंध में और एक महत्त्व की बात याद रखनी चाहिए। समाज में रहनेवाले कुछ थोड़े व्यक्तियों के विकास के लिए उसकी बहुसंख्य इकाइयों का विनाश होता हो तो उसे भी संतोषजनक स्थिति नहीं कह सकते। तत्त्वतः समाज के प्रत्येक व्यक्ति को अपनी अंतर्गत शक्तियों का विकास करने का समान अवसर और समान साधन उपलब्ध होने चाहिए। जिस समाज में इस प्रकार की सर्वोदयकारी जीवन-पद्धति का निर्माण हुआ हो, उसी समाज के संबंध में यह कहा जा सकता है कि वह सचमुच सुसंस्कृत हुआ है। इस प्रकार के सर्वोदयकारी जीवन-दर्शन का स्वरूप कैसा होगा? समाज-विकास को प्रेरणा देनेवाली जीवन-शक्ति कौन-सी है? उस शक्ति की उपासना किन साधनों से हो सकेगी? ये ही सवाल जीवन-दर्शन की खोज में अत्यन्त महत्व के हैं।

यों देखा जाय तो समाज एक निर्गुण वस्तु है। वह निराकार भी है। सगुण और साकार वस्तु तो व्यक्ति ही है। इसलिए उपरोक्त प्रश्न का उत्तर व्यक्ति के ही जीवन में मिलना चाहिए। इसलिए मानवी जीवन की सारी सम्पत्ति व्यक्तिगत और आध्यात्मिक ही हुआ करती है। सारे विश्व को आत्मसात् करने की क्षमता रखनेवाला व्यक्तिवाद ही मानवी-जीवन का यथार्थ दर्शन है। मानवी व्यक्ति अपने विकास के लिए अन्य व्यक्तियों और प्रकृति की अपेक्षा रखता है। इस अपेक्षा में ही मानव के सारे दुःख और सारा आनंद समाया हुआ है। जीने की अभिलाषा की मूलभूत प्रेरणा ही सामाजिक है। इसलिए व्यक्ति की जीवन-प्रेरणाएं जितनी मात्रा में उत्कट और प्रामाणिक बनती जाती हैं उतनी मात्रा में व्यक्ति का व्यक्तित्व कम होता जाता है और वह विश्वमय बनने लगता है। व्यक्ति को विश्वमय बनानेवाली ये प्रेरणाएं, खलील जिब्रान की भाषा में कहा जाय तो, श्रद्धा प्रेम और कर्म हैं।

वास्तव में श्रद्धा, प्रेम और कर्म इन तीन शब्दों में जीवन का सारा तत्वज्ञान समाया हुआ है। जीने के लिए नानाविध कर्मों की आवश्यकता इतनी स्पष्ट है कि उसके बारे में विवेचन करना हास्यास्पद होगा। लेकिन जब यह कर्म प्रेम से, स्वेच्छा से और आंतरिक प्रेरणा से होता है तभी वह जीवन को कृतार्थ बनाता है। जिस समय यह आंतरिक प्रेरणा सूख जाती

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है तो कर्म दुःखमय बनता है और फिर कर्मसंन्यास का निराश तत्वज्ञान जन्म लेता है, या फिर लाजिमी तौर पर सख्ती के साथ कर्म करनेवाले भौतिक और जड़ तत्वज्ञान पैदा होते हैं। इसलिए जीवन में कर्म से भी ज्यादा महत्व इस आंतरिक प्रेरणा को है। प्रारंभ में इस प्रेरणा का स्वरूप संकुचित और इसीलिए स्वार्थपूर्ण मालूम होता है। इसी को वासना कहते हैं। इन वासनाओं के वास्तविक स्वरूप को न पहचानने के कारण उन्हें अनर्थकारी कहनेवाला एक बैरागी तत्वज्ञान दुनिया ने पैदा कर रखा है। असल में वासना नहीं, बल्कि वासना की दुर्बलता अनर्थकारी है। वासना ही जीवन-शक्ति है। वह जितनी उत्कट और प्रबल बनती जायेगी, उतनी ही उसमें देखने की शक्ति बढ़ती जायेगी और जब वासना में देखने की शक्ति आ जाती है तब उसको श्रद्धा कहते हैं। यह श्रद्धा व्यक्ति को विश्व के साथ एकरूप कर देती है और अपनी व्यापकता में अपने व्यक्तित्व का विसर्जन कर लेती है। जीवन की नित्यता और अखंडितता पर आरूढ़ हुई श्रद्धा ही मनुष्य को प्राप्त हो सकनेवाला सबसे बड़ा ज्ञान है, ऐसा कहा जा सकता है। उसी में उसकी सामर्थ्य और उसकी शांति समाई हुई है।

'विद्रोही आत्माएं' में जिन्नान का यह जीवन-दर्शन हमें संपूर्ण स्वरूप में देखने को मिलता है। मानव ने अपने विकास के लिए अलग-अलग सामाजिक संस्थाओं का निर्माण किया है। आदि-मानव से लेकर आजतक के हजारों बरस के समाज-विकास में उनका भी विकास होता आया है। मोटे तौर पर ये सामाजिक संस्थायें चार स्वरूपों में पाई जाती हैं—विवाह, वित्त, दंड और धर्म; इस तरह उनके नाम बताये जा सकते हैं। समाज इन चार संस्थाओं पर रचा हुआ और इनसे बंधा हुआ है। जिन्नान के इस कहानी-संग्रह में इन चारों संस्थाओं के खिलाफ विद्रोह सिखाया गया है। मानव के आदर्श जीवन में इन चारों संस्थाओं की कोई आवश्यकता नहीं है, ऐसा प्रतिपादन करनेवाले तत्वज्ञानों से तो हम परिचित हैं ही। विवाह और वित्त का निषेध बतानेवाले संप्रदायों के लिए दंड-संस्था की कोई आवश्यकता ही नहीं है। असल में 'विवाह के कारण ही वित्त की आवश्यकता उत्पन्न होती है। अगर मानव-समाज से विवाह की आवश्यकता नष्ट हो जाय तो निसर्गतः पैदा होनेवाले चारे पर मनुष्य प्राणी भी अपना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जीवन-यापन कर सकेगा। विवाह की आकांक्षा ने ही मनुष्य को वित्त की खोज करने पर बाध्य किया है। विवाह के कारण ही वह अपनी अचल संपत्ति से और वतन से चिपटा रहता है। विवाह और वित्त की आवश्यकता में से ही दंड-संस्था की उत्पत्ति हुई है और जहां पर दंड-शक्ति से भी काम न चला, वहां धर्म संस्था का निर्माण करना पड़ा है। इसलिए अगर विवाह को हटा दिया जा सके तो संभव है कि ये सारी संस्थाएं नष्ट हो जायं। मनुष्य ने अपने दिमाग में यह खयाल बरसों से जमा रखा है कि विवाह की प्रेरणा ही पापमय है। लेकिन उस प्रेरणा का विनाश करने में उसे तनिक भी सफलता नहीं मिली है। इसलिए कुछ अपवाद भूत व्यक्तियों की बात छोड़ दी जाय तो मानवी समाज के लिए विवाह वर्ज्य नहीं माना जा सकता। इतना ही नहीं, बल्कि विवाह ही समाज की बुनियाद है। विवाह-बंधन न होगा तो मानवी व्यक्ति आकाश के बादलों की तरह भटकते रहेंगे। विवाह से ही स्त्री और पुरुष का मिलन होता है। उसी में से कुल, गोत्र, जाति, इस प्रकार समाज की निष्पत्ति होती है, बल्कि विवाह के बिना सामाजिक जीवन ही नहीं हो सकता और विवाह को स्वीकार करने पर वित्त का सवाल उठ खड़ा होता है। मानवी समाज की आदर्श अवस्था में भी विवाह और वित्त ये संस्थाएं रहेंगी और रहनी चाहिए, लेकिन दंड-संस्था की स्थिति ऐसी नहीं है। अगर विवाह और वित्त इन दो संस्थाओं का निर्माण यथार्थ रूप में किया जा सके तो दंड-संस्था की आवश्यकता ही नहीं रहेगी और धर्म-संस्था की उपयोगिता खत्म हो जायेगी।

'विद्रोही आत्माएं' में ऐसा मालूम होता है कि जिब्रान ने दंड-संस्था और धर्म-संस्था के संपूर्ण विलयन की घोषणा की है। विवाह और वित्त इन संस्थाओं का यथार्थ स्वरूप क्या हो, इसका उसने स्पष्ट रूप से दिग्दर्शन किया है। उसने साफ-साफ कह दिया है कि विवाह तो दो व्यक्तियों के आत्मिक प्रेम पर ही खड़ा होना चाहिए। उसकी यह सिखावन है कि 'जो करे, वही उसका उपभोग ले' के सूत्र पर वित्त-संस्था की रचना होनी चाहिए। उसका यह आसान अर्थशास्त्र है कि चूंकि बगैर मेहनत के अन्न का निर्माण नहीं होता, इसलिए मेहनत करनेवालों को ही अन्न सेवन करने का अधिकार है। विवाह-संस्था और वित्त-संस्था की बुनियाद के तौर पर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जिब्रान के बताये हुए प्रेम और श्रम के दो सिद्धांत सबको मंजूर हो सकेंगे। प्रेम पर विवाह और श्रम पर वित्त की रचना करने के कार्य में मानव-जाति को अबतक सफलता नहीं मिली है और इसीलिए आज भी मानव-समाज में न्याय की प्रस्थापना नहीं हुई है। प्रेम और श्रम की नींव न मिलने से विवाह और वित्त ये दोनों संस्थाएं विकृत हो गई हैं और उस विकृति में से ही सारे अन्याय पैदा हुए हैं। दंड संस्था और धर्म-संस्था का कार्य समाज में न्याय की प्रस्थापना करना है। इसलिए सारे अन्यायों के जड़ में रहनेवाली इस विकृति को उन्हें दूर करना चाहिए। लेकिन इस बात पर ध्यान न देकर ये दोनों संस्थाएं केवल बाहरी दबाव से समाज में शांति की स्थापना करने का गलत रास्ता अख्तियार करती हैं और तब जिब्रान जैसे क्रांतिकारियों को इन संस्थाओं के खिलाफ बगावत करनी पड़ती है।

विवाह, वित्त, दंड और धर्म इन चारों संस्थाओं का ऐतिहासिक दृष्टि से विचार किया जा सकता है। मनुष्य ने जीवन संघर्ष में अपने सुख और प्रतिष्ठा के लिए धीरे-धीरे इन संस्थाओं का निर्माण किया और अलग-अलग रूप दे दिये। ऊपर से देखा जाय तो 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' वाले न्याय पर यानी तात्त्विक दृष्टि से अन्याय पर ही इन संस्थाओं की सृष्टि हुई दिखाई देती है। पुरुष ने अपने पाशवी बल पर स्त्री को अंकित करके अपने भोगविलास का भाजन बनाया, यह विवाह संस्था का बिलकुल प्राथमिक स्वरूप था। भूमि के स्वत्वाधिकार के बल पर इस मनुष्य ने अन्य मानवों के श्रम पर, मुफ्तखोर की तरह जीने का मार्ग खोज निकाला, यही वित्त-संस्था का पहला रूप था। वास्तव में स्त्री ही पुरुष का पहला वित्त था। इन दोनों संबंधों के अन्याय की परंपरा को बनाये रखने के लिए मनुष्य ने जिस शारीरिक बल का प्रयोग करने का निश्चय किया वही दंड-सस्था का प्राथमिक स्वरूप था। अपनी सामर्थ्य के उन्माद में बेहोश होकर "मैं इन सब सुखों और सुख-साधनों का जन्म से ही प्रभु हूं, मेरे पीछे कोई दिव्य शक्ति मेरी रक्षा के लिए खड़ी है और उसका मैं लाड़ला पुत्र हूं, इसलिए मुझे विजय प्राप्त करा देना ही उस शक्ति का प्रयोजन है", इस प्रकार की मत्तश्रद्धा को ही प्रारंभ में धर्म-संस्था का नाम प्राप्त हुआ होना चाहिए।

मानव के विकास में ये संस्थाएं धीरे-धीरे भिन्न-भिन्न रूप धारण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करती गईं और प्रारंभ में एक ही व्यक्ति में पुंजीभूत हुई इन चारों संस्थाओं के पृथक्-पृथक् प्रतिनिधि पैदा हुए। लेकिन केवल पाशवी बल पर जीवन अधिक समय तक नहीं चल सकता और जिनसे भोगविलास की अपेक्षा रखी जाय उनकी तरफ से खुशी का सहयोग प्राप्त न हो तो भोगविलास का मजा भी सफलता के साथ नहीं लूटा जा सकता। इसलिए स्वार्थ के हेतु भी बल-प्रयोग के साथ ही अनुनय का, खुशामद का आधार लेना पड़ता है। इसीलिए तो ऐतिहासिक विकास में इन चारों संस्थाओं के स्वरूप में उत्तरोत्तर बल-प्रयोग में अनुनय का मिश्रण पाया जाता है। उसके कारण मूल के अन्याय की उग्रता कुछ कम होती है और गुलामी में भी थोड़ी रंजकता पैदा होती है। इसी में दुर्बलों के व्यक्तित्व को अवसर मिलने लगता है और उनका बल बढ़ने लगता है।

इस प्रकार मानव-समाज में सत्ता का संतुलन हमेशा बढ़ता और बदलता दिखाई देगा। लेकिन मानवी जीवन के इस भौतिक पहलू के साथ-साथ उसका आध्यात्मिक पहलू भी विकसित होता जा रहा है। इस आध्यात्मिक पहलू का दर्शन मनुष्य के मानसिक विकास में पाया जाता है। जो हालत अपनी है, वही औरों की भी है इस प्रकार की भावना भी उसकी बुद्धि में कुछ-कुछ स्थिर होने लगती है और उसमें न्याय बुद्धि का प्रादुर्भाव होता है। इस न्याय-बुद्धि का विकास होना ही मानवी मन का आध्यात्मिक विकास है। भौतिक अनुकूलता का आधार जब इस न्याय-बुद्धि को मिल जाता है तो वह न्यायबुद्धि सामाजिक क्षेत्र में स्थिर होने लगती है। विवाह, वित्त, दंड और धर्म, इन चारों संस्थाओं के विकास में मानव की विकसित हुई न्यायबुद्धि ने धीरे-धीरे किन्तु निश्चयपूर्वक परिवर्तन कर दिया है, यह हमें याद रखना चाहिए। अगर विवाह-संस्था को पूर्णतया न्यायबुद्धि पर खड़ा करना हो तो पुरुष को चाहिए कि वह स्त्री को अपने पशु-बल पर अंकित करके रखने की दुराशा को हमेशा के लिए अपने दिल से निकाल दे और केवल प्रेम से ही उसे प्राप्त कर लेने का मार्ग अख्तियार करे।

विवाह-संस्था का प्राणतत्त्व कौन-सा है? जिब्रान का उत्तर है—'प्रेम' स्त्री और पुरुष मिलकर पूर्ण मानव बनता है 'अर्धेन नारी व्यभवत्' के मानी यही हैं और इसलिए स्त्री-पुरुष के बीच स्वयंभू आकर्षण पाया जाता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह आकर्षण बिल्कुल स्वाभाविक है। उससे शरमाने का कोई कारण नहीं। इसी जीवन-सत्य से इंकार करने में कोई लाभ नहीं कि स्त्री की पूर्णता के लिए पुरुष की और पुरुष की पूर्णता के लिए स्त्री की आवश्यकता होती है। यह समझना कि यह आकर्षण केवल शारीरिक होता है, बेमानी है। जब यह प्रतीति होती है कि इस आकर्षण का अंतिम स्वरूप आध्यात्मिक है तो इस आकर्षण की भीति नष्ट हो जाती है और उसकी दिव्यता का अनुभव होने पर आध्यात्मिक विकास के साधन के तौर पर निर्भयता के साथ इस आकर्षण का उपयोग किया जा सकता है। इसमें शक नहीं कि जिब्रान जैसे महाकवि जिस वक्त स्त्री-पुरुषों के प्रेम को आध्यात्मिक पवित्रता प्रदान करते हैं उस वक्त उनकी दृष्टि यही होती है। यह प्रेम-भावना प्रत्येक स्त्री-पुरुष के हृदय में बसी हुई होती है। यह प्रेम-भावना केवल प्रणयवृत्ति से भिन्न है, यह पहचानने की सामर्थ्य, शिक्षण और संस्कृति द्वारा प्रत्येक मनुष्य को प्राप्त होनी चाहिए। स्त्री-पुरुषों के विवाह को कुल जाति वर्ग, संपत्ति, प्रतिष्ठा अथवा केवल ऐंद्रिय सुख पर खड़ा करने के प्रयत्न कभी सफल नहीं हुए। एक-दूसरे के शुद्ध प्रेम पर आधारित वैवाहिक जीवन दोनों को कृतार्थ बना सकता है। पुरुष की अपेक्षा स्त्री के लिए यह प्रेम-वृत्ति अधिक सुलभ होती है, क्योंकि उसका जीवन निर्माण के लिए होता है। इससे विपरीत पुरुष सत्ता एवं पराक्रम का लोभी होता है। इसलिए शुद्ध प्रेम पर आधारित विवाह से स्त्री का जीवन कृतार्थ होता है और पुरुष के जीवन को उदात्तता प्राप्त होती है। जिब्रान की इन कहानियों में प्रेम का यह सिद्धांत अलग-अलग रूपों में पेश किया गया है।

आम तौर पर मानव-समाज में विवाह एक पवित्र बंधन माना जाता है। उसका समावेश धर्म में किया हुआ पाया जाता है। यह धारणा प्रचलित है कि विवाह-बंधन ईश्वरी बंधन है। विवाह में निष्ठा को अत्यंत श्रेष्ठ स्थान दिया जाता है। इसलिए व्यभिचार पाप समझा गया है। लेकिन विवाह-संस्था की आध्यात्मिक उपपत्ति स्वीकार करनी हो तो प्रेम को ही विवाह का प्राण मानना पड़ेगा। प्रेम से ही मनुष्य का हृदय शुद्ध होता है। इसलिए प्रेम को परमेश्वरी तत्त्व मानना पड़ता है। जब इस तत्त्व का आविष्कार मानवी हृदय में होता है तो सहज निष्ठा का निर्माण होता है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और व्यभिचार की संभावना नहीं रहती। लेकिन सामाजिक दृष्टि से विवाह-संस्था अबतक कहीं भी शुद्ध प्रेम पर खड़ी नहीं हुई है। अब भी बाह्य एवं कृत्रिम साधनों से निष्ठा का निर्माण करने के प्रयत्न चल रहे हैं। इस वृत्ति के मूल्य में यह दुराशा है कि कारण के बिना कार्य की उपलब्धि हो सकेगी। प्रेम की प्रतीति न होने से विवाह केवल एक शरीर संबंध बन जाता है और मानसिक निष्ठा के अभाव में उसे तत्त्वतः व्यभिचार का स्वरूप प्राप्त होता है।

विवाह-संस्था की इस विकृति से समाज में हमेशा स्त्री-पुरुषों को यंत्रणाएं सहनी पड़ती हैं। आश्चर्य और दुःख की बात तो यह है कि ये यंत्रणाएं धर्म ईश्वरेच्छा, पावित्र्य आदि बड़े-बड़े नामों से चली आ रही हैं। शरीर एक तरफ और मन दूसरी तरफ—ऐसी स्थिति में समाज में ढोंग और धोखेबाजी का बाजार गर्म होता है। इस ढोंग को दबाने के बाह्य उपाय सफल होनेवाले नहीं होते, इसलिए समाज में जड़ता और क्रूरता बढ़ती जाती है और सारा सामाजिक-जीवन छिछला, पुरुषार्थहीन एवं विलास प्रवण बन जाता है।

ऐसी स्थिति में रूढ़ विवाह ही पापमय हो जाते हैं और आत्मिक कल्याण के लिए प्रेम के नाम पर रूढ़ विवाह-संस्था के खिलाफ विद्रोह करने की आवश्यकता आ पड़ती है। जिब्रान के सारे वर्णन में यही विद्रोह दिखाई देता है। 'आत्मायें पृथिवीं त्यजेत' की वृत्ति से प्रेरित होकर जिब्रान के स्त्री-पुरुष पात्रों की सारी हलचल पाठकों के हृदय को आकर्षित करती है, उल्लसित करती है और उदात्त बनाती है। प्रेम कोई सौदा करने की वस्तु नहीं है। वह एक आकाश की ज्वाला है। उसे बाह्य उपाधियों से पैदा करने की या उसे रोक रखने की चेष्टा करना केवल पागलपन है। वह ज्वाला जब हृदय में अवतीर्ण होती है तो वह हृदय को जलाकर पवित्र बनाती है। इसमें से प्राप्त होनेवाली कृतार्थता इतनी आकर्षक होती है कि इस प्रेम का साक्षात्कार होने के लिए और होने के बाद आदमी अपने शरीर का संपूर्ण बलिदान देने में आनंद का अनुभव करते हैं। जिब्रान ने ये सारे प्रकार दिखाये हैं।

इस संग्रह की 'विद्रोही आत्माएं' नामक कहानी में जिब्रान ने प्रेम के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विद्रोहका एकआत्यंतिक रूपचित्रित कियाहै। गुलबदनका ब्याहजिस पुरुष के साथ हुआ है वह भला आदमी है, उसे प्रेम का भान है। गुलबदन का प्रेम पाने के लिए उसने पूरी-पूरी कोशिश की; लेकिन गुलबदन के हृदय में उसके प्रति प्रेम की भावना पैदा नहीं हो सकी। उसने सचाई के साथ इस बात की चेष्टा भी की कि उसके प्रति अपने मन में प्रेम पैदा हो। लेकिन उसमें उसे सफलता न मिली और एक-दूसरे ही निर्धन किन्तु गुणवान युवक के प्रति उसके मनमें प्रीतिका उद्भव हुआ। ऐसी स्थिति में वह क्या करे? प्रेम से प्राप्त होनेवाली जीवन की कृतार्थता हासिल करे या प्रेम का त्याग करके अपना हृदय शुष्क, बधिर एवं जड़ बनाये? जीवन के बिकास की दृष्टि से यहीं कहना पड़ेगा कि उस प्रेम को स्वीकार करना चाहिए। जिब्रान ने यही फैसला दिया है और मेरे मन में आध्यात्मिक दृष्टि से वह ठीक भी है।

'जो मेहनत करे, उसकी जमीन' वाले तत्त्व का जिब्रान ने अपनी कहानियों में प्रचार किया है। वह आज की दुनिया में सबको मंजूर हो गया है। दंड-संस्था की ऐतिहासिक उपपत्ति 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' वाली कहावत के अनुसार है, फिर भी उसकी एक आध्यात्मिक उपपत्ति भी दिखलाई जाती है। मनुष्यमें स्वार्थ-बुद्धि और न्यायबुद्धि का परस्पर संघर्ष हमेशा चलता ही रहता है। त्याग-बुद्धि का सहारा लेकर स्वार्थ-बुद्धि को काबू में रखना मनुष्य की संस्कृति-साधना है। समाज में ऐसे सुसंस्कृत नागरिकों की संख्या बढ़ती रहना ही समाज का विकास है। इस विकास की आदर्श अवस्था में न्यायबुद्धि का अधिराज्य प्रस्थापित होगा और आंतरिक प्रेरणा से न्याय-बुद्धि का स्वीकार हो जाने से बाह्य दबाव की जरूरत नहीं रहेगी। यही आत्मदंड है। लेकिन ऐसी स्थिति प्राप्त होने तक सामाजिक व्यवहारों के नियमन के लिए बाह्यदंड की आवश्यकता रहती है। सामाजिक न्याय की प्रस्थापना के लिए समाज के लोगों द्वारा अपनी इच्छा से स्वीकार किया हुआ राजदंड आत्मदंड का ही सामाजिक आविष्कार है। इसलिए जनतंत्रात्मक राज्य-संस्था को आज के सुसंस्कृत मानव ने पसंद किया है; लेकिन उसे शुद्ध रखने के लिए सारे व्यक्तिगत स्वामित्व के अधिकारों को तत्त्वतः नष्ट कर देना चाहिए। वित्त-संस्था पर सामुदायिक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वामित्व मान लेना चाहिए। उसके बिना राज्य-संस्था सामाजिक न्याय-निर्मिति का कार्य नहीं कर सकेगी—इस निर्णय को भी अब सब लोग मानने लगे हैं। इसी संग्रह की कथाओं से हमें यह मालूम होगा कि दंड-संस्था के संबंध में खलील जिब्रान के विचार भी इस दिशा में चल रहे थे।

अब रही धर्म-संस्था। धर्म और धर्म-संस्था के विषय में बड़े-बड़े विचारकों के मस्तिष्क में भी अब तक बहुत गड़बड़ी फैली हुई है। दुनिया की लगभग सभी धर्म-संस्थाएं थोड़ी-बहुत विकसित होकर वहीं रुकी पड़ी हैं। नाना प्रकार की शुष्क विधियों के कब्जे में जाकर धर्म-संस्था अपने प्राण खो बैठी है। सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक अन्यायों का मूढ़ता के साथ समर्थन करने में सभी धर्म-संस्थाओं ने अपनी सारी ताकत लगाई है। इसलिए वर्तमान काल में सामाजिक क्रांतिकारी लोग धर्म-संस्था के दुश्मन बन गये हैं। धर्म-संस्था का विरोध करनेवाला और एक वर्ग पुराने जमाने से चला आया है। वह है साक्षात्कारी संतों का। हम जानते ही हैं कि मीमांसा और वेदांती, शास्त्री और संत आदि के झगड़े वैदिक धर्म में चलते आये हैं। इस्लामी और ईसाई धर्मों में भी यह द्वंद्व दिखाई देता है। इस्लाम के कर्मकांड से ऊबे हुए साक्षात्कारी लोगों का पथ 'सूफी पंथ' के नाम से पहचाना जाता है। ईसाई धर्म में भी सांप्रदायिक सिद्धांतों के उस पार गये हुए लोग 'क्रिश्चियन मिस्टिक्स' के नाम से प्रख्यात हैं। खलील जिब्रान भी इन्हीं क्रिश्चन मिस्टिक्स लोगों में से एक साक्षात्कारी पुरुष था। वह कहता है, "धर्म ? वह क्या चीज है ? मैं तो केवल जीवन को पहचानता हूं। जीवन के मानी हैं खेत, अंगूर का बाग और करघा !" जीवन और जीवन का सारा कर्म ही उसका धर्म था। उसकी धारणा थी कि यह सारा जीवन ऐक्यात्म है। उसकी यह जीवन-दृष्टि थी कि सारा दृश्य विश्व उस जीवन-सागर पर लहरें मारनेवाली तरंगे हैं। व्यक्ति का बिंदु विश्व के सिंधु में से निकला है और फिर उसी सिंधु में विलीन होने-वाला है—यह उसका जीवन-दर्शन था। वह कहता है, "चर्च (धर्म) तो तुम्हारे अन्दर मौजूद है और तुम खुद अपने पुरोहित हो, सबसें महत्त्व की बात है। मुक्त आत्मा।" किसी भी बाह्य प्रलोभन से विचलित न होने-वाला और अंतःकरण की किसी भी तरंग के नीचे न दबनेवाला मुक्त मानस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ही व्यक्ति के विकास की अत्यंत उच्च अवस्था है। इस प्रकार की मुक्त आत्मा का निर्माण ही धर्म-भावना का कार्य है। ऐसा मुक्त पुरुष अपने हृदय में विश्व-प्रेम से परिपूर्ण हुआ होता है और उसके हाथ बाह्य विश्व में कल्याण-निर्माण के कार्य में हमेशा लगे रहते हैं। खलील जिब्रान का धर्म इस प्रकार का था। यह धर्म मानव-समाज के लिए आवश्यक है। रूढ़ धर्म-संस्थाओं के बारे में ऐसा नहीं कहा जा सकता।

इस प्रकार हम देखते हैं कि 'विद्रोही आत्माएं' में खलील जिब्रान का 'जीवन का सर्वांगीण क्रांतिवाद' किस तरह प्रकट हुआ है। साहित्य के तंत्र-विशारद यह सवाल उठायेंगे कि क्या इन कहानियों को कहानियां कहा जा सकता है? इस प्रश्न का उत्तर देना मैं बिल्कुल अनावश्यक समझता हूं। इन कलाकृतियों को क्या नाम दिया जाय, यह सवाल मेरी दृष्टि से अप्रस्तुत और व्यर्थ है। यह उच्च प्रकार का साहित्य है इसमें मुझे कोई शक नहीं। इसमें लगन है, जिन्दादिली है। जीवन के गहरे सवालों को रोचकता के साथ गले उतारने की ताकत है। सामाजिक जड़ता को उखाड़ फेंकने की क्रांतिकारी शक्ति इसमें प्रतीत हुई है। इसके पढ़ने से मनोरंजन नहीं होगा, उससे जीवन की दृष्टि मिलेगी, स्फूर्ति मिलेगी और पुरुषार्थ के लिए आवश्यक प्रेरणा भी मिलेगी। मुझे उम्मीद है कि इस ग्रंथ से ये सारी बातें पाठकों को मिलेंगी।○

—स० ज० भागवत

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय
वाराणसी।
आगत क्रमांक 2017
दिनांक ....

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

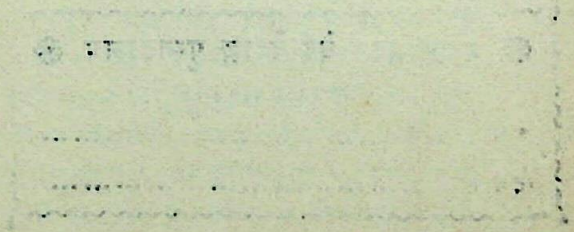

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

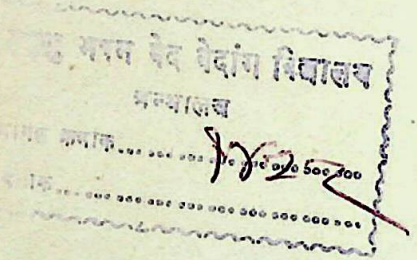

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मण्डल का
खलील जिब्रान-साहित्य

□□

जीवन-संदेश

धरती के देवता

हीरे और मोती

आंसू और मुस्कान

शैतान

बटोही

पागल

तूफान

उसने कहा

विद्रोही आत्माएं

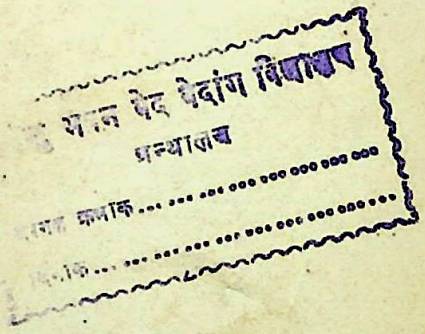

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri